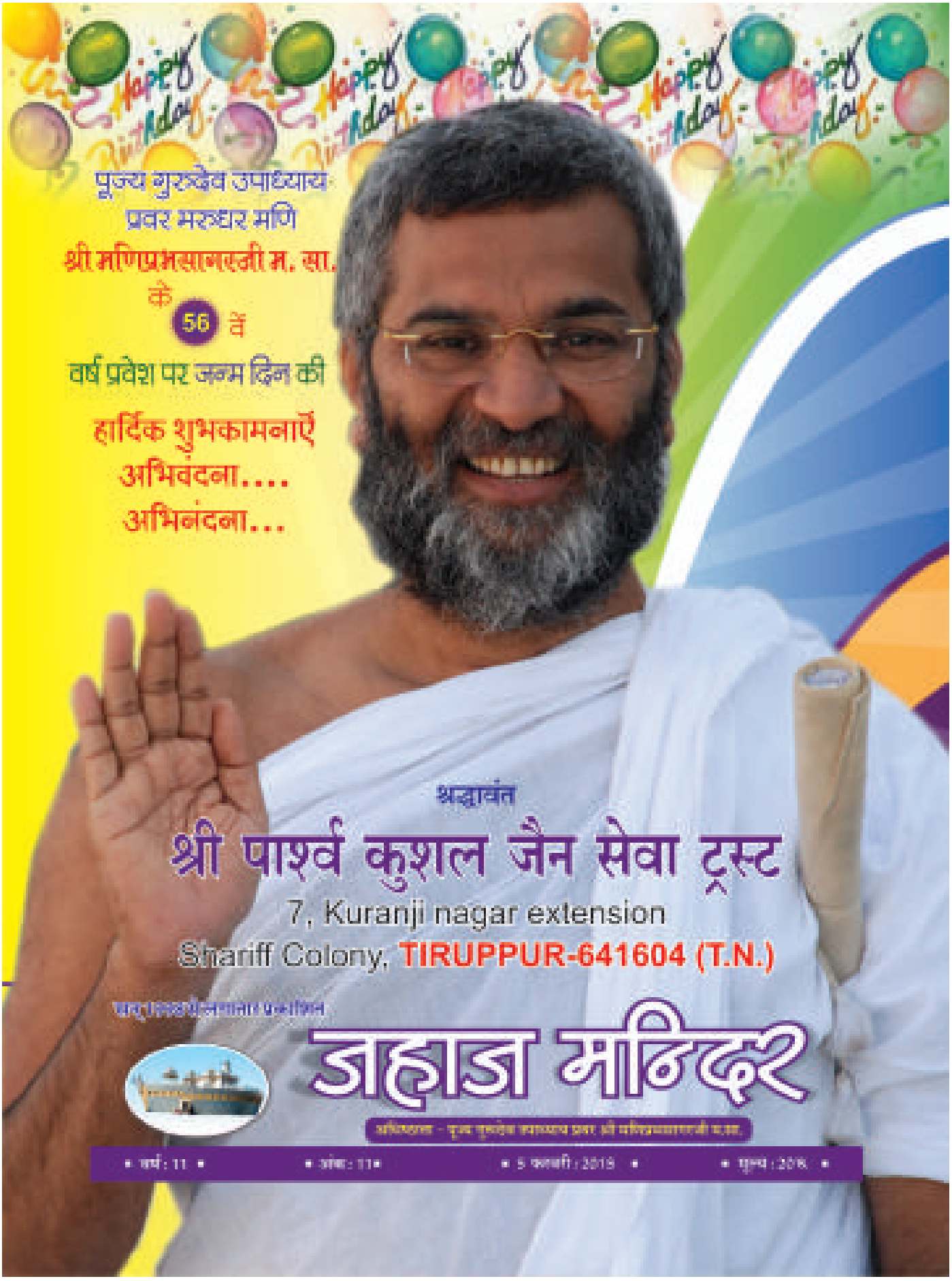

Happy Birthday
पूज्य गुरुदेव उपाध्याय
प्रवर मरुधर मणि
श्री मणिप्रभसागरजी म. सा.
के
56 वें
वर्ष प्रवेश पर जन्म दिन की
हार्दिक शुभकामनाऐं
अभिवंदना....
अभिनंदना...
श्रद्धावंत
श्री पार्श्व कुशल जैन सेवा ट्रस्ट
7, Kuranji nagar extension
Shariff Colony, TIRUPPUR-641604 (T.N.)
जहाज मन्दिर
• वर्ष : 11 • • अंक : 11 • • 5 फरवरी : 2015 • • मूल्य : 20/- •

धर्म नगरी चेन्नई महानगर के समवशरणी बाजार मार्ग प. पू. विचक्षणश्रीजी म.सा. द्वारा संस्थापित
श्री जिनदत्तसूरी जैन मंडल द्वारा दादा श्री पार्श्वनाथ जिनालय का संपूर्ण जीर्णोद्धार नीचे मूल गंभारे में
श्री पार्श्वनाथ भगवान, गुरु गौतमस्वामी, दादा गुरुदेव अंजनशलाका प्रतिष्ठा एवं

मुमुक्षु संयम सेठिया, मुमुक्षु श्रीमती जयादेवी सेठिया

की दीक्षा प्रसंगे

नवाह्निका महा महोत्सव

सकल श्रीसंघ को सादर आमंत्रण

आज्ञा एवं आशीर्वाद प्रदाता	प्रतिष्ठा पावन निश्रा	दिव्याशीष प्रदाता
परम पूज्य आचार्य श्री कैलाशसागरसूरीश्वरजी म. सा.	प. पू. उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म. सा. एवं बिराजित सर्व साधु-साध्वी भगवंत	प. पू. प्रज्ञा पुरुष आचार्य श्री कीर्तिसागरसूरीश्वरजी म. सा. प. पू. प्र. श्री विचक्षणश्रीजी म. सा.

महोत्सव प्रारंभ 19.04.2015

महोत्सव सम्पन्न 27.04.2015

मुमुक्षु संयम सेठिया

मुमुक्षु श्रीमती जयादेवी सेठिया

भव्य वरघोड़ा
24.04.2015

अद्भुत दीक्षा समारोह
25.04.2015

अभिनव प्रतिष्ठा दिवस
26.04.2015

निमंत्रक

प्रतिष्ठा महामहोत्सव समिति - श्री जिनदत्तसूरि जैन मंडल

संपर्क :- संयोजक : 9444454062, मानद मंत्री : 9380832805

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर मरुधर मणि

श्री मणिप्रभसागरजी म. सा.

के 56 वें वर्ष प्रवेश पर जन्म दिन की

हार्दिक शुभकामनाएँ...अभिवंदना.... अभिनंदना...

वंदनकर्ता :

शा. भंवरलालजी संकलेचा (रासोणी) परिवार

शा. ललितकुमार, राजकुमार, कैलाशकुमार, गौतमचन्द

पादरू - चैन्नई - हैदराबाद

फर्म :

नवनिधि इन्टरप्राईजेज

384, मिन्ट स्ट्रीट, ऑफिस नं. 29, दूसरा माला,
चैन्नई - 600079 फोन : 044-25291795

रूपम् कलेक्शन्स

15-8-485, फिलखाना, ओमश्री सांई कॉम्पलेक्स,
हैदराबाद फोन : 040-24612258

आगम मंजूषा

आचार्य भद्रबाहुसूरि

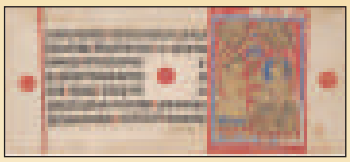

जह बालो जंपंतो, कज्जमकज्जं व उज्जुयं भणइ ।
तं तह आलोएज्जा, मायामयविप्पमुक्को उ ॥
ओघ निर्युक्ति ८०१

बालक जो भी उचित या अनुचित कार्य कर लेता है, वह सब सरल भाव से कह देता है। इसी प्रकार साधक को भी गुरुजनों के समक्ष दंभ और अभिमान से रहित होकर यथार्थ आत्म-आलोचन करना चाहिये।

बधाईयाँ...

पूज्य गुरुदेव मरुधर मणि जहाज मंदिर, गज मंदिर, राजहंसा मंदिर,
मयूर मंदिर, सुघोषा घंट मदिर आदि कलात्मक तीर्थों के स्वप्नशिल्पी
माता रतनमालाश्रीजी के लाल,
बहिन डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी के भैया
उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म. सा.
के 56 वें वर्ष प्रवेश पर जन्म दिन की
हार्दिक शुभकामनाएँ
अभिवंदना....अभिनंदना...

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.	06
2. गुरुदेव की कहानियाँ	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.	07
3. प्रीत की रीत	साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.	08
4. ऐसे थे मेरे गुरुदेव	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.	13
5. श्रमण चिंतन	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.	15
6. सद्-विचार	साध्वी नीतिप्रज्ञाश्रीजी म.सा.	19
7. विहार डायरी	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.	21
8. मेरी अनुभूति	साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.	25
9. बधाई	मुनि श्रेयांसप्रभसागरजी म.सा.	27
10. जन्म दिवस की शुभ घडिऋया	मुनि विरक्तप्रभसागरजी म.सा.	29
11. गुरु चरणों में समर्पण	श्रीमती शकुन्तला कांकरिया	31
12. चतुर्भंगी का चमत्कार	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.	33
13. पंचांग	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.	35
14. समाचार दर्शन	संकलन	39
15. जहाज मन्दिर पहेली-106	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.	71
16. जटाशंकर	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.	74

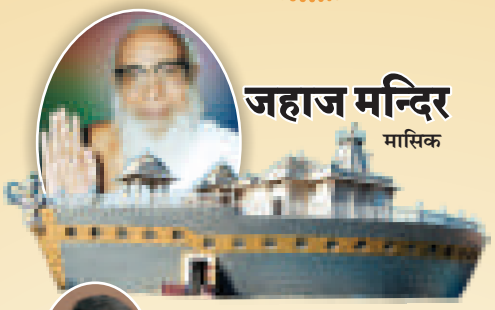

जहाज मन्दिर
मासिक

अधिष्ठाता
पू. गुरुदेव उपाध्याय प्रवर
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

वर्ष : 11 अंक : 11 5 फरवरी 2015 मूल्य 20 रू.

अध्यक्ष : संघवी जीतमल दांतेवाड़िया
महामंत्री : डॉ. यू.सी. जैन

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	: 21,000 रूपये
मानद् संरक्षक	: 11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	: 2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	: 2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	: 1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	: 500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	: 200 रूपये

विज्ञापन सहयोग

अंतिम कवर पृष्ठ	: 15,000 रूपये
द्वितीय कवर पृष्ठ	: 11,000 रूपये
तृतीय कवर पृष्ठ	: 9,000 रूपये
अन्दर पूरा पृष्ठ रंगीन	: 7,000 रूपये
रंगीन अन्दर आधा पृष्ठ	: 3,500 रुपये
सामान्य पूरा पृष्ठ	: 3,000 रुपये
सामान्य आधा पृष्ठ	: 1500 रुपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि
ICICI की किसी भी शाखा में
SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक

श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)
फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com
www.jahajmandir.org

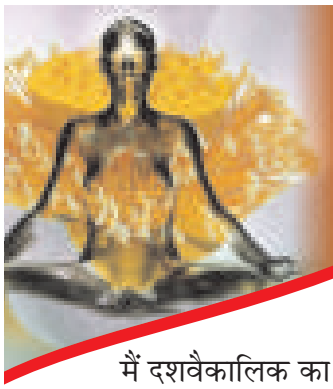

नवप्रभात

उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.

मैं दशवैकालिक का स्वाध्याय करवा रहा था। पांचवें अध्ययन की विवेचना चल रही थी। ज्यों-ज्यों गाथाएं पढ़ता, त्यों-त्यों मेरा मन विस्मय से भर उठता था।

गाथाओं की विषय-वस्तु सूक्ष्म थी। छोटी से छोटी गलती की खबर ली गई थी। गौचरी जायें तो कैसे जायें! द्वार बंद हो तो क्या करना! कैसे चलना! कैसे बोलना!

जैसे कोई माँ अपने नन्हे-मुन्ने बच्चे को प्यार से समझा रही हो!

जैसे माँ गहरा विचार करके क्रिया और उसके परिणाम को बताती हो!

ऐसे ही परमात्मा ने गुरुमाता का रूप धारण कर अपने आत्म-प्रिय मुनियों को समझाया है!

यह भी कि, क्या करना चाहिये! और यह भी कि, क्या नहीं करना चाहिये!

यह भी कि, क्या करने से अच्छा होगा; और क्या करने से बुरा होगा!

आज भले ही वह परिणाम की कल्पना नहीं कर पाता! अभी बौद्धिक परिपक्वता नहीं आई है... अभी ज्ञान का क्षयोपशम तीव्र नहीं हुआ है... अभी उसे पता नहीं है कि आज जो मैं इन्द्रियों और मन के प्रवाह में बह कर विपरीत आचरण कर रहा हूँ... भले उससे क्षणिक सुख मिले! पर परिणाम बहुत बुरा होने वाला है।

उसे आज भले ही पता नहीं है कि अभी थोड़ी सी पीड़ा यदि आनंद से झेल लेता हूँ, तो परिणामतः प्राप्त होने वाले आनंद की कोई सीमा नहीं होगी।

इसलिये परमात्मा उसे उदाहरणों से समझाते हैं... रूपकों से समझाते हैं...!

वह व्यक्ति एक रूपया प्राप्त कर आनन्दित कैसे हो सकता है, जिसे उस एक रूपये के बदले में 500 रूपये चुकाने पड़ें!

ठीक इसी प्रकार वह व्यक्ति उस क्षणिक दुख से दुखी नहीं हो सकता, जिसे उसके परिणामस्वरूप शाश्वत सुख मिलने वाला हो!

बस यह दृष्टि मिल जाये... तो जीवन का रहस्य और परिणाम समझ में आ जाये।

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर मरुधर मणि

श्री मणिप्रभसागरजी म. सा.

के 56 वें वर्ष प्रवेश पर जन्म दिन की

हार्दिक शुभकामनाएँ

अभिवंदना.... अभिनंदना...

जन्म दिवस पर देते हैं,
गुरूवर हम तुमको बधाई,
जीवन का हर इक लम्हा,
हो तुमको सुखदायी।
हो शतं जीव, तुम चिरंजीव,
शुभ घड़ी आज आई,
धरती सुखदायी, अम्बर सुखदायी।
जल सुखदायी,
पवन सुखदायी,
बधाई हो बधाई...

वंदनकर्ता :

श्री विमलनाथ जिनकुशलसूरि जैन दादावाडी संघ

ईरोड - तमिलनाडु

गुरूदेव की कहानियाँ

3. सूझ–बूझ

उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.

नागौर पर राजा बखनसिंह का शासन था। वह न्यायमूर्ति था।

हमेशा उसके उपक्रम अन्याय के विरोध तथा न्याय के समर्थन में होते थे। न्याय करने का उसका ढंग भी निराला था। वह अपनी सूक्ष्मदृष्टि व समयोचित तर्क शक्ति से न्याय करता था। इस न्याय–शक्ति की प्रशंसा हवा की तरह फैल रही थी।

जयपुर के महाराजा ने भी जब इस प्रशंसा को सुना तो उन्होंने परीक्षा लेने की ठानी। अपने पाँच विश्वस्त अनुचरों को समझा–बुझाकर, अपनी योजना बताकर नागौर भेज दिया।

नागौर पहुँचकर वे एक हलवाई की दुकान पर खड़े रहे और हलवाई के लेन–देन को देखते रहे। वे मन ही मन गल्ले के रूपयों की गिनती लगाते रहे। शाम को दुकान बन्द कर हलवाई रूपयों की थैली हाथ में लेकर घर जाने लगा, तब उन पाँचों अनुचरों ने चिल्लाना शुरू कर दिया। वे लोगों से कहने लगे कि 'यह हलवाई हमारे रूपयों की थैली झपट कर ले जा रहा है।'

हलवाई हक्का–बक्का रह गया। स्थानीय सिपाहियों ने दोनों पक्षों को बुलवाकर पूछा। दोनों पक्ष रूपयों की थैली पर अपना–अपना अधिकार जता रहे थे।

सिपाहियों ने फैसला करने की दृष्टि से दोनों पक्षों से पूछा– बताओ! थैली में कितने रूपये हैं?

हलवाई को तो रूपयों की संख्या याद नहीं थी, परंतु अनुचरों ने तुरन्त संख्या बता दी। सिपाहियों ने जब गिना, तो जितनी संख्या अनुचरों ने बताई थी, उतने ही रूपये निकले। हलवाई स्तब्ध रह गया। वह अपने ही रूपयों को अपने ही सामने दूसरों के हाथों में जाते देख रहा था। वह मामला राजा बखनसिंह के पास ले गया। इस मामले को सुनकर सभी उत्सुकता से भरे थे कि इसका न्याय / निपटारा कैसे होगा?

राजा ने रूपयों की थैली अपने हाथ में ली। गर्म पानी से भरा एक टब मंगवाया और सारे सिक्के निकालकर उसमें डाल दिये। दो मिनट बाद राजा की आँखों में चमक आ गई और उसने फैसला सुनाते हुए कहा– ये रूपये हलवाई के हैं। सभी आश्चर्यचकित हो गये। अनुचरों की आँखे फैल गईं।

राजा ने सभी की जिज्ञासा को शान्त करते हुए कहा कि ये रूपये हलवाई के ही हैं, क्योंकि इस सिक्कों पर घी लगा है। हलवाई के हाथ हमेशा घी से भरे रहते हैं, इस कारण सिक्कों पर भी घी लग जाता है। गर्म पानी में सिक्के डाले, तब घी पिघल कर पानी पर तैरने लगा और यह देखकर मैंने हलवाई के पक्ष में न्याय दे दिया है।

अनुचर इस प्रणाली को देखकर आश्चर्यचकित थे। जयपुर के महाराज इस न्याय पद्धति के आगे नतमस्तिक थे।

बिना खिले ही आजकल फूल झरने लग गये।
प्रतिबिम्ब अपना देखकर लोग डरने लग गये।
इस प्रदूषण ने हमें कुछ काम का रखा नहीं,
सपने संजो आधे–अधूरे लोग मरने लग गये।।

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर मरुधर मणि

श्री मणिप्रभसागरजी म. सा.

के **56** वें वर्ष प्रवेश पर जन्म दिन की

हार्दिक शुभकामनाएँ

अभिवंदना.... अभिनंदना...

Sri Jawaherlal Parakh
Smt. Vimaladevi Parakh
Sandeep Parakh
Rishabh Parakh
Rishi, Riddhi

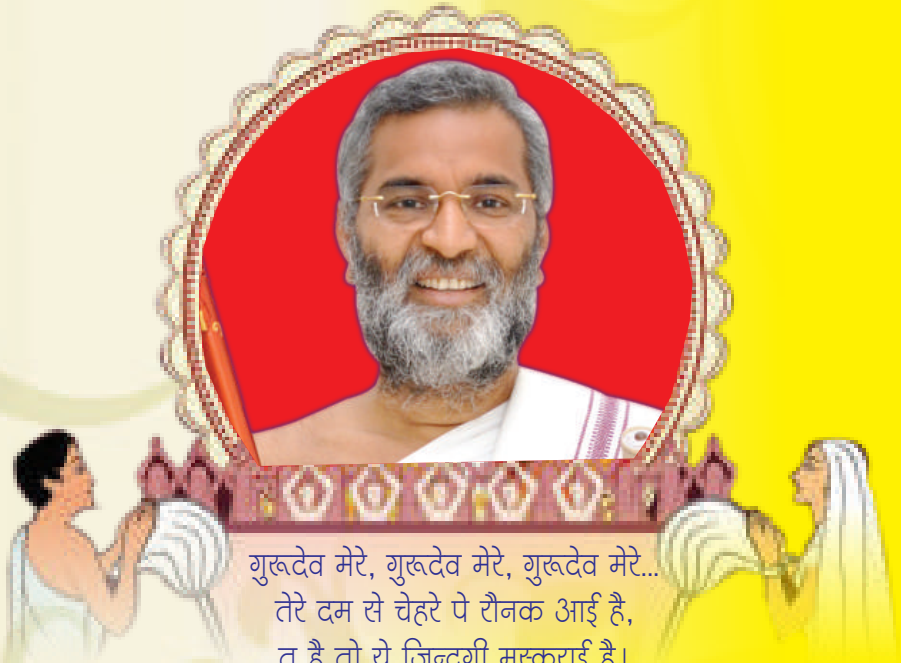

गुरूदेव मेरे, गुरूदेव मेरे, गुरूदेव मेरे...
तेरे दम से चेहरे पे रौनक आई है,
तू है तो ये जिन्दगी मुस्कुराई है।
हमने जो कुछ भी है पाया,
तेरी रहमत का असर है,
गुरूदेव मेरे, गुरूदेव मेरे।।

गुरुभक्त

SRI VIMALA NEHRU EXPORTS

255, Arragaharam Street, Near Mahajana School

ERODE - 638001 (T.N.)

Ph. : (042) 42253363, (M) 93600 11041

112
श्री चन्द्रप्रभ स्तवन विवेचन

बहिनम.साध्वी डॉ.विद्युत्प्रभाश्रीजीम.

भाव सयोगी अयोगी शैलेशे,
अंतिम दुग नय जाणोजी।
साधनताए निजगुण व्यक्ति तेह
सेवना वखाणोजी।। श्री ।।८।।

तेरहवां गुणस्थानक है सयोगी! इस आत्म विकास की अवस्था में समभिरूढ़ नय से और अंतिम गुणस्थानक अयोगी में एवं भूतनय से उत्सर्ग भाव सेवना होती है। साधना के द्वारा आत्मगुणों का जो विस्फोट होता है, उसे ही आत्म सेवना कहते हैं।

प्रस्तुत पद्य में श्रीमद्जी ने आत्म-सेवा पर प्रकाश डालते हुए आत्मा के क्रमिक विकास के स्वरूप पर संक्षिप्त प्रकाश डाला है। असली आत्म-सेवा स्वयं के ज्ञान, दर्शन, चारित्र के विकास में हैं। अनादि काल से आत्मा ने पुद्गल सेवा में अपना जीवन खोया है। पुद्गल सेवा ने सदैव चेतना को भ्रमित किया है। आत्मगुणों का विस्फोट करना, स्वयं में खो जाना, यही आत्म सेवना है। इस पद्य में आत्मा का चरम विकास अभिव्यक्त हुआ है। आत्मा के मूल गुणों को नष्ट करने वाले कर्मों के क्षय से चेतना में केवलज्ञान का दिव्य प्रकाश फैलता है। इस ज्ञान के उपलब्ध होते ही अज्ञान का अंधेरा समाप्त हो जाता है। किसी भी जड़ या चेतन को जानने के लिए इन्द्रिय अथवा मन का सहयोग अपेक्षित नहीं होता। इस अवस्था में समभिरूढ़ नय से उत्सर्ग भाव सेवा होती है।

जब मन, वचन और काया; इन तीनों योगों से जीव मुक्त होकर अंतिम धाम को प्राप्त कर लेता है, सदा-सदा के लिये जन्म और मरण के बंधनों को तोड़ कर अजरामर स्थान को पाकर कृतार्थ बन जाता है, उसे अयोगी केवली कहते हैं। इस अवस्था में एवं भूतनय की अपेक्षा से उत्सर्ग भाव सेवना होती है।

इस अवस्था की प्राप्ति स्वयं के साधना-बल द्वारा होती है। स्वयं की साधना और योग्यता ही उसे इस सीढ़ी तक पहुँचाती है। अध्यात्म के क्षेत्र में स्वयं के विकास का सारा पुरूषार्थ स्वयं को ही करना पड़ता है। पुद्गलों में रचे-बसे मन को वहाँ से हटाकर ज्ञान, दर्शन और चारित्र की प्राप्ति में जोड़ने से इस अवस्था की प्राप्ति होती है। इस स्थिति में अस्तित्व पूर्ण सुरक्षित एवं आनन्द मग्न हो जाता है। इस अवस्था में मात्र चैतन्य का अनुभव होने लगता है। सब कुछ शांत! सारी हलचल समाप्त!!

कारण भाव तेह अपवादे,
कार्य रूप उत्सर्गेजी।
आत्म भाव ते भाव द्रव्य पद,
बाह्य प्रवृत्ति निःसर्गेजी।।९।।

इन भावपूर्ण पंक्तियों में श्रीमद्जी ने कारण और कार्य के प्रत्यय को स्पष्ट किया है। कारण और कार्य वास्तव में अभिन्न हैं। कारण ही कार्य रूप में परिणत होता है। जैसे मिट्टी घड़े का कारण भी है और कार्य भी है। जब तक मिट्टी स्वरूप को धारण नहीं करती, तब तक वह कारण है; और ज्यों ही वह वांछित स्वरूप को उपलब्ध होती है, तुरंत कार्य रूप हो जाती है। अरिहंत परमात्मा की सेवा छद्मस्थ (संसारी) चेतनाओं के लिये कारण है। अतः वह अपवाद भाव सेवा है; और अरिहंत परमात्मा की आराधना से स्वयं के भीतर दिव्य चेतना का जो अद्भुत जागरण रूप कार्य होता है, वह उत्सर्ग भाव सेवा है। उत्सर्ग अर्थात् पूर्ण निर्मल और निर्दोष आंतरिक भाव! वंदन, नमन, पूजन आदि जितनी भी बाह्य प्रवृत्तियाँ हैं, वे सारी अपवाद भाव सेवा हैं। यहाँ इस पद्य के द्वारा उत्सर्ग और अपवाद भाव सेवा को स्पष्ट किया है। सेवा अर्थात् तन्मयता! चेतना अरिहंत परमात्मा के उज्ज्वल गुणों के चिंतन में तल्लीन बने, एकतान बने, बाह्य व्यवहार की समस्त ऊर्जा परमात्मा के गुण चिंतन में ही लग जाय, यही वास्तविक सेवा है। इसका विस्तार अगले पद्य में भी है।

कारण भाव परस्पर सेवन,

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर मरुधर मणि

श्री मणिप्रभसागरजी म. सा.

के 56 वें वर्ष प्रवेश पर जन्म दिन की

हार्दिक शुभकामनाएँ अभिवंदना....अभिनंदना...

GOLECHA AGENCIES

GOLECHA DISTRIBUTORS PVT. LTD.

VISHESH MOBILE STORES

शा. मोहनलालजी
हरकचन्दजी गोलेच्छा

श्रीमती पुष्पादेवी
मोहनलालजी गोलेच्छा

PADRU - VIJAYWADA

प्रगटे कारज भावोजी।
कारज सिद्धे कारणता व्यय,
शुचि परिणामिक भावोजी॥१०॥

अरिहंत परमात्मा, जो कारण भाव हैं, उनकी द्रव्य पूजा करते हुए भाव सेवा प्रकट अवश्य होती है। कार्य सिद्धि होने पर कारणता स्वत: समाप्त हो जाती है। उस समय आत्मा में पवित्र पारिणामिक भाव विद्यमान रहते हैं।

प्रस्तुत पद्य में श्रीमद्जी ने पूजा के क्रम पर प्रकाश डाला है। श्रीमद्जी द्वारा यह पद्धति-विवेचन आम जनमानस को लक्ष्य में रखकर किया हुआ है। इसमें उन्होंने चेतना के उत्थान के लिये क्रमिक विकास का एक मार्ग प्रशस्त किया है। प्रथम द्रव्य पूजा और बाद में भाव पूजा! सगुण से निर्गुण की उपासना सरलता से संभव है। एकाएक निर्गुण की धारा में बहना संभव नहीं है। शुद्धालंबन अशुद्ध प्रवृत्तियों से मन को मोड़ता है। मन का रूपांतरण करने, वृत्तियों में बदलाव के लिये किसी न किसी निमित्त को ढूंढ़ना अनिवार्य है। सांसारिक प्रीति को समाप्त करने के लिये परमात्मा से प्रीति जोड़नी चाहिये। हमारी प्रीति अभी मूर्त्त अर्थात् स्थूल है! मूर्त्त से प्रीति सरलता से होती है, क्योंकि उसका परिणाम तत्काल मिलता है। परंतु सूक्ष्म से प्रीति दीर्घ साधना से जुड़ती है। पहले हम परमात्मा की मूर्त्ति, जिसमें परमात्मा का आरोपण होता है, उससे प्रेम करें। परमात्मा की मूर्त्ति हमें परमात्मा के गुणों तक ले जायेगी।

परमात्मा की स्तुति, भक्ति, पूजा चेतना के लिये कारण है। जब चेतना का शुद्ध स्वरूप प्रकट हो जाता है, तब उस आलंबन से स्वत: हम मुक्त हो जाते हैं। चेतना जब परम विशुद्ध होती है, तब उसमें पारिणामिक भाव है कि 'द्रव्य पूजा वही सार्थक है, जो भावों के विकास में मदद करे।'

द्रव्य अगर भावों की वृद्धि में मदद नहीं करता तो वह निरर्थक है। सीढ़ी की सार्थकता मंजिल तक ले जाने में है। सीढ़ी अगर किसी मंजिल तक नहीं ले जाती तो वह निरर्थक है। इसमें यह स्वर स्पष्ट है कि द्रव्य पूजा की सार्थकता स्वयं के कारण न हो कर भावों के कारण है।

परमगुणी सेवन तन्मयता
निश्चय ध्याने ध्यावेजी।
शुद्धातम अनुभव आस्वादी
देवचन्द्र पद पावेजी॥११॥

परम गुणशाली अरिहंत परमात्मा की एकनिष्ठ होकर जो सेवा करता है, अपने स्वरूप का ध्यान करता है, वह जीव शुद्ध आत्मानुभव का आस्वादन करके शिव पद को प्राप्त कर लेता है।

प्रस्तुत पद्य में श्रीमद्जी ने स्वयं की आत्मा को संबोधन तो दिया ही है, साथ ही प्राणी मात्र को एक संकेत भी दिया है कि शुद्धता को पाने के लिये शुद्ध स्वरूपी का शरण ही एक मात्र उपाय है। जिसने अपनी चेतना को पूर्णता से पा लिया, वही पूर्णता की दिशा दे सकता है। अपूर्ण की शरण से पूर्णता प्राप्त नहीं हो सकती। पूर्ण व्यक्ति का आलंबन स्वत: छोटे-छोटे आलंबनों से मुक्त कर देता है। वीतराग परमात्मा का दर्शन सबसे बडा आलंबन है। परम आत्मा की सन्निधि से उनकी शक्ति हमारे भीतर बहने लग जाती है। प्रकंपनों का अपना प्रभाव होता है। परमात्मा के चारों ओर पवित्रता के प्रकंपन रहते हैं।

यद्यपि अध्यात्म का वातावरण निरालंबन का है। साधक को किसी आलंबन की जरूरत नहीं होती है। परंतु, जब तक अध्यात्म को उपलब्ध नहीं होते, तब वहाँ पहुँचने के लिये कोई सहारा चाहिये। शुद्ध आलंबन लेने से व्यर्थ में बहती ऊर्जा ऊपर उठने लग जाती है। यहाँ श्रीमद्जी ने प्रभु के आलंबन को सर्वोत्कृष्ट माना है। प्रभु का ध्यान चेतना को नीचे से ऊपर ले जाता है। जिन क्षणों में हम परमात्म-गुणों से भावित बन जाते हैं; हमारा तन्मय होना आवश्यक है। अगर तन्मयता का अभाव है तो वह ध्यान कैसा?जिन क्षणों में परमात्मा का ध्यान होता है, वह मात्र परमात्मा का ध्यान चेतना को पूर्ण विशुद्ध बना देता है। श्रीमद्जी कहते हैं कि मेरी एक ही कामना है कि शिवत्व की प्राप्ति तक मैं प्रभु के आश्रय और उनकी सन्निधि को प्राप्त करता रहूँ!

(क्रमश:)

❋ Jagadish Gogad ❋ Goutam Chand Gogad,
❋ Amritlal Gogad ❋ Mukesh Kumar Gogad

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर मरुधर मणि

श्री मणिप्रभसागरजी म. सा.

के 56 वें वर्ष प्रवेश पर जन्म दिन की

हार्दिक शुभकामनाएँ

अभिवंदना.... अभिनंदना...

ज्यों बादल उमड़-घुमड़ आये, धरती की प्यास बुझाने को,
त्यों हुआ आगमन सद्गुरू का, भक्तों पे प्रेम लुटाने को।।

श्रद्धावन्त

MUKESH CLOTHING CO.
10/2, 5th Cross, Right Side,
Magadi Road
BANGALORE - 560023
Ph. : (080) 23507208, 23303519 (M) 98440 43519

MUKESH GARMENTS
99, Magadi Road
BANGALORE - 560023

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर मरुधर मणि

श्री मणिप्रभसागरजी म. सा.

के 56 वें वर्ष प्रवेश पर जन्म दिन की

हार्दिक शुभकामनाएँ अभिवंदना....अभिनंदना...

गुरू आज्ञा में निश दिन रहिये, जो गुरू चाहे सोयि-सोयि करिये।
गुरू चरणन रज मस्तक दीजे, निज मन बुद्धि शुद्ध कर लीजे।।
आँखिन ज्ञान सुअंजन दीजे, परम सत्य का दरशन करिये।।
गुरू आज्ञा में निश दिन रहिये।।

श्रद्धावंत

प. पू. चम्पा जितेन्द्र ज्योति पू. विमलप्रभा श्रीजी म.सा. की सुशिष्या
पू. मयूरप्रिया श्रीजी म.सा. की प्रेरणा से

संघवी मोहनलालजी-मगीबाई कोचर पुत्र : ललितकुमार, कान्तिलाल,
दिनेश, मनोज पौत्र : विशाल, विकास, विरेन्द्र एवं समस्त कोचर परिवार

फलोदी निवासी हाल ईरोड़

संस्मरण
32

ऐसे थे मेरे गुरुदेव

उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

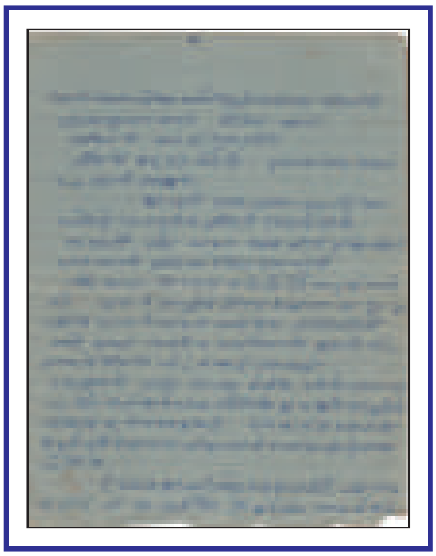

यह घटना फलोदी की है। वहाँ आगम ज्योति प्रवर्तिनी श्री प्रमोदश्री जी म.सा. बिराज रहे थे। वहाँ तपागच्छ व खरतरगच्छ का संयुक्त आयंबिल खाता चलता था। आयंबिल में नमक का उपयोग नहीं होता था। जिन्हें नमक का उपयोग करना होता, वे ऊपर से लेते थे; पर सामग्री में नहीं डाला जाता था।

वहाँ एक मुनिराज का पधारना हुआ था। उन्होंने अपने आयंबिल की सामग्री में पहले से ही नमक डालने की प्रेरणा दी। आयंबिल खाता दोनों ही समुदायों का था। नमक अन्दर डालने से समस्या खड़ी हो गई। तपागच्छ में नमक का प्रयोग प्रारंभ था, पर खरतरगच्छ की परम्परा में नमक ग्रहण नहीं किया जाता। यदि नमक लेना हो तो आयंबिल का प्रत्याख्यान न लेकर निर्विकृतिक (नीवी) का प्रत्याख्यान किया जाता है, ताकि दोष न लगे।

यह विषय वाद-विवाद का कारण बन गया। आयंबिल में नमक लिया जा सकता है या नहीं, इस पर शास्त्रार्थ प्रारंभ हो गया। मुनि जी कहने लगे- आयंबिल में नमक लेने में कोई दोष नहीं है। तब प्रवर्तिनी श्री प्रमोदश्री जी म.सा. ने उस समय पूज्य गुरुदेव श्री को पत्र लिखकर सारी स्थिति स्पष्ट की। उन्होंने लिखा था कि वे मुनि जी इस विषय पर शास्त्रार्थ करने के लिये तैयार हैं।

प्रवर्तिनी श्री प्रमोदश्री जी म.सा. स्वयं 45 आगमों की विशिष्ट ज्ञाता थीं। उन्हें आगम कंठस्थ थे। अन्य गच्छीय कई साधु-साध्वी भी आगम विषयक प्रमाण उनसे प्राप्त करते थे। वे स्वयं सारे प्रमाण दे सकते थे। पर यह उनकी लघुता की गुरुता थी कि उन्होंने पूज्यश्री से प्रमाण मंगवाये।

पूज्यश्री ने प्रवर्तिनी जी को प्रत्युत्तर दिया। शास्त्रों के पाठ लिखते हुए प्रमाणित किया कि आयंबिल में नमक का उपयोग नहीं किया जा सकता। पूज्यश्री ने लिखा- वे मुनि जी फलोदी हैं, जबकि हम दूर बैठे हैं। इस कारण मौखिक शास्त्रार्थ तो संभव नहीं है। परन्तु लिखित शास्त्रार्थ के लिये हम सदैव तैयार हैं।

पूज्यश्री का वह पत्र हमारे ज्ञान भंडार अनमोल निधि है।

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर मरुधर मणि

श्री मणिप्रभसागरजी म. सा.

के 56 वें वर्ष प्रवेश पर
जन्म दिन की

हार्दिक शुभकामनाएँ
अभिवंदना....अभिनंदना...

जन्म दिवस पर देते हैं, गुरूवर हम तुमको बधाई,
जीवन का हर इक लम्हा, हो तुमको सुखदायी।
हो शतं जीव, तुम चिरंजीव, शुभ घड़ी आज आई,
धरती सुखदायी, अम्बर सुखदायी।
जल सुखदायी, पवन सुखदायी,
बधाई हो बधाई...

PRATAP SINGH MEHTA
ARUN MEHTA
ASHOK BAFNA

Distributor : KAJARIA TILES

वंदनकर्ता

M/s. ARUN MARBLES

15/3, 6th Cross, Right Side, Magadi Road
BANGALORE - 560023
Ph. : (080) 23502725, 23156284 (M) 98450 26627

श्रमण चिंतन
28

मोक्ष का मंत्र, संयम का यंत्र

मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.

संयम एक ऐसा वैभवशाली शब्द है, जिसे सुनते ही रोम-रोम में आनंदधारा प्रवाहित होने लगती है।

चारित्र एक ऐसा दिव्य गहना है, जिससे शृंगार करने के लिये इन्द्र, नरेन्द्र और देवेन्द्र भी तरसते हैं।

दीक्षा एक ऐसा अनुपम मंत्र है, जिसका ध्यान करते ही जन्म, जरा और मृत्यु रूपी शत्रु पल मात्र में पलायन कर जाते है।

कैसे गाऊँ इसकी गौरवगाथा!
कैसे सुनाऊँ इसकी महिमा-गीतिका!
कैसे बताऊँ इसकी प्रशस्ति की कथा!

ओहो! दीक्षा का दिव्य साम्राज्य जिसे मिल जाये, उसके चरणों में आलोटने, पाने और निहारने के लिये चक्रवर्ती अपनी महासंपदा भी छोड़ देते हैं।

अनादिकालतो जीवो, ग्रस्तोऽयं कर्मरोगतः।
चिकित्सा तस्य दीक्षेयं,
स्वस्थो जीवो भविष्यति॥

अनादिकाल से जीवात्मा पर जो कर्म के कीटाणु चिपके हुए हैं, जिन आठ कर्मों के कारण जीव भव-रोग से ग्रस्त है, उनकी दवा न देवों के वैद्य अश्विनी के पास है, न मनुष्य लोक के महावैद्य धनवन्तरी के पास है। उसकी चिकित्सा एक-मात्र दीक्षा है, जिससे जीव स्वस्थ होता है।

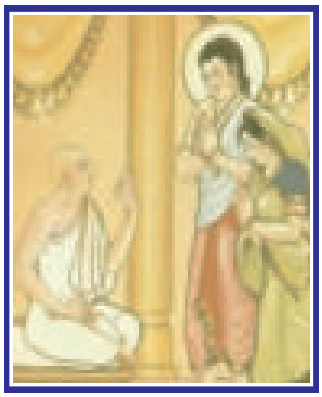

- तुझे पता है अनाथी मुनि का दृष्टान्त। शरीर की महावेदना जब दवा और दुआ से नहीं मिटी, तब विचार आया। यदि कल के सूर्योदय से पहले मेरी पीड़ा का पार आ गया तो मैं प्रव्रज्या का पूजनीय पंथ पकड़ लूंगा।
- प्रव्रज्या के मंत्र का संकल्प करते ही सारी व्याधि समाधि, सुख और शान्ति में बदल गयी।
- द नमि राजर्षि का उदाहरण भी तो ठीक ऐसा ही है। शिरोवेदना में कंगन के आपस में टकराने की ध्वनि घोर शूल की भाँति चुभने लगी। चंदन घिस रही रानियों ने एक-एक कंगन को छोड़कर सारे कंगन उतार दिये। अरे! मेरे कानों को चुभने वाली ध्वनि कहाँ गयी! वास्तविकता से अवगत होते ही याद आ गया- मैं भी तो अकेला हूँ। सारी पीड़ाओं का कारण एक मात्र संयोग, स्नेह और संग्रह है। तत्काल प्रतिज्ञा ली संयम की। और जैसे महाचमत्कार घटा। सारी वेदना संयम की वर्धापना में बदल गयी। उनकी वैराग्य से छलकती संवेदना कैसी अनुपम!

सुहं वसामो जीवामो जेसि मो नत्थि किंचणं।
मिहिलाए डइज्झामाणीए, नमे डज्झइ किंचणं॥

'हम दीक्षा में सुख से रहते हैं... सुख से जीते हैं। हमारी किसी के प्रति ममता नहीं। इसलिये मिथिला के जलने पर मेरा कुछ भी नहीं जल रहा।

- दशरथ पुत्र शत्रुहन को पूर्व भव में जब रानी के झूठे कलंक से शूली के पर चढ़ाने के लिए ले जाया जा रहा था, तब संकल्प का दीप जला- यदि बच गया तो दीक्षा ले लूंगा। उसका संकल्प फलीभूत हुआ।

दीक्षा ही नहीं, दीक्षा का मनोरथ भी तारता है। इसलिये वत्स। तूं घर जाने की बात मत कर।

दशवैकालिक सूत्र की प्रथम चूलिका का सत्रहवाँ मंत्र

गुरुदेव को जन्म दिवस
की
हार्दिक शुभ कामनाएँ
MANEK STEEL CENTRE
JINDUTT STEEL
गुरुदेव को जन्म दिवस की हार्दिक बधाई
कल्याणपुरा (बाड़मेर) स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनालय की
प्रथम वर्षगांठ दि. 23-2-2015 के उपलक्ष में
धोरीमन्ना निवासी मातुश्री श्रीमती भँवरीदेवी
सुपुत्र : पारसमल, सोहनराज, धनराज, रमेशकुमार, महेन्द्रकुमार, मुकेशकुमार
बेटा पोता : गोरधनमलजी प्रतापमलजी मालाणी रांका शेठिया परिवार
धोरीमन्ना - अहमदाबाद - मुंबई

सुन- **बहुं च खलु भो! पावं कम्मं पगडं।**

तूंने पूर्व भवों में महाचारित्रमोहनीय कर्म बांधे हैं।

- **चारित्र का अपयश किया होगा।**
- **संयमी की निंदा-विकथा की होगी।**
- **अणगारों के उपकरणों को तोड़ा-फोड़ा होगा। जलाया या छिपाया होगा।**
- **साधुओं पर कलंक लगाया होगा।**
- **दीक्षा लेने में अन्तराय किया होगा।**
- **चारित्र मार्ग से द्वेष किया होगा।**
- **जैन धर्म का कुप्रचार किया होगा।**
- **मिथ्यात्वी के चारित्र की प्रशंसा की होगी।**
- **चारित्र से नष्ट-भ्रष्ट हुआ होगा।**

पता नहीं, क्या-क्या, कौन-कौन से, कितने पापों का सेवन करके चारित्र मोहनीय कर्म का उपार्जन किया होगा, तभी तो तूं संयम से भ्रष्ट हो रहा है।

पर याद रख। ये कर्म चारित्र के त्याग से नहीं, जिनाज्ञा और गुर्वाज्ञा के अनुसार चारित्र पालने से ही नष्ट होने वाले हैं।

घर जाकर तो और ज्यादा चारित्र की विराधना होगी। और वह विराधना अन्तराय बनकर भव-भव में चारित्र धर्म मे दूर रखेगी। तुझे गुर्वाज्ञा को प्राणाधार मानकर जीना है, इसी से तेरे पाप कर्मों का सर्वथा क्षय हो सकता है।

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर मरुधर मणि **श्री मणिप्रभसागरजी म. सा.**

के 56 वें वर्ष प्रवेश पर जन्म दिन की हार्दिक शुभकामनाएँ... अभिवंदना.... अभिनंदना...

श्रीमति शांतिप्रभा रंगरुपमलजी लोढ़ा चैन्नई

गौतमचंद-भीखीबाई, संजयकुमार-रेशमा, प्रमोदकुमार बैद मुथा परिवार फलौदी वाले चिन्तादरी पेठ, चैन्नई

गौतमचन्द वच्छराजजी भंसाली मरुधर मे झाब हाल ईरोड़

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर मरुधर मणि

श्री मणिप्रभसागरजी म. सा.

के 56 वें वर्ष प्रवेश पर जन्म दिन की

हार्दिक शुभकामनाएँ अभिवंदना....अभिनंदना...

गुरूदेव मेरे, गुरूदेव मेरे, गुरूदेव मेरे...
तेरे दम से चेहरे पे रौनक आई है,
तू है तो ये जिन्दगी मुस्कुराई है।
हमने जो कुछ भी है पाया,
तेरी रहमत का असर है,
गुरूदेव मेरे, गुरूदेव मेरे।।

प. पू. गुरूदेव उपाध्याय प्रवर
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

प. पू. माताजी म.
श्री रतनमाला श्रीजी म.सा.

प. पू. बहिन म.
डॉ. श्री विद्युत्प्रभा श्रीजी म.सा.

कपूरचन्दजी पालरेचा

श्रीमती जड़ावीदेवी पालरेचा

वंदनकर्ता

श्रीमती जड़ावीदेवी कपूरचंदजी पालरेचा के आशीर्वाद से

पुत्र : भरतकुमार-सौ. रेणुदेवी, पुत्र : भावेशकुमार, पुत्री : पूजा, आरती पालरेचा परिवार

M/s. MONICA AGENCIES

PolyThene Bags, Moontex Ganesh & Meena Gold Carry Bags

No. 12/8-1, 6th Cross, Right side, Magadi Road

BANGALORE - 560023

Ph. : (080) 23500828 (M) 98453 06468

सद्–विचार

संकलन- विद्युत चरणरज नीतिप्रज्ञा श्री

- कुछ खाने के लिये कुछ खोना नहीं बल्कि कुछ बोना पड़ता है।
- यदि आप खोटे मनुष्यों की संगत करते हो, तो आप बहुत दिनों तक अच्छे नहीं रह सकते।
- दूसरों की गलती सहन करना एक बात है, लेकिन उन्हें माफ कर देना और भी महान बात है।
- जो भाग्य में है, वह भाग कर आयेगा, परन्तु जो भाग्य में नहीं है, वह आकर भी भाग जायेगा।
- जब हम क्रोध की अग्नि में जलते हैं, तो क्रोध का धुआँ हमारी आँखों में जाता है।
- जीवन को जब श्रेष्ठता के साथ जीया जाता है, तो ऐसा जीवन देवत्व को प्राप्त कर लेता है।
- शांति की शक्ति धारण कर लो तो मानसिक रोग समाप्त हो जायेंगे।
- बदला लेने का आनंद दो चार दिन रहेगा, लेकिन माफ कर देने का आनंद जीवन भर रहेगा।
- अपमान करना किसी के स्वभाव में हो सकता है, पर सम्मान करना हमारे संस्कार में होना चाहिये।
- जब तक आप खुद पर विश्वास नहीं करते, तब तक आप भगवान पर विश्वास नहीं कर सकते।
- आत्मा को जान लेने से मनुष्य मृत्यु से नहीं डरता।
- जितनी हम दूसरों की कमी देखेंगे और आलोचना करेंगे, जीवन में उतनी ही शांति कम होती जायेगी।

पी-एच.डी. उपाधि

हैदराबाद के डॉ. महेन्द्र कुमार जैन को उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद द्वारा 'हिन्दी के विकास में जैन साहित्यकारों का योगदान' विषय पर पी-एच.डी. उपाधि से विभूषित किया गया। श्री जैन को हार्दिक बधाई।

जहाज मंदिर पत्रिका के नये संरक्षक

शा. मूलचंदजी पारसमलजी छाजेड़, बाड़मेर-तिरुपुर

शा. जगदीशचंदजी, केसरीमलजी बोथरा, बाड़मेर-तिरुपुर

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर मरुधर मणि **श्री मणिप्रभसागरजी म. सा.**
के 56 वें वर्ष प्रवेश पर जन्म दिन की हार्दिक शुभकामनाएँ अभिवंदना....अभिनंदना...
शा. मोतीलाल सुरजमल केवलचन्द
विकास संदीप देवडा धोका परिवार

महिला परिषद् के चुनाव

श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ महिला परिषद्, बैंगलोर के चुनाव ता. 13 जनवरी 2015 को बसवनगुडी श्री जिनकुशलसूरि आराधना भवन में परिषद् के चेयरमेन श्रीमती शान्ति देवी गोठी की अध्यक्षता में संपन्न हुए। जिसमें श्रीमती पुष्पा चौपडा को अध्यक्ष, श्रीमती रीता पारख एवं पवनी बाफना को उपाध्यक्ष, श्रीमती आरती जैन को मंत्री, श्रीमती किरण ललवानी एवं पुष्पा पारख को सहमंत्री, श्रीमती विजयलक्ष्मी कोठारी को कोषाध्यक्ष, श्रीमती शशि पारख को सहकोषाध्यक्ष एवं वंदना चौपडा को प्रचार प्रसार मंत्री सर्व सम्मति से चुना गया। कार्यकारिणी समिति में 10 सदस्य लिये गये।

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर मरुधर मणि

श्री मणिप्रभसागरजी म. सा.

के 56 वें वर्ष प्रवेश पर जन्म दिन की

हार्दिक शुभकामनाएँ, अभिवंदना.... अभिनंदना...

सूरज सा तेज जिनमें, चांद सी है शीतलता। मोम सा है जिनका हृदय,
फल सी कोमलता, जिनशासन के उजियारे।
बाल हैं जिनके घुंघराले, हर प्रकार की उलझन, मिनटों में सुलझाते।
ज्ञान के भंडार को, दोनों हाथों से लुटाते, वो तेजस्वी संत श्री मणिप्रभ गुरुवर कहलाते।।

संघवी अमृतलाल पुखराजजी कटारिया

महामंत्री	: श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, मुंबई
संरक्षक	: श्री नाकोड़ा तीर्थ पूर्णिमा पदयात्रा संघ भैरव सेवा समिति-बालोतरा
संस्थापक अध्यक्ष	: श्री समस्त जैन कटारिया एवं कटारिया संघवी फाउण्डेशन-मुंबई
उपाध्यक्ष	: श्री आर्य गुण गुरुकृपा जैन तीर्थ रामजी का गोल-बाड़मेर (राज.)
उपाध्यक्ष	: बालोतरा-जसोल प्रवासी संघ, मुंबई
उपाध्यक्ष	: श्री बालोतरा प्रगति मंडल, मुंबई

प्रतिष्ठान **महाभैरव मेटल इन्डस्ट्रीज-मुंबई** मो. 9819025596, 9320425596

115

विहार डायरी

उपा. श्रीमणिप्रभसागरजी म.सा.

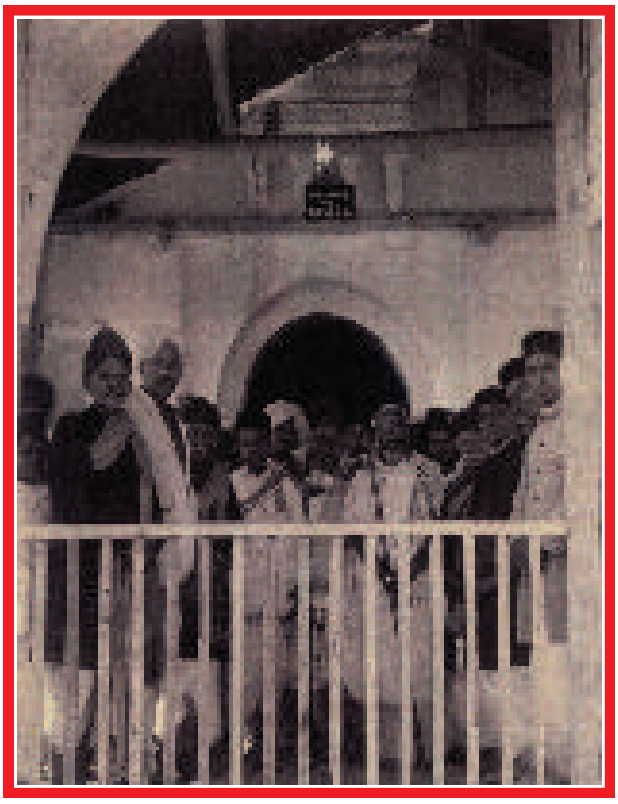

पूज्य गणाधीश श्री हरिसागरजी म.सा. का आणंदजी कल्याणजी पेढ़ी के साथ लगातार पत्र-व्यवहार चल रहा था। पूज्य गणाधीश जी महाराज के भगीरथ प्रयत्न व गच्छ के श्रावकों के भारी दवाब के कारण पेढ़ी को शीघ्र निर्णय करना पड़ा; और माघ सुदि 13, संवत् 1986 तदनुसार मंगलवार दिनांक 11 फरवरी, 1930 को 'खरतरवसही' का बोर्ड लगा दिया गया।

हालाँकि निश्चय यह हुआ था कि बोर्ड पर **'खरतरवसही चौमुखजी नी टूंक'** लिखा जायेगा। पर, पेढ़ी वालों ने 'खरतरवसही', इस नाम को कमजोर करने के लक्ष्य से दोनों शब्दों के बीच उर्फ शब्द जोड़ कर पाटिया लगाया-

'खरतरवसही उर्फ चौमुखजी नी टूंक'

यह भी ज्ञातव्य है कि पेढ़ी ने पूर्व में एक नया प्रस्ताव दिया कि बोर्ड पर मैटर **चौमुखजी उर्फ खरतरवसही नी टूंक** लिखा जाये; जो कि किसी भी स्थिति में स्वीकार्य नहीं था।

पू. गणाधीशजी महाराज व गच्छ ने बोर्ड लगाने पर अपनी अपार प्रसन्नता व्यक्त की। आंदोलन की सफलता पर सर्वत्र आनंद का वातावरण बना। खरतरगच्छ के ही श्रीमद् देवचन्द्रजी महाराज द्वारा संस्थापित इस पेढ़ी के साथ हुए वाद-विवाद का समापन हुआ।

लेकिन इस आंदोलन ने एक प्रश्न तो उपस्थित किया ही कि एक सही और सामान्य बात के लिये भी अपनी ही उस पेढ़ी के साथ जो संपूर्ण श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ का प्रतिनिधित्व करती है, इतना बड़ा आंदोलन छेड़ना पड़ा।

यह अत्यन्त दुखद सत्य है कि पालीताना की टूंकों का कहीं पर भी नाम लिखा जाता है तो इस टूंक के लिये 'खरतरवसही' न लिख कर सिर्फ 'चौमुखजी नी टूंक' ही लिखा जाता है। सिद्धाचल के संबध में सैंकड़ों पुस्तकों का प्रकाशन हुआ है, पर नाम 'चौमुखजी नी टूंक' ही लिखा मिलता है।

उन लेखकों को 'खरतरवसही', जो उसका मूल नाम है, लिखने में क्या समस्या आती है?क्या यह गच्छ-द्वेष का परिणाम नहीं है?

पाटिया लग जाने से एक विषय की पूर्णाहुति हुई। यह पाटिया प्रकरण गच्छ की एकता में, संगठन में निमित्त बना।

पूज्य गणाधीशजी ने फरमाया- 'खरतरगच्छ संघ समिति का गठन भले खरतरवसही बोर्ड के निमित्त से हुआ हो, पर अब इसे आगे और अधिक सक्रिय रहते हुए गच्छ के विकास का कार्य करना है।'

परिणामस्वरूप इस समिति का दूसरा अधिवेशन

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर मरुधर मणि

श्री मणिप्रभसागरजी म. सा.

के 56 वें वर्ष प्रवेश पर जन्म दिन की

हार्दिक शुभकामनाएँ अभिवंदना....अभिनंदना...

जन्म दिवस पर देते हैं,
गुरूवर हम तुमको बधाई,
जीवन का हर इक लम्हा,
हो तुमको सुखदायी।
हो शतं जीव, तुम चिरंजीव,
शुभ घड़ी आज आई,
धरती सुखदायी, अम्बर सुखदायी।
जल सुखदायी,
पवन सुखदायी,
बधाई हो बधाई...

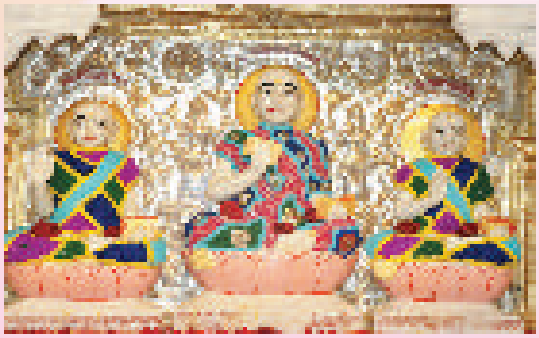

वंदनकर्ता

कार्याध्यक्ष : कैलाश भंवरलालजी संकलेचा, सचिव : नेमीचंद हस्तीमलजी कटारिया
सहसचिव : पुखराज रुपचंदजी तातेड़ कोषाध्यक्ष : मोहनलाल हरकचंदजी गुलेछा
सह कोषाध्यक्ष : भीकचन्द तोगाजी गुलेछा एवं समस्त कार्यकारिणी सदस्यगण एवं पादरु निवासी

निवेदक

श्री शीतलनाथ भगवान एवं श्री जिनकुशल सूरि दादावाड़ी ट्रस्ट

मेन रोड, पादरू-344801, जिला बाड़मेर, राजस्थान
Regd. Office : 75, N.N. Street, CHENNAI-03 (M) 98410 85511

जयपुर में पूज्य गणाधीशजी श्री हरिसागरजी म.सा. की पावन निश्रा में ही आयोजित हुआ। यह सम्मेलन वि.सं. 1987 में पौष वदि 1 से 3 तदनुसार दिनांक 6 से 8 दिसम्बर, 1930 तक त्रिदिवसीय आयोजन के रूप में संपन्न हुआ। इस सम्मेलन का पूरा लाभ सेठ दुलीचंदजी हमीरमलजी गोलेच्छा परिवार ने लिया था।

इस सम्मेलन में खरतरगच्छ से संबंधित बहुत सारे विषयों पर चर्चा करके निर्णय किया गया। गच्छ का प्राचीन साहित्य प्रकाशित करना; गच्छ के अनुयायियों की संख्या में वृद्धि हो, ऐसा प्रयास करना; संख्या की कमी के कारणों की खोज करना व उनका निराकरण करना; इन सब निर्णयों के साथ ही एक महत्वपूर्ण निर्णय और लिया गया था। उस निर्णय के प्रस्ताव की भाषा इस प्रकार थी–

'यह खरतरगच्छ संघ समिति अपनी कार्यकारिणी सभा को अधिकार देती है कि वह गच्छ के अधीन संस्थाओं के संचालकों से उसका पूर्ण विवरण मांगे, जिनमें उसकी वर्तमान दशा का भी दिग्दर्शन हो और इसको वार्षिक रिपोर्ट में प्रकाशित करती रहे। यहाँ संस्था शब्द का तात्पर्य देवस्थान व शिक्षा संस्था, दोनों से है।'

यह अत्यन्त महत्वपूर्ण निर्णय था। गच्छ में अनेक संस्थाएं हैं, दादाबाड़ियां हैं, उनका वहीवट है। परन्तु गच्छ–एकता व नियंत्रण के अभाव में सामंजस्य नहीं हो पाता। कितनी ही दादाबाड़ियां ऐसी हैं, जहाँ आय के स्रोत काफी हैं तो कितनी ही दादाबाड़ियां ऐसी भी हैं, जहाँ मासिक खर्च भी नहीं निकल पाता। यह तो स्पष्ट है कि दादा गुरुदेव के भंडार की राशि का उपयोग दादाबाड़ी के लिये ही होना चाहिये। उस राशि से अन्य कार्य नहीं हो सकते। मगर जानकारी का अभाव होने के कारण उस राशि का उपयोग अन्य जगह भी होता दिखाई देता है।

किस राशि का उपयोग कहाँ हो सकता है, इस विषय में एक गच्छीय परम्पराओं से युक्त सर्वसम्मत आचार संहिता का निर्माण होना चाहिये। साथ ही उस आचार संहिता का पालन गच्छ की हर संस्था व संघ में होना चाहिये। इससे गच्छ–समाचारी की एकरूपता प्रकट होती है।

खरतरगच्छ संघ समिति के जनरल अधिवेशन में लिया गया यह निर्णय कितना कार्यान्वित हो पाया, यह कहना मुश्किल है।

(क्रमशः)

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर मरुधर मणि

श्री मणिप्रभसागरजी म. सा.

के 56 वें वर्ष प्रवेश पर जन्म दिन की

हार्दिक शुभकामनाएँ... अभिवंदना.... अभिनंदना...

राहुल ए, संघवी- 9408395557,8735039456

mail- rahultammana347@gmail.com

श्रद्धावंत

तमन्ना प्रेजेन्ट्स

राहुल इवेण्ट

अंजनशलाका, प्रतिष्ठा, दीक्षा, नव्वाणुं, चातुर्मास, संगीत संध्या, गजल, गरबा, मेजिक शो, ड्रामा आदि हर प्रकार के आयोजन में पूर्ण सेवाऐं प्रदान करने के अनुभवी

106, सांई कृपा सोसायटी, अमित नगर के पास, कारेली बाग, बडोदरा (गुजरात)

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर मरुधर मणि
श्री मणिप्रभसागरजी म. सा.
के 56 वें वर्ष प्रवेश पर जन्म दिन की
हार्दिक शुभकामनाएँ
अभिवंदना.... अभिनंदना...
जिनके नयनों में स्नेह और ममता का अंजन है,
जिनके जीवन में प्रेम व परोपकार का गुंजन है
जिनके रोम-रोम में संयम साधना का स्पंदन है
वात्सल्य के महासागर गुरूदेव को जन्म दिवस पर
शत् शत् वन्दन है
गुरुभक्त
गुरुभक्त परिवार
तिरुपातुर
(तमिलनाडु)

Best Compliments From
POOJA
Investment & Developers
Beautiful Investments / Affordable Prices
Pooja Stocks
Financial Services
EQUITIES, COMMODITIES, FOREX
POOJA SILKS
Marvels
Infra Solutions
Dealers in Multi Brand : Steel TMT & cement

मधुर संस्मरण

मेरी अनुभूति

बहिनम. साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजीम.

मैंने अपने स्वाध्याय के अंतर्गत श्रीमद् देवचंद्र के स्तवन की एक कड़ी को जब पढ़ा तो मैं जैसे उसी के चिंतन में डूब गयी। लम्बे समय तक मेरे विचारों पर उस एक पंक्ति का कब्जा रहा। मैं उस पंक्ति को बार-बार गुनगुनाती और अर्थ का चिंतन करती! ज्यों-ज्यों अर्थ और मूल का स्मरण करती; मेरा रोम-रोम भाव विभोर हो उठता!

वह पंक्ति थी-'प्रभु तुम जागंण रीति सर्व जग देखता हो। जिन सत्ता शुद्ध सहुए लेखता हो।'

परमात्मा इस संसार को, संसार के सभी पदार्थों को देखते हैं; पर उसे पर्याय की अपेक्षा से न देखकर शुद्ध निर्दोष और निसंग सत्ता से देखते हैं; और इसी कारण वह संसार को देखते हुए भी स्वयं को प्रतिक्रिया से मुक्त रखते हैं। प्रतिक्रिया से मुक्त रहने की साधना ही उनकी साधना थी।

हम पल-पल प्रतिक्रिया का संसार जीते हैं। घटना देखते कम हैं, प्रतिक्रिया ज्यादा और तुरंत करते हैं; और यह प्रतिक्रिया की मानसिकता ही हमारे कर्मबंधन का कारण बनती है।

पदार्थों के साथ रहना और उसमें अपनी प्रतिक्रिया जोड़ना भिन्न वस्तु है। संसार में रहते तो परमात्मा भी हैं, पर वे संसार के साथ न राग भाव से जुड़ते हैं और न द्वेष से। वे वस्तु को उसके मूल रूप से देखते हुए आवश्यकतानुसार साक्षी भावों से उपयोग मात्र करते हैं।

किसी भी साधक की साधना का लक्ष्य यही होता है कि वह अपनी साधना द्वारा पदार्थों को राग और द्वेष की भावना से मुक्त होकर मात्र देखे, जाने और उपयोग करे।

मैं परमात्मा महावीर के साधना पथ पर गतिमान साधिका हूँ। अगर संसार को में कर्त्ता ओर भोक्ता भावों से भोगती रही तो मैं कर्म मुक्त कैसे बनूंगी। परमात्मा का अनुयायी या साधक आवश्यक उपकरण रखता है। सभी शारीरिक क्रियाएं भी करता है, पर उसकी आसक्ति उसमें कहाँ होती है?

जब एक आत्मा संयम स्वीकार करता है तब एक क्रिया होती है। वह क्रिया है कामली ओढ़ाना! कामली के द्वारा पूरा शरीर ढँक दिया जाता है, अर्थात् उस साधक का जीवन परमात्मा की आज्ञा से ओतप्रोत होगा। जहाँ साक्षात् प्रभु का अस्तित्व होगा, वहाँ अन्य किसी का प्रवेश कैसे हो सकता है?हाँ, शरीर के स्तर पर आवश्यक क्रियाएं होंगी, पर उन क्रियाओं में भी उसका ध्यान तो आज्ञा पर ही होगा!

मैंने कुछ समय पूर्व कुमारपाल महाराजा का जीवन चरित्र पढ़ा था।

परमार्हत् कुमारपाल महाराजा 18 देशों के अधिपति होकर भी श्रावकोचित व्यवहार में कितने दृढ़ थे?उनकी दृढ़ता, उनकी संकल्प निष्ठा सामान्य सी घटना में भी कमजोर होते मेरे मन के लिये प्रकाशस्तंभ का काम करती है।

साधक अधिक से अधिक साधना द्वारा स्वयं को पवित्र बनाकर परमात्मा के साथ तन्मय कैसे हो?इसका वर्णन पढ़ते-पढ़ते मैं उस क्षण तो इतनी भावुक और हृदय प्रधान हो जाती हूँ कि बस अब मैं मात्र साधना का जीवन ही जीऊंगी। पर दुख: और व्यथा इसी बात की है कि वह भावप्रवणता कुछ ही क्षण की मेहमान होती है; और कब मैं पुन: बुद्धिप्रधान, अहंकार-प्रधान भावों में प्रवेश कर मन के नचाये नाचना शुरू कर देती हूँ, पता भी नहीं चलता!

एक युवक ने एक संन्यासी को देखा! वह युवक बड़ी

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर मरुधर मणि

श्री मणिप्रभसागरजी म. सा.

के 56 वें वर्ष प्रवेश पर जन्म दिन की

हार्दिक शुभकामनाएँ अभिवंदना....अभिनंदना...

कितने हैं निर्मल पावन, ये दर्शन गुरूदेव के... सुन्दर बड़े मन भावन, ये दर्शन गुरूदेव के...
गुरू दर्शन का फल सुखदायी, लाभ उठा लो मेरे भाई,
महकाए घर और आँगन, ये दर्शन गुरूदेव के... ऋतु है जगत ये गुरू दर्शन की,
प्यास बुझा लो इन नैन की, भक्तों को करते धन-धन, ये दर्शन गुरूदेव के...

श्रद्धावंत

MAHALAXMI TRADING CO.

TIRUPPUR - ERODE

RATANLAL BOTHRA, SAMPATRAJ DHARIWAL

LALIT BOTHRA

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर मरुधर मणि

श्री मणिप्रभसागरजी म. सा.

के 56 वें वर्ष प्रवेश पर जन्म दिन की

हार्दिक शुभकामनाएँ अभिवंदना....अभिनंदना...

गुरूदेव मेरे, गुरूदेव मेरे, गुरूदेव मेरे...
तेरे दम से चेहरे पे रौनक आई है,
तू है तो ये जिन्दगी मुस्कुराई है।
हमने जो कुछ भी है पाया,
तेरी रहमत का असर है,
गुरूदेव मेरे, गुरूदेव मेरे।।

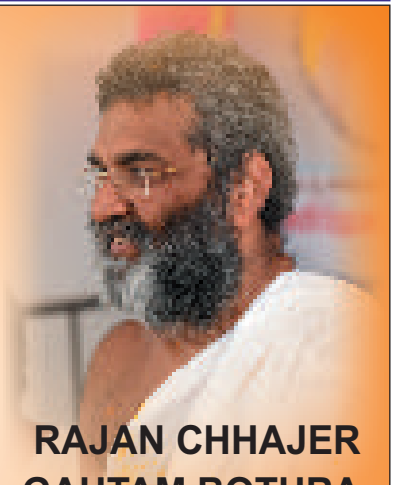

RAJAN CHHAJER

GAUTAM BOTHRA

VINIT CHHAJER

Ph. : 93641 06500

DHANLAXMI EXPORTS

7 Ottukar Chenmiya, ERODE-DELHI

बधाई

मैं मेरे प्रिय गुरुदेव श्री को उनके जन्म दिन की हृदय से बधाई देता हूँ। प्रार्थना करता हूँ परमात्मा से... प्रार्थना करता हूँ दादा गुरुदेव से कि वे पूज्य श्री को शतायु करे !

इस अवसर पर पूज्यश्री से प्रार्थना करता हूँ कि वे मुझे ऐसी शक्ति व क्षमता दें कि मेरा जीवन पूर्णरुप से संयम मय हो... आत्म-साधना की सहजता मिले... ।

फाल्गुन सुदि चौदस तिथि, दौडी दौडी आई ।।
देता हूँ मैं हृदय से, जन्म दिवस की बधाई।

- मुनि श्रेयांसप्रभसागर

श्रद्धा और उमंग के साथ उनके पास गया और उनसे पूछा- आप मुझे बताइये कि यहाँ के सुप्रसिद्ध शिवजी के मंदिर तक जाने में कितना समय लगेगा?

संन्यासी मौन!

युवक ने पुनः पूछा- आप बताइये न?क्या आपको कानों से सुनायी नहीं देता?

संन्यासी ने कहा- नहीं! ऐसी बात नहीं है।

युवक ने पुनः कहा- तो आपको मेरी भाषा समझ में नही आ रही है?

संन्यासी ने कहा- आ रही है।

- तो आप मेरी बात का उत्तर क्यों नहीं दे रहे हैं?भुनभुनाते हुए युवक ने कहा।

संन्यासी उसकी बात पर मात्र मुस्कुराते रहे।

युवक तंग होकर वहाँ से रवाना हुआ। 20 कदम मुश्किल से गया होगा कि संन्यासी ने पुकारा- भैया! जरा इधर आना।

युवक ने पीछे देखा! उसे ही बुलाया जा रहा था। वह मुड़कर संन्यासी के पास पहुँचा।

संन्यासी ने कहा- तुम एक घण्टे में मंदिर पहुँच जाओगे।

युवक ने नाराजगी से कहा- यह बात तुम पहले भी बता सकते थे। संन्यासी ने जो उत्तर दिया- वह बड़ा मार्मिक था। संन्यासी ने कहा- मंजिल की प्राप्ति चाल पर निर्भर करती है। तुम्हारी चाल देखे बिना मैं कैसे बता सकता था कि कितनी देर में पहुँचोगे!

मैं परमात्मा से बहुत बार पूछती हूँ- भगवन! मुझे चिरसमाधि कब प्राप्त होगी! मुझे अनुभव होता है कि परमात्मा मुझे जबाब नहीं दे रहे हैं। बार-बार पूछने पर भी जब उत्तर नहीं मिलता है, तो मैं हताश, निराश, उदास, व्यथित एवं व्याकुल हो उठती हूँ; ठीक उस युवक की तरह, पर जब गहराई में उतरती हूँ तो लगता है कि मोक्ष कब प्राप्त होगा, इसका उत्तर भगवान के पास कैसे हो सकता है?इसका उत्तर तो मेरे पास ही होगा न!

मात्र मेरे पूछने और सोचने से मोक्ष हो जाता तो परमात्मा अविलंब उत्तर दे देते, पर न मोक्ष का विचार करने से मोक्ष प्राप्त होता है और न पूछने से; बल्कि मोक्ष मार्ग पर चलने से मोक्ष होता है।

परन्तु मन बड़ा चालाक है। वह धर्म की राहों पर तो कछुए की चाल से चलेगा; पर अधर्म या संसार की दिशा में हरिण की चाल से दौड़ेगा।

मैंने एक बार नहीं, बहुत बार सोचा है। नामकर्म को मिटाने के लिये मैंने संयम स्वीकार किया है, पर क्या नाम और फोटो के प्रति अनासक्त भावों का विकास किया! मेरी स्मृति में उभरते हैं संत रामसुखदास जी, जिनके स्वर्गवास को लगभग एक दशक भी नहीं हुआ है। मुझे लगा... वाकई में परमात्मा महावीर के सिद्धांतों का उन्होंने अपने जीवन में कितना अधिक अनुसरण किया था। अपने जीवनकाल में उन्होंने एक भी फोटो खिंचने नहीं दिया और न उन्होंने अपना नाम कहीं भी लगाने की अनुमति अनुयायी वृंद को दी।

मैं यह सोचती हूँ, ऐसा चाहती हूँ, पर ऐसा पुरुषार्थ नहीं हो पा रहा है।

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर मरुधर मणि

श्री मणिप्रभसागरजी म. सा.

के 56 वें वर्ष प्रवेश पर जन्म दिन की

हार्दिक शुभकामनाएँ... अभिवंदना.... अभिनंदना...

ओ मेरे प्यारे गुरूदेव, आप जिनशासन की शान हो
सरल स्वभावी, मृदुभाषी, आप गच्छ की आन-बान हो
रोहिणी माता के दुलारे, मोकलसर के सितारे हो
बहिन विमला के भैया प्यारे, महावीर शासन के उजियारे हो।।

गुरुभक्त

RAJESH CHHAJER
CHHAJER CHEMICALS
502, Adamji Building
413, Narshi Natha Street,
Mumbai-400009
Mo. : 09322228400/09313350002
Tel. : 022 23428963, Res. : 23691234
chhajerchemicals@hotmail.com

SURESH CHHAJER
CHHAJER CHEMICALS
6-1, Shatrunjay Apt.
42/57, Vepery High Road,
Chennai-600007
Cell No. : 09841036585/09382837502
Tel. : 044 42147097, Res. : 25610604
sureshchhajer7@gmail.com

DINESH CHHAJER
NITYADARSAN ENTERPRISES
C-139, 2nd Floor, Mahendru Enclave,
G.T. Karnal Road, **New Delhi-110009.**
Cell No. : 09313784131, Tel. : 011 27412810
E-mail : dineshchhajer007@gmail.com

जन्म दिवस की शुभ घड़ियां

(तर्ज- रेशमी सलवार...)

जन्म दिवस की शुभ घड़ियां ये आयीं जी।
गुरुवर मणिप्रभजी को देते सभी बधाई जी।।टेर।।

श्री सिद्धाचल पर आकर, गुरुवर ने संयम धारा।
माता-बहिना के संग में, प्रभु वीर पंथ स्वीकारा।
धन्य पुण्याई जी।।१।।

मोकलसर में जन्म लिया है, पारसमलजी के प्यारे।
लुंकड़ कुल के नव नंदन, हम सबके राज दुलारे।।
बजी शहनाई जी।।२।।

जिनकान्तिसागरसूरि, गुरुवर का मिला है शासन।
अनुशासन में गुरुवर ने, कीना शास्त्रों का वांचन।।
शिक्षा पाई जी।।३।।

प्रतिष्ठाएं करवाईं, कितने ही तीर्थ बनाये।
जहाज मंदिर प्यारा, सारे जग में नाम कमाये।।
छवि मन छाई जी।।४।।

मुनि विरक्त शरणे आया, अमीवृष्टि मुझ पर करना।
अपने सम मुझे बनाना, मेरी यही विनंती सुनना।।
भावना भाई जी।।५।।

मुनि विरक्तप्रभसागरजी म.

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर मरुधर मणि

श्री मणिप्रभसागरजी म. सा.

के 56 वें

वर्ष प्रवेश पर जन्म दिन की

हार्दिक शुभकामनाएँ
अभिवंदना....
अभिनंदना...

जन्म दिवस पर देते हैं,
गुरूवर हम तुमको बधाई,
जीवन का हर इक लम्हा,
हो तुमको सुखदायी।
हो शतं जीव, तुम चिरंजीव,
शुभ घड़ी आज आई,
धरती सुखदायी, अम्बर सुखदायी।
जल सुखदायी, पवन सुखदायी,
बधाई हो बधाई...

वंदनकर्ता

शा. जगदीशचंद केशरीमलजी बोथरा

कल्याणपुरा, शिवकर रोड
बाड़मेर- 344001 (राज.)

गुरु चरणों में समर्पण

श्रीमती शकुन्तला कांकरिया, धूले-मुंबई

गुरु स्मरण से ही जीवन बन जाता है।
तन मन की सरिता में एक झरणा बहता है।
अन्तर्मन मंदिर में एक दीप जल उठता है।
गुरुवर आप में तो मुझे 'दादा गुरुदेव' दिखते हैं।
गुरुवर आपके दर्शन से ही जीवन सहज सरल बन जाता है।
आपको पाकर जीवन धन्य हो जाता है।
गुरुवर आपकी आंखों में सागर की गहराई दिखती है।
रत्न त्रय की कांति आभा आंखों में चमकती रहती है।
जहाँ जहाँ कदम आपके पडते हैं।
हजारों कमल पुष्प वहाँ खिल जाते हैं।
टिम टिमाता दीपक भी स्थिर हो जाता है आपकी शरण पाकर।
गुरुवर आपके वचनों में प्रभु महावीर की मिठास लगती है।
आपकी कलाकृति के दर्शन से।
श्रद्धा भक्ति से नत मस्तक जन जन होता है।
मुझे तो आप स्वर्ग से उतरे विश्वकर्मा लगते हैं।
मेरे मन की कलुषिता मणि-प्रवर से मिट जावेगी।
संयम जीवन में आ जावे ऐसा मार्ग मुझे भी बता देवे।

पू. साध्वी गुरूवर्या श्री हेमप्रभाश्रीजी म. की प्रेरणा से निर्मित
श्री मुनिसुव्रतस्वामी मंदिर दादावाडी तीर्थ से सुशोभित
श्री जिनकुशल हेम विहारधाम

जोधपुर-जालोर मुख्य मार्ग पर, जोधपुर से 90 कि.मी., जालोर से 50 कि.मी.।
आवास भोजन की सुन्दर व्यवस्था। दर्शन, पूजा हेतु अवश्य पधारें।
निवेदक- शा. केवलचन्दजी छोगालालजी संकलेचा परिवार
संपर्क- 099784 02271, 099505 22754

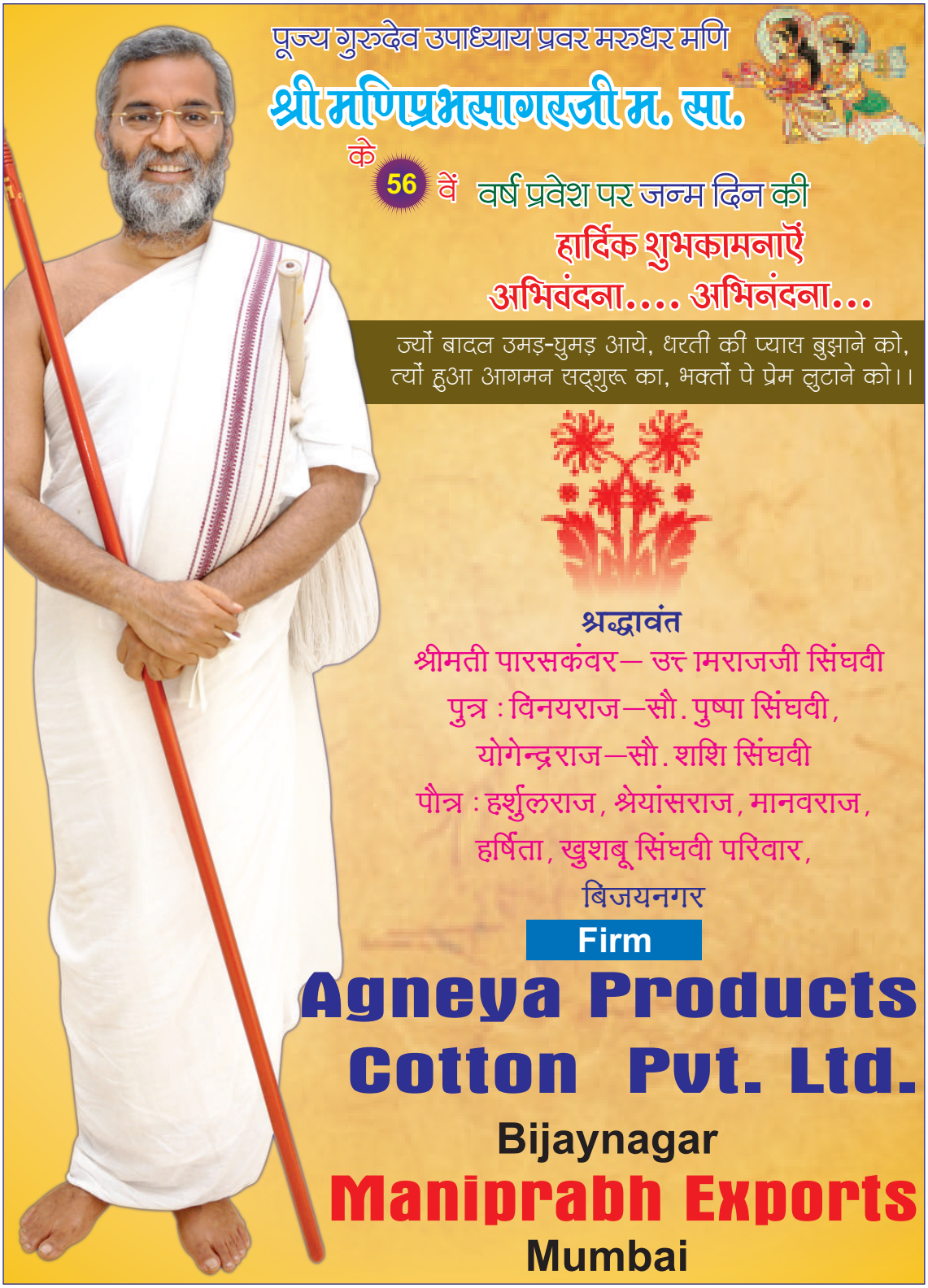

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर मरुधर मणि
श्री मणिप्रभसागरजी म. सा.
के
56 वें वर्ष प्रवेश पर जन्म दिन की
हार्दिक शुभकामनाऐं
अभिवंदना.... अभिनंदना...
ज्यों बादल उमड़-घुमड़ आये, धरती की प्यास बुझाने को,
त्यों हुआ आगमन सद्गुरू का, भक्तों पे प्रेम लुटाने को।।
श्रद्धावंत
श्रीमती पारसकंवर– उत्त मराजजी सिंघवी
पुत्र : विनयराज–सौ. पुष्पा सिंघवी,
योगेन्द्रराज–सौ. शशि सिंघवी
पौत्र : हर्शुलराज, श्रेयांसराज, मानवराज,
हर्षिता, खुशबू सिंघवी परिवार,
बिजयनगर
Firm
Agneya Products
Cotton Pvt. Ltd.
Bijaynagar
Maniprabh Exports
Mumbai

तत्त्वावबोध

16

चतुर्भंगी का चमत्कार

मुनि श्री मनितप्रभसागरजीम.

११८ अंधकार-प्रकाश

1. अंधेरे से प्रकाश में आया- **शालिभद्र**
2. अंधेरे से अंधेरे में आया- **कालसौकरिक कसाई**
3. प्रकाश से अंधेरे में आया- **ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती**
4. प्रकाश से प्रकाश में आया- **परमात्मा महावीर**

११९ उदार और कंजूस

1. जो न खाये, न खिलाये- **मक्खीचूस**
2. जो स्वयं खाये पर दूसरों को न खिलाये- **कंजूस**
3. स्वयं खाये, औरों को खिलाये- **दानी**
4. स्वयं न खाये, दूसरों को खिलाये- **उदार, त्यागी**

१२० आदि एवं अन्त

1. आदि में मधुर, अन्त में भी मधुर- **मैत्री**
2. आदि में मधुर, अन्त में कटु- **विषय भोग**
3. आदि में कटु, अन्त में मधुर- **परमार्थी मित्र**
4. आदि में कटु, अन्त में भी कटु- **द्वेष**
5. आदि-अन्त, दोनों मे कटु-**जहर**
6. आदि-अन्त, दोनों में मधुर-**स्वाध्याय**

१२१ जीव संख्या

1. जीव सदा घटते हैं- **अव्यवहार राशि के जीव**
2. जीव सदा बढ़ते हैं- **सिद्ध जीव**
3. जीव न घटते हैं, न बढ़ते हैं- **अभव्य जीव**
4. जीव घटते भी हैं, बढ़ते भी हैं- **चारों गति के जीव**

१२२ मिच्छामि दुक्कडम्

1. साधु से साधु का मिच्छामि दुक्कडम्- **कुरगडु मुनि तथा तपस्वी मुनि**
2. साधु से श्रावक का मिच्छामि दुक्कडम्- **महावीर स्वामी और चंडकौशिक सर्प**
3. श्रावक के श्रावक का मिच्छामि दुक्कडम्- **चंडप्रद्योत एवं उदायन राजा**
4. श्रावक से साधु का मिच्छामि दुक्कडम्- **आनंद श्रावक एवं गौतम स्वामी**

१२३ शुद्ध-अशुद्ध

1. शुद्ध साधु, शुद्ध दाता-**महावीर और चंदनबाला**
2. शुद्ध साधु, अशुद्ध दाता-**साधु और कपिला दासी**
3. अशुद्ध साधु, शुद्ध दाता-**मंगु आचार्य एवं श्रावक गण**
4. अशुद्ध साधु, अशुद्ध दाता-**गोशालक एवं उनके अनुयायी**

१२४ हृदय: वाणी

1. शुद्ध हृदय, मधुर वाणी- **गौतम स्वामी**
2. शुद्ध हृदय, कटु वाणी- **चंडरूद्राचार्य**
3. कलुषित हृदय, मधुर वाणी- **बालचंद्र मुनि**
4. कलुषित हृदय, कटु वाणी- **गोशालक**

१२५ ज्यादा-कम

1. कर्म बंधन ज्यादा, निर्जरा कम- **मिथ्यादृष्टि जीव**
2. कर्म बंधन कम, **निर्जरा ज्यादा- श्रमण/श्रावक/सम्यक्दृष्टि**
3. कर्म बंधन भी नहीं, निर्जरा भी नहीं- **सिद्ध भगवंत**
4. कर्म बंधन भी, कर्म निर्जरा भी- **सामान्य प्राणी**

ओ मेरे प्यारे गुरूदेव,
आप जिनशासन की शान हो
सरल स्वभावी, मृदुभाषी,
आप गच्छ की आन-बान हो
रोहिणी माता के दुलारे,
मोकलसर के सितारे हो
बहिन विमला के भैया प्यारे,
महावीर शासन के उजियारे हो।।

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर मरुधर मणि

श्री मणिप्रभसागरजी म. सा.

के 56 वें वर्ष प्रवेश पर
जन्म दिन की
हार्दिक शुभकामनाएँ
अभिवंदना.... अभिनंदना...

श्रद्धावंत

संघ माता इचरजदेवी चंपालालजी डोसी
संघवी शा. विजयराज-सौ. प्रेमलता
पुत्र : हंसराज, कुशलराज पौत्र : भाविक डोसी परिवार
खजवाणा निवासी, बैंगलोर

मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.

पंचांग

Mar. 2015

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
1 फाल्गुन सुदि 11	2 फाल्गुन सुदि 12	3 फाल्गुन सुदि 13	4 फाल्गुन सुदि 14	5 फाल्गुन सुदि 15	6 चैत्र वदि 1	7 चैत्र वदि 2
8 चैत्र वदि 3	9 चैत्र वदि 3	10 चैत्र वदि 4	11 चैत्र वदि 5	12 चैत्र वदि 6	13 चैत्र वदि 7	14 चैत्र वदि 8
15 चैत्र वदि 9	16 चैत्र वदि 10/11	17 चैत्र वदि 12	18 चैत्र वदि 13	19 चैत्र वदि 14	20 चैत्र वदि 30	21 चैत्र सुदि 1
22 चैत्र सुदि 2	23 चैत्र सुदि 3/4	24 चैत्र सुदि 5	25 चैत्र सुदि 6	26 चैत्र सुदि 7	27 चैत्र सुदि 8	28 चैत्र सुदि 9
29 चैत्र सुदि 10	30 चैत्र सुदि 11	31 चैत्र सुदि 11				

पर्व दिवस	
	03.03.2015 श्री सिद्धाचल छह गाउ यात्रा फाल्गुन फेरी
	04.03.2015 पू. गुरु. उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. का जन्म एवं चौमासी प्रतिक्रमण

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर मरुधर मणि **श्री मणिप्रभसागरजी म. सा.**

के 56 वें वर्ष प्रवेश पर जन्म दिन की

हार्दिक शुभकामनाएँ... अभिवंदना.... अभिनंदना...

शा. विजयराज, महेन्द्रकुमार
चन्द्रगुप्तराज, कुमारपाल, अंकित,
जिनेश, सिद्धर्थ, धनपाल कटारिया
बिलाड़ा निवासी हाल मैसूर

14.3.2015 प्रभु आदिनाथ जन्म व दीक्षा कल्याणक वर्षीतप प्रारंभ
17.3.2015 चतुर्थ दादा जिनचन्द्रसूरि जन्म तिथि, खेतसर
19.03.2015 पाक्षिक प्रतिक्रमण
21.03.2015 नूतन वर्ष प्रारंभ
25.03.2015 रोहिणी
27.03.2015 नवपद ओली प्रारंभ

मै. श्री एस. कप्युटर सेन्टर
धर्मेन्द्र बोहरा
98290 22408

विमल जैन, मीना जैन, नुपूर जैन,
धैर्या जैन, हर्ष जैन
जहाज मन्दिर माण्डवला

संघवी श्री विजय
द्वारा अ
1 जनवरी 2015

राजजी डोसी परिवार
आयोजित नूतन वर्ष महामांगलिक समारोह

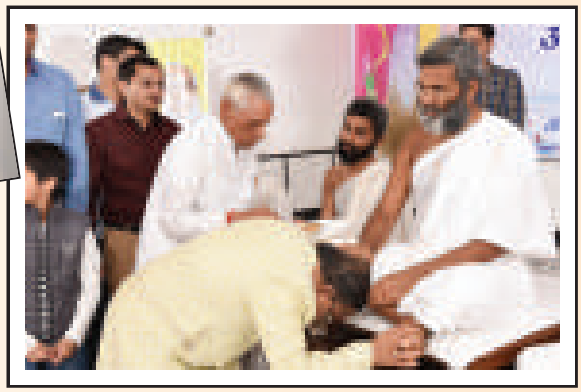

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर मरुधर मणि

श्री मणिप्रभसागरजी म. सा.

के 56 वें वर्ष प्रवेश पर जन्म दिन की

हार्दिक शुभकामनाएँ

अभिवंदना.... अभिनंदना...

ज्यों बादल उमड़-घुमड़ आये,
धरती की प्यास बुझाने को,
त्यों हुआ आगमन सद्गुरू का,
भक्तों पे प्रेम लुटाने को।।

वंदनकर्ता

पिताजी स्व. बंशीधरजी मातुश्री सुआदेवी
पुत्र रमेशकुमार, राजेन्द्रकुमार, वीरेन्द्रकुमार संकलेचा परिवार

बाड़मेर- तिरुपुर- ईरोड़-मुम्बई

बैंगलोर कार्यक्रम

4 जनवरी, 2015 रविवार को प.पू. उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा., पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा., पू. मुनि श्री समयप्रभसागरजी म.सा., पू. मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म.सा., पू. मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म.सा. के बैंगलोर मंगल प्रवेश पर पूज्य जनों के साथ तीन मुमुक्षुओं की भव्य शोभा यात्रा श्री विमलनाथ जैन श्वेताम्बर मंदिर एवं दादाबाड़ी के प्रांगण से प्रारंभ होकर नगर के हृदय स्थल बसवनगुड़ी के राजमार्गों से होती हुई श्री जिन कुशल सूरि आराधना भवन के प्रांगण में पहुँची। शोभायात्रा में बैंगलोर के 25 मंडलों ने भाग लिया। 1.5 किमी लंबे वरघोड़े में मुमुक्षुओं की बग्घियां, बैण्ड की सुरीली ध्वनियां तथा गुरूभक्तों के नृत्य ने बरबस ही राह चलते व्यक्तियों का ध्यान आकर्षित किया।

शोभायात्रा आराधना भवन में पहुंचकर धर्मसभा में परिवर्तित हो गयी, जहां गुरूदेव के मंगलाचरण के पश्चात् ट्रस्ट मंडल के अध्यक्ष श्री महेन्द्रजी रांका ने पधारे हुए मेहमानों का भाव भरा स्वागत किया। श्री जिन कुशल सूरि धार्मिक पाठशाला के बच्चों द्वारा 'चारित्र ही जीवन का सार है' नामक नृत्य नाटिका प्रस्तुत की गई, जिसने सभी का मन मोह लिया।

ट्रस्ट मंडल, श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ एवं श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ महिला परिषद् द्वारा मुमुक्षु सुश्री जया देवी सेठिया, सुश्री शिल्पा नाहर एवं श्री संयमकुमार सेठिया का तिलक, माला, श्रीफल एवं स्मृति-चिह्न के साथ भावभीना स्वागत किया गया। तीनों मुमुक्षुओं ने अपने उद्बोधन में संसार की नश्वरता एवं मनुष्य जन्म को कोहिनूर हीरे की तरह विशिष्ट बताया। जब बाल मुमुक्षु संयमकुमार ने उद्बोधन दिया तो उपस्थित जन समुदाय की आँखें भर आईं। 12 वर्ष उम्र में चारित्र ग्रहण कर अपने जीवन को सार्थक कर रहे संयमकुमार ने छोटी उम्र में उपधान तप की आराधना की है; तथा कई ग्रन्थों का अभ्यास किया है।

पू. विरक्तप्रभ सागरजी म.सा. ने कहा- चारित्र से ही जीवन की सार्थकता है। संयम के बिना जीवन का कल्याण नहीं हो सकता।

पू. उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. ने कहा- संयम ग्रहण की सही उम्र 8 से 15 वर्ष है। शासन में आज तक जितने भी बड़े शासन प्रभावक आचार्य हुए हैं, उन्होंने छोटी उम्र में ही दीक्षा ली थी। दादा गुरुदेव जिनदत्तसूरि, मणिधारी दादा श्री जिनचन्द्रसूरि, श्री हेमचन्द्राचार्य आदि कितने ही आचार्यों के नाम लिये जा सकते हैं।

कार्यक्रम के दौरान श्री राजेन्द्र जी (स्थानीय प्रबंधक, राजस्थान पत्रिका) एवं श्री देवेन्द्र जी (स्थानीय प्रबंधक, दक्षिण भारत राष्ट्र मत) का ट्रस्ट मंडल के पदाधिकारियों द्वारा स्वागत किया गया। आराधना भवन की तीनों मंजिलें भक्तों से खचाखच भरी थीं। कार्यक्रम पश्चात् सकल श्री संघ का स्वामी वात्सल्य रखा गया।

कार्यक्रम का सफल संचालन श्री अरविन्द कोठारी ने किया।

पूज्यश्री का बैंगलोर प्रवास

परम पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा., पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा., पूज्य मुनि श्री समयप्रभसागरजी म.सा., पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म.सा. एवं पूज्य मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म.सा. बल्लारी

श्री दादा गुरुदेवाय नमः श्री पार्श्वमणि पार्श्वनाथाय नमः प. श्री कान्तिसागरसूरिभ्यो नमः

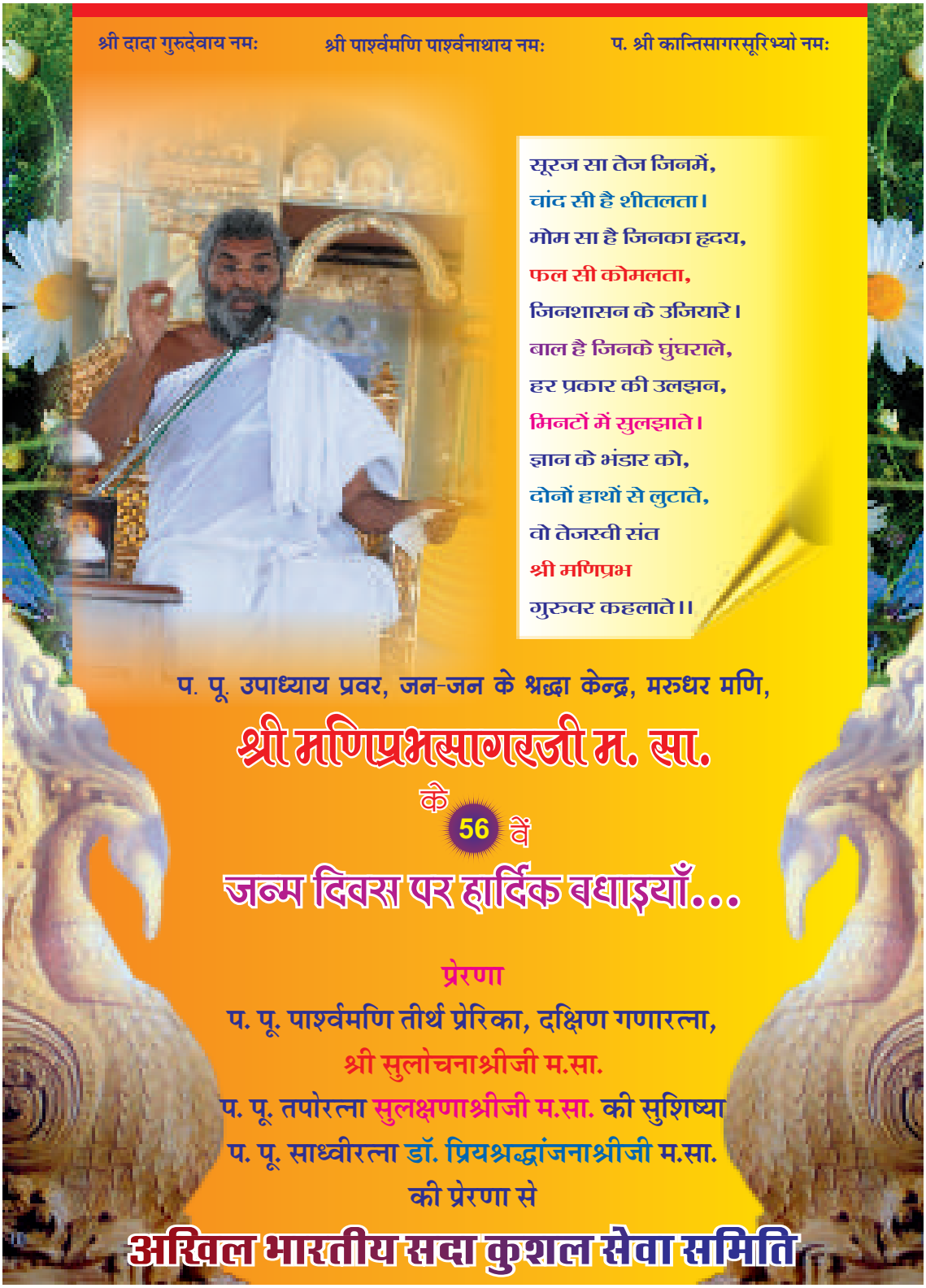

सूरज सा तेज जिनमें,
चांद सी है शीतलता।
मोम सा है जिनका हृदय,
फल सी कोमलता,
जिनशासन के उजियारे।
बाल है जिनके घुंघराले,
हर प्रकार की उलझन,
मिनटों में सुलझाते।
ज्ञान के भंडार को,
दोनों हाथों से लुटाते,
वो तेजस्वी संत
श्री मणिप्रभ
गुरुवर कहलाते।।

प. पू. उपाध्याय प्रवर, जन-जन के श्रद्धा केन्द्र, मरुधर मणि,

श्री मणिप्रभसागरजी म. सा.

के 56 वें

जन्म दिवस पर हार्दिक बधाइयाँ...

प्रेरणा

प. पू. पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका, दक्षिण गणारत्ना,
श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा.
प. पू. तपोरत्ना सुलक्षणाश्रीजी म.सा. की सुशिष्या
प. पू. साध्वीरत्ना डॉ. प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म.सा.
की प्रेरणा से

अखिल भारतीय सदा कुशल सेवा समिति

नगर में भागवती दीक्षा करवाकर चल्लकेरे, हिरियूर आदि क्षेत्रों की संस्पर्शना करते हुए 1 जनवरी, 2015 को बैंगलोर नगर में नगर प्रविष्ठ हुए।

बिजयनगर में आंग्ल नववर्ष की महामांगलिक के महोत्सव का ऐतिहासिक आयोजन परम गुरुभक्त संघवी श्री विजयराजजी, हंसराजजी, कुशलराज, भाविक डोसी परिवार द्वारा किया गया। 2 जनवरी को पूज्यश्री संघवी श्री विजयराजजी डोसी के गृहांगण में बिराजे। 3 जनवरी को पूज्यश्री बसवनगुडी स्थित संघवी श्री पारसमलजी प्रकाशचंदजी भंसाली के घर पधारे।

श्री प्रकाशचंदजी-सौ. सुशीलादेवी भ्राताद्वय मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. एवं मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. के धर्म माता-पिता हैं। उनके आग्रह पर उनके घर पगलिये किये गये। श्री भंसाली परिवार की ओर से सामैया किया गया। प्रवचन के पश्चात् गुरु पूजन किया गया। तत्पश्चात् सकल श्री संघ के स्वामी वात्सल्य का आयोजन किया गया।

इस अवसर प्रवचन में पूज्यश्री ने धर्म माता-पिता की व्याख्या करते हुए कर्त्तव्यों का विश्लेषण किया। पूज्यश्री ने दोनों बालमुनियों को भी अपने धर्म माता-पिता की भावनाओं के अनुरूप अध्ययन और साधना में दृढ़ रहने का निर्देश दिया।

4 जनवरी को पूज्यश्री बसवनगुडी जिनकुशलसूरि आराधना भवन में बिराजे। बैंगलोर श्री विमलनाथ मंदिर एवं दादाबाड़ी बसवनगुडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा के बाद चेन्नई चातुर्मास की संपन्नता के पश्चात् बैंगलोर होते हुए पूज्यश्री उत्तर की ओर पधारे थे। लगभग 10 वर्षों के बाद पूज्यश्री के बैंगलोर पधारने पर संघ में अपार हर्ष का वातावरण बन गया था।

4 जनवरी को ही दीक्षार्थी संयम कुमार सेठिया, माताजी जयादेवी सेठिया एवं शिल्पाकुमारी नाहर के वर्षीदान का वरघोड़ा आयोजित किया गया। दीक्षार्थियों का बहुमान किया गया। 5 जनवरी को पूज्यश्री बसवनगुडी बिराजे। 6 जनवरी को मागडी रोड बिराजना हुआ।

7 जनवरी को पूज्यश्री शांतिनगर पधारे, जहाँ 10 वर्ष पूर्व पूज्यश्री की पावन निश्रा में श्री राजेन्द्रकुमारजी तिलोकचंदजी बोथरा परिवार द्वारा स्वद्रव्य से निर्मित श्री शांतिनाथ जिन मंदिर दादावाडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा संपन्न हुई थी। शांतिनगर संघ की ओर से सामैया किया गया। श्री संघ के नाश्ते के बाद प्रवचन का आयोजन हुआ। वहाँ से शाम को पूज्यश्री का ईरोड की ओर विहार हुआ।

साहित्य प्रकाशन श्रुत संरक्षक

- शा. पन्नालालजी गौतमचंदजी रतनचंदजी पारसमचंदजी पुखराजजी धर्मचंदजी अशोककुमारजी कवाड़ परिवार, फलोदी-तिरुपात्तूर
- शा. हिन्दुमलजी मटकादेवी पुत्र पुखराज सुरेशकुमार भरतकुमार नरेशकुमार बेटा-पोता हमीरमलजी लूणिया, धोरिमन्ना-चेन्नई

साहित्य प्रकाशन श्रुत समाराधक

- मातुश्री धापुदेवी चंदनमलजी पुत्र खूबचंदजी की स्मृति में : शा. खुशीरामजी बोहरा हाला वाले, फालना-तिरुपुर
- श्री माणकचंदजी तिलोकचंदजी प्रवीणचंदजी पूनमचंदजी झाबक, फलोदी-कोयम्बतूर

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर मरुधर मणि

श्री मणिप्रभसागरजी म. सा.

के 56 वें वर्ष प्रवेश पर

जन्म दिन की

हार्दिक शुभकामनाएँ

अभिवंदना....अभिनंदना...

Ph. : 9364101494

श्रद्धावंत

लूणकरण बोथरा

प्रकाशचंद बोथरा

अशोककुमार बोथरा

JDE

Jai Durga Exports

27, A मीनाक्षी सुन्दरम स्ट्रीट, थिरूनगर कॉलोनी, ई रोड़- 638003 (TN)

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर मरुधर मणि

श्री मणिप्रभसागरजी म. सा.

के 56 वें वर्ष प्रवेश पर जन्म दिन की

हार्दिक शुभकामनाएँ

अभिवंदना.... अभिनंदना...

श्रद्धावंत

Ramesh Bohra- 9363053449

RAMESH KUMAR SURESH KUMAR

25 Kuranji Nagar, III rd Street, Shariff Colony

TIRUPPUR- 641604

Delhi- Jaipur

सेलम में पूज्यश्री का पदार्पण

विहार करते हुए 16 जनवरी को पूज्य उपाध्यायश्री सेलम नगर पधारे। परम गुरुभक्त पादरू निवासी श्री पुखराजजी सुमेरमलजी तातेड़ के घर पूज्यश्री के सकल संघ के पगले करवाये गये। पूज्यश्री का मंगल प्रवचन हुआ। 55 रजत मुद्राओं से पूज्यश्री का गुरु पूजन किया गया। पूज्यश्री ने अपने प्रवचन में जीवन को सार्थक दिशा प्रदान करने की प्रेरणा दी। ज्ञातव्य है कि श्री पुखराजजी तातेड़ श्री जिनहरि विहार के कोषाध्यक्ष हैं, पादरू दादाबाड़ी ट्रस्ट के सहसचिव हैं, और अहमदाबाद की कई संस्थाओं से जुड़े हुए हैं। तातेड़ परिवार की ओर से संघ पूजन किया गया तथा नाश्ते का आयोजन किया गया। वहाँ से पूज्य श्री सेलम उपाश्रय पधारे। सेलम संघ की ओर से सामैया किया गया। प्रवचन का आयोजन हुआ।

श्री प्रदीपकुमारजी शरदकुमारजी पारख जेठिया परिवार की ओर से स्वद्रव्य से निर्मित

बैंगलोर मागडी रोड में दादाबाड़ी बनेगी

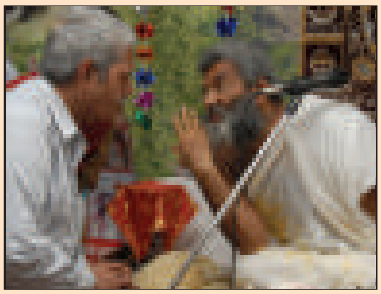

परम पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. श्री मागडी रोड जैन श्रीसंघ की भावभरी विनंती स्वीकार कर 6 जनवरी, 2015 को मागडी रोड पधारे। यहाँ श्री संघ द्वारा भव्य स्वागत किया गया। पूज्यश्री के सांसारिक मामाजी मोकलसर निवासी मातुश्री श्रीमती जड़ावीदेवी कपूरचंदजी पालरेचा परिवार की ओर से सकल श्री संघ के नाश्ते का आयोजन किया गया।

पूज्यश्री के सान्निध्य में संघ की कार्यकारिणी समिति की बैठक में मंदिर के पास वाले विशाल हॉल में दादाबाड़ी बनाने का निश्चय किया गया; जिसमें मध्य में विशाल छतरी में दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि, मणिधारी जिनचन्द्रसूरि एवं श्री जिनकुशलसूरि की प्रतिमा जी बिराजमान होंगी। साथ ही एक छतरी में आचार्य श्री राजेन्द्रसूरि एवं आचार्य श्री शांतिसूरि की प्रतिमा बिराजमान की जायेगी। साथ ही मंदिर जी में भगवान महावीर एवं श्री गौतमस्वामी की प्रतिमा की प्रतिष्ठा भी होगी।

इस निर्णय से सकल श्रीसंघ में अत्यन्त आनंद छा गया। उसी समय हाथोंहाथ बड़ी राशि भी एकत्र हो गई। दादाबाड़ी की मूल छतरी का लाभ श्री पालरेचा परिवार ने लिया। पूज्यश्री के प्रवचन के पश्चात् पालरेचा परिवार के घर पर पगले किये गये। यह जानकारी मागडी रोड सुमतिनाथ जैन श्वेताम्बर मंदिर के अध्यक्ष श्री प्रतापजी मेहता, खिमेल वालों ने दी।

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर मरुधर मणि

श्री मणिप्रभसागरजी म. सा.

के 56 वें वर्ष प्रवेश पर जन्म दिन की

हार्दिक शुभकामनाएँ

अभिवंदना.... अभिनंदना...

विनीत

श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ

25-ए, पहला माला, अशोक नगर

भिवण्डी जिला ठाणे (महाराष्ट्र)

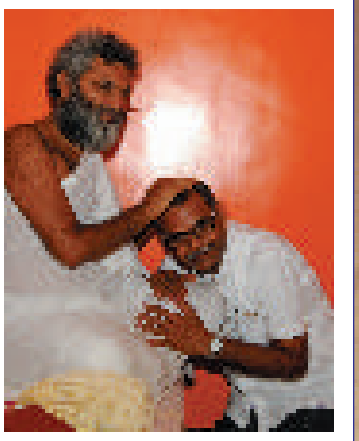

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर मरुधर मणि

श्री मणिप्रभसागरजी म. सा.

के 56 वें वर्ष प्रवेश पर जन्म दिन की

हार्दिक शुभकामनाएँ... अभिवंदना.... अभिनंदना...

ओ मेरे प्यारे गुरूदेव, आप जिनशासन की शान हो
सरल स्वभावी, मृदुभाषी, आप गच्छ की आन-बान हो
रोहिणी माता के दुलारे, मोकलसर के सितारे हो
बहिन विमला के भैया प्यारे, महावीर शासन के उजियारे हो।।

वंदनकर्ता

पूनमाराम पुत्र मुकेशकुमार-सौ. तुलसीदेवी,

पौत्र भरतकुमार-सौ. जेठीदेवी, दिनेशकुमार, राकेशकुमार प्रजापत

गांव गोडा जिला बाड़मेर (राज.)

ईरोड में अंजनशलाका प्रतिष्ठा संपन्न

ईरोड नगर में पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरूष आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा., पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म.सा. एवं पूजनीया छत्तीसगढ़ रत्ना महत्तरा साध्वी श्री मनोहरश्रीजी म.सा. की शिष्या पू. साध्वी श्री तरूणप्रभाश्रीजी म., श्री मधुस्मिताश्रीजी म. तथा पूजनीया महत्तरा श्री चंपाश्रीजी म.सा. श्री जितेन्द्रश्रीजी म.सा. की शिष्या पू. साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. की शिष्या पू. साध्वी श्री मयूरप्रियाश्रीजी म., श्री तत्वज्ञलताश्रीजी म., श्री संयमलताश्रीजी म. आदि साधु-साध्वी मंडल की पावन निश्रा में श्रीमती विमलादेवी जवाहरलालजी पारख परिवार के श्री प्रदीपकुमारजी शरदकुमारजी पारख जेठिया परिवार की ओर से स्वद्रव्य से नवनिर्मित श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिन मंदिर दादाबाड़ी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा अत्यन्त आनंद व उल्लास के साथ संपन्न हुई।

इस मंदिर में मूलनायक श्री मुनिसुव्रतस्वामी भगवान, श्री गौतमस्वामी, दादा श्री जिनकुशलसूरि, नाकोड़ा भैरव एवं माँ अंबिकादेवी की प्रतिमाएं बिराजमान की गईं।

इस मंदिर दादाबाड़ी का निर्माण शासनरत्न श्री मनोजकुमारजी बाबूमलजी हरण की प्रेरणा से किया गया। 19 जनवरी को पूज्यवरों के प्रवेश के साथ जलयात्रा का भव्य वरघोड़ा निकाला गया। श्री वासुपूज्य मंदिर से प्रारंभ होकर यह शोभायात्रा शहर के मुख्य मार्गों से होती हुई महोत्सव स्थल पर पहुँची। ऐसी विशाल शोभायात्रा ईरोड में पहली बार आयोजित हुई। जनसमूह के साथ-साथ जो उल्लास छलक रहा था, वह अनूठा था। 20 जनवरी को कल्याणक विधान व अंजन-विधान किया गया।

इस परिसर का नाम रखा गया 'श्री मुनिसुव्रत कुशल धाम!' नाम उद्घोषित करने का लाभ श्री प्रदीपकुमारजी संदीपकुमारजी पारख जेठिया परिवार ने लिया। ध्वजा व मूलनायक बिराजमान करने के अलावा बाकी के चढ़ावे बुलाये गये।

श्री पार्श्वमणि पार्श्वनाथय नमः
श्री सद्गुरूभ्यो नमः

आंध्रप्रदेश की धन्य वसुंधरा स्थित श्री पार्श्वमणि तीर्थ (पेद्दतुम्बलम्) मध्ये

दादा मेला

प्रकट प्रभावी, चौरासी गच्छ के सिरताज, चारित्र चूडामणि

तृतीय दादागुरूदेव श्री जिनकुशलसूरीश्वरजी म.सा.
की 682 वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष में दादागुरूदेव का महापूजन एवं
सामूहिक दादागुरूदेव का इकतीसा पाठ प्रसंगे

सकल संघ को भवभरा आमंत्रण

दिव्याशिष वर्षा
प. पू. आ. भ. श्री जिनकान्तिसागर सूरीश्वरजी म.सा.
प.पू.प्र प्रेम श्रीजी म.सा.,
प.पू. सेवाभावी तेजश्रीजी म.सा.

प्रत्यक्ष आशीर्वाद
प. पू. आ. श्री जिनकैलाशसागर सूरीश्वरजी म.सा.
प. पू. उपाध्याय भगवंत
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

तीर्थ प्रेरिका एवं प्रत्यक्षकृपा वर्षा
प. पू. पार्श्वमणितीर्थ प्रेरिका
सुलोचनाश्रीजी म.सा.
प. पू. तपोरत्ना
सुलक्षणाश्रीजी म.सा.

पावन निश्रा
प.पू. साध्वीरत्ना डॉ. प्रियश्रध्दांजनाश्रीजी म.सा.
प.पू. साध्वी प्रियश्रेष्ठांजनाश्रीजी म.सा.
प.पू. साध्वी प्रियशैलांजनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-3

महोत्सव दिवस
18. 2.2015 बुधवार (फाल्गुन वदि अमावस)
प्रातः 9.00 : बजे दादागुरू का पूजन, दोपहर 2.00 बजे : दादागुरू का सामूहिक इकतीसा पाठ

विशेषः 1500 स्कुल के बच्चों को मिठाई का वितरण

इकतीसा पाठ हेतु विशेष सोना, चॉदी की वस्तु द्वारा लक्की ड्रॉ निकाले जायेंगे

महोत्सव स्थल
श्री पार्श्वमणि जैन तीर्थ
पेद्दतुंबलम्, वाया आदोनी
जिला कर्नुल (आ. प्र.)
फोनः 0851 22574347

निवेदक
श्री पार्श्वमणि जैन तीर्थ ट्रस्ट मंडल की आज्ञा से
दादा गुरूदेव के भक्त द्वारा

इस अवसर पर पूरे भारत से विशिष्ट अतिथि गण पधारे। बैंगलोर से संघवी श्री तेजराजजी गुलेच्छा, संघवी श्री विजयराजजी डोसी, चैन्नई से अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य श्री लोढा, श्री शांतिलालजी गुलेच्छा, श्री मुकेशजी गोलेच्छा, श्री शांतिलालजी कांकरिया, तिरूवन्नामल्लै, श्री शंकरलालजी घीया, मुंबई, श्री जगदीशजी भंसाली, पाली, श्री पवनकुमारजी पारख, सूरत, श्री पदमचंदजी नाहटा, कोलकाता, श्री विवेक भंसाली, जोधपुर, छत्तीसगढ़, रायपुर, दुर्ग, धमतरी आदि शहरों से अनेक गणमान्य महानुभावों ने अपनी उपस्थिति प्रदान की।

प्रतिष्ठा लाभार्थी-

मुख्य ध्वजा- श्री जवाहरलालजी प्रदीपकुमारजी शरदकुमारजी पारख, जेठिया परिवार, लोहावट

मुनिसुव्रतस्वामी बिराजमान- श्री जवाहरलालजी प्रदीपकुमारजी शरदकुमारजी पारख, जेठिया परिवार, लोहावट

मुख्य कलश- श्री सुमेरमलजी नरेशजी राजेन्द्रजी कटारिया बालोतरा

गौतमस्वामी ध्वजा- श्री गौतमचंदजी शुभम्कुमारजी छाजेड, बाडमेर ईरोड

गौतमस्वामी कलश- श्री रामपालजी मधुसूदनजी शारडा, कोयम्बतूर

गौतमस्वामी बिराजमान- श्री शेखरचंदजी प्रशांतकुमारजी बोथरा, सेतरावा ईरोड

दादा जिनकुशलसूरि ध्वजा- श्री जवाहरलालजी संदीपकुमारजी रिषभ रिषी पारख लोहावट ईरोड

जिनकुशलसूरि कलश- प्रसन्नचंदजी पंकजकुमार बैद, फलोदी तिरूपातूर

जिनकुशलसूरि बिराजमान- श्री पुरूषोत्तमदासजी शंकरलालजी सेठिया बाडमेर ईरोड

श्री नाकोडा भैरव भराना- श्री शांतिलालजी अशोककुमारजी पुनीत बुरड बालोतरा

श्री नाकोडा भैरव बिराजमान- संघवी श्री विजयराजजी हंसराजजी कुशलराजजी डोसी खजवाणा बैंगलोर

अंबिका माता भराना- श्री जवरीलालजी दिनेशकुमारजी चौपडा बालोतरा

अंबिका माता बिराजमान- श्री पन्नालालजी गौतमचंदजी कवाड फलोदी तिरूपातूर

द्वारोद्घाटन- श्री जवाहरलालजी संदीपकुमारजी रिषभ रिषी पारख लोहावट ईरोड

।। श्री मनमोहन पार्श्वनाथाय नमः।।
।। दादा गुरूदेव श्री जिनदत्तसूरि गुरूभ्यो नमः।।

तिरुनेलवेली (त. ना.) नगरे

नवनिर्मित श्री मनमोहन पार्श्वनाथ ज्ञान ध्यान मंदिर
के उद्घाटन एवं
श्री नवपद पट्ट की स्थापना प्रसंगे

विशिष्ट आमंत्रण

आशीर्वाद - पूज्य गुरूदेव आचार्य श्री जिनकांतिसागरसूरिजी म.सा.

पावन निश्रा - पूज्य गुरूदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि ठाणा

कार्यक्रम

चैत्र वदि 2 शनिवार दि. 7.03.2015

श्री सिद्धचक्र महापूजन - मध्यान्ह 12.39 बजे

आयोजक एवं निमंत्रक

श्रीमती मोवनदेवी छगनलालजी भंसाली परिवार

शा. जयन्तिलाल विमलचंद सुरेशकुमार दिनेशकुमार

रुपेशकुमार बेटा-पोता शा. छगनलालजी

चुनाजी भंसाली (मालाणी) परिवार

गोल-तिरूनेलवेली-चैन्नई

संपर्क (ऑ) 0462-233368, मो. 98431 33681 (J) 94440 35622 (V)
98430 58185 (S) 97866 55544 (M)

स्थल : श्री मनमोहन पार्श्वनाथ ज्ञान ध्यान मंदिर ट्रस्ट

तमिलसंग स्ट्रीट, पो. तिरूनेलवेली - 627006

श्री विमलनाथ जिनकुशलसूरि दादाबाड़ी संघ की स्थापना

ईरोड नगर में 21 जनवरी, 2015 को पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की पावन प्रेरणा से दादा गुरुदेव के अनुयायियों के संगठन हेतु संघ की स्थापना की गई। नामकरण का निवेदन पूज्यश्री से किया गया। संघ नाम उद्घोषणा का लाभ श्री शंकरलालजी केसरीमलजी बोथरा परिवार ने लिया। पूज्यश्री ने संघ का नाम लिखकर प्रपत्र श्री बोथराजी को सौंपा। श्री बोथराजी ने नाम की घोषणा की। 'श्री विमलनाथ जिनकुशलसूरि दादाबाड़ी संघ' नाम रखा गया।

इस संघ की स्थापना व सदस्य बनाने, विधान बनाने, भूमि अवाप्त करने व अन्य योजनाओं को आगे बढ़ाने के लिये एक एडहॉक कमिटी बनाई गई, जिसमें सात सदस्य लिये गये। श्री रतनलालजी बोथरा, श्री मनोजजी वडेरा, श्री संदीपजी पारख जेठिया, श्री गौतमजी गोलेच्छा, श्री राजेन्द्रजी संखलेचा, श्री मोहनलालजी धारीवाल एवं श्री भरतकुमारजी डोसी को सम्मिलित किया गया। यह एडहॉक कमिटी विधान बनाना, सदस्य बनाना आदि कार्य करके शीघ्र ही संघ को व्यवस्थित रूप प्रदान करेगी।

पूज्यश्री ने कहा- शीघ्र से शीघ्र विशाल भूमि अवाप्त करके मंदिर, दादाबाड़ी एवं उपाश्रय आदि का कार्य करना है। भूमि प्राप्त करने के लिये भूमिदाता की योजना घोषित की गई।

श्री संदीपकुमारजी जवाहरलालजी पारख जेठिया परिवार ने मुख्य भूमिदाता का लाभ लिया। साथ ही रत्न भूमिदाता एवं स्वर्ण भूमिदाता में बडी संख्या में नाम आये।

चंपावाड़ी सिवाना के चुनाव संपन्न

श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ चंपावाड़ी ट्रस्ट, सिवाना के चुनाव 23 जनवरी, 2015 को वर्षगांठ के अवसर पर निर्विरोध संपन्न हुए। संघवी श्री वंसराजजी भंसाली पुनः अध्यक्ष पद पर चुने गये। उपाध्यक्ष पद पर श्री चंपालालजी भंसाली, श्री पुखराजजी चौपड़ा, कोषाध्यक्ष एवं श्री भूरचंदजी जीरावला, मंत्री चुने गये। श्री चुन्नीलालजी संखलेचा, श्री महेशकुमारजी नाहटा, संघवी श्री माणकचंदजी ललवानी, श्री चंदनमलजी धारीवाल, श्री डुंगरचंदजी चौपड़ा, श्री मोहनलालजी नाहटा, श्री महेन्द्रजी छाजेड़ ट्रस्टी चुने गये।

कार्य-समिति में संघवी श्री अशोककुमारजी भंसाली, श्री जवाहरलालजी ललवानी, श्री लालचंदजी रांका, श्री झणकारमलजी चौपड़ा, श्री सांकलचंदजी जीरावला, श्री पुखराजजी तातेड़, श्री राणमलजी छाजेड़, श्री नरेन्द्रकुमारजी संखलेचा, श्री जेठमलजी कवाड़ व श्री ललितकुमारजी छाजेड़ को लिया गया।

चैन्नई में एक और दीक्षा होगी

चैन्नई नगर में आगामी 2 मई, 2015 को वैराग्यवती कुमारी ममता बरडिया की भागवती दीक्षा पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. एवं पू. पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म. सुलक्षणाश्रीजी म. आदि की निश्रा में चूले में आयोजित होगी।

ईरोड प्रतिष्ठा के अवसर पर दीक्षार्थी बहिन व उनके परिवार की विनंती पर पूज्यश्री ने शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया। जेठिया परिवार द्वारा दीक्षार्थी बहिन का बहुमान किया गया।

यह ज्ञातव्य है कि कुमारी ममता की बडी बहिन पूजनीया साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. के पास दीक्षित हैं।

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर मरुधर मणि

श्री मणिप्रभसागरजी म. सा.

के 56 वें वर्ष प्रवेश पर जन्म दिन की

हार्दिक शुभकामनाएँ

अभिवंदना.... अभिनंदना...

जन्म दिवस पर देते हैं, गुरूवर हम तुमको बधाई,
जीवन का हर इक लम्हा, हो तुमको सुखदायी।
हो शतं जीव, तुम चिरंजीव, शुभ घड़ी आज आई,
धरती सुखदायी, अम्बर सुखदायी।
जल सुखदायी, पवन सुखदायी,
बधाई हो बधाई...

श्रद्धावंत

श्रीमती सुआदेवी शंकरलालजी सेठिया

सम्पतराज, धमण्डीराम, रतनलाल, पुरुषोत्तमदास

प्रवीण, पीयूष, कपिल, मनन, प्राची, पायल, साक्षी

बाड़मेर निवासी हाल तिरुपुर

पी. आर. एण्ड कं. – तिरुपुर

एम. आर. फेब्रिक्स – मुंबई

P. R. & Company

18 Pudhu thottam 1st Street,
Shariff Colony
TIRUPPUR- 641604,
Ph- 9443349738

तिरूपुर में दादावाडी की प्रतिष्ठा संपन्न

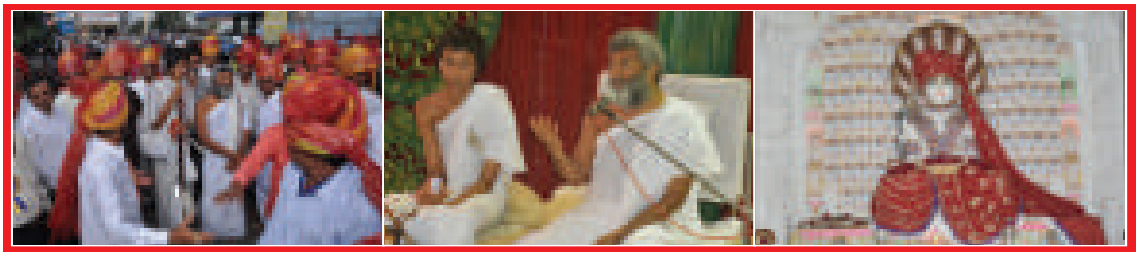

तमिलनाडु प्रान्त के तिरूपुर नगर में श्री पार्श्वनाथ परमात्मा के शिखरबद्ध मंदिर एवं दादावाडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म.सा. एवं पूजनीया छत्तीसगढ़ रत्ना महत्तरा साध्वी श्री मनोहरश्रीजी म.सा. की शिष्या पू. साध्वी श्री तरूणप्रभाश्रीजी म., श्री मधुस्मिताश्रीजी म. तथा पूजनीया महत्तरा श्री चंपाश्रीजी म.सा. श्री जितेन्द्रश्रीजी म.सा. की शिष्या पू. साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. की शिष्या पू. साध्वी श्री मयूरप्रियाश्रीजी म., श्री तत्वज्ञलताश्रीजी म., श्री संयमलताश्रीजी म. आदि साधु-साध्वी मंडल की पावन निश्रा में ता. 26 जनवरी 2015 को अत्यन्त आनंद व हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुई।

इस नगर में विहार करते हुए 15 वर्ष पूर्व पधारे पू. साध्वी श्री हेमप्रभाश्रीजी म.सा. ने इस नगर में दादावाडी बनाने की प्रेरणा दी। संघ का गठन हुआ। चार पांच वर्ष श्री मनोजकुमारजी हरण पधारे। और जिन मंदिर दादावाडी का भूमिपूजन, खात मुहूर्त्त व शिलान्यास संपन्न हुआ। संघ का यह दृढ निश्चय था कि इस मंदिर दादावाडी की प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव उपाध्यायश्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के करकमलों से ही संपन्न हो।

पूज्य गुरुदेवश्री का ज्योंहि दक्षिण प्रान्त में पधारना निश्चित हुआ। तो तिरूपुर संघ ने कार्य को गति प्रदान करते हुए इचलकरंजी चातुर्मास में प्रतिष्ठा की जय बोलाई।

महोत्सव का प्रारंभ 19 जनवरी को कुंभ स्थापना से हुआ। ता. 23 जनवरी को पूज्य गुरु भगवंतों का मंगल प्रवेश हुआ। ता. 25 जनवरी को भव्यातिभव्य शोभायात्रा का आयोजन श्री सुविधिनाथ मंदिर से किया गया। समस्त जैन समाज के अलावा तमिल समाज के लोगों का सहयोग पूर्ण रहा।

26 जनवरी को ओम् पुण्याहं पुण्याहं के दिव्य मंत्रोच्चारणों के साथ परमात्मा को गादीनशीन किया गया। मूल गंभारे में श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिमा बिराजमान की गई। बाहर कोली मंडप में श्री मुनिसुव्रतस्वामी एवं श्री आदिनाथ प्रभु को बिराजमान किया गया। परमात्मा के दायीं ओर बनी छत्री में प्रथम

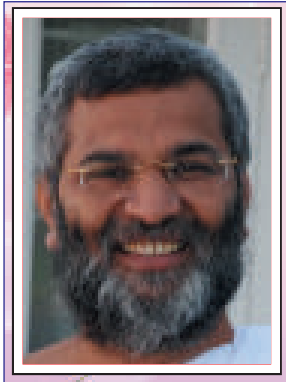

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर मरुधर मणि

श्री मणिप्रभसागरजी म. सा.

के 56 वें वर्ष प्रवेश पर जन्म दिन की

हार्दिक शुभकामनाएँ अभिवंदना....अभिनंदना...

श्रद्धावंत

शा. लालचंद- निर्मला, बालचंद-स्व. आशा

राजेन्द्रकुमार- सौ. मंजू, मनोज- शीतल, दिलीप-हिमानी, किशोर-मोनिका

कल्पेश, ललित, गौरव, दिशी, महक, साची चौरड़िया परिवार

पिचियाक वाले हाल कोयम्बतूर

फर्म

- **शंकर इलेक्ट्रिकल्स**
- **मणिभद्रा मार्केटिंग**
- **सायर इलेक्ट्रिकल्स**
- **मणिभद्रा मेटल्स**
- **मणिभद्रा इलेक्ट्रिकल्स**

कोयम्बतूर

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर मरुधर मणि

श्री मणिप्रभसागरजी म. सा.

के 56 वें वर्ष प्रवेश पर जन्म दिन की

हार्दिक शुभकामनाएँ

अभिवंदना.... अभिनंदना...

श्रद्धावंत

मातुश्री धापुदेवी पिताजी चन्दनमलजी भ्राता खूबचंदजी नेमीचंदजी की स्मृति में

शा. खुशीराम, गुणेन्द्र, महेन्द्र, राजकुमार पौत्र : जैनम, ऋषि, हर्ष, वीर बोहरा परिवार हाला वाले

Firm

Jain Garments

Kadarpet, Azad Street, Shop-13, Vela Tower, **TIRUPPUR-**641604 (T.N.)

Phone : 9843616671

गणधर अनंत लब्धिनिधान गुरु गौतम स्वामी को बिराजमान किया गया। जबकि बायीं ओर बनी छत्री में तीसरे दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरि की प्रतिमा प्रतिष्ठित की गई।

रंगमंडप में बने चार गोखलों में श्री नाकोडा भैरव, श्री भोमियाजी, श्री अंबिकादेवी एवं श्री पद्मावती देवी को बिराजमान किया गया।

शासन रत्न श्री मनोजकुमारजी हरण ने मार्गदर्शन के साथ साथ बोलियां बुलवाई। बोलियों का एक इतिहास बना।

ध्वजा चढाने हेतु सामूहिक वार्षिक योजना रखी गई। जिसमें 25 परिवारों ने लाभ लिया। उनके वर्ष लॉटरी के माध्यम से निश्चित किये गये। क्रमशः वे एक से पच्चीस वर्षों तक ध्वजा चढायेंगे। उसके बाद पुनः यही क्रम जारी रहेगा। इस वर्ष पहली ध्वजा चढाने का लाभ चौहटन निवासी श्री द्वारकादासजी भगवानदासजी डोसी परिवार को प्राप्त हुआ।

इस अवसर पर चेन्नई, ईरोड, तिरूपातूर, बैंगलोर, कोयम्बतूर, मुंबई, बाडमेर, चौहटन, मेट्टुपालयम आदि क्षेत्रों से बडी संख्या में अतिथि गण पधारे थे।

ता. 27 जनवरी को प्रातः मंगल मुहूर्त में द्वारोद्घाटन किया गया। दादा गुरुदेव की पूजा पढाने के साथ समारोह पूर्ण हुआ। इस समारोह को सफल बनाने में स्थानीय जैन समाज, चेन्नई से पधारे जैन युवा मंच, राहुल सिंघवी तमन्ना इवेण्ट आदि का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

मुख्य ध्वजा लाभार्थी- श्री मोहनलालजी द्वारकादासजी कन्हैयालालजी डोसी, चौहटन

मूलनायक बिराजमान- श्रीमती ढेली देवी केशरीमलजी बोथरा, बाडमेर

मुख्य स्वर्ण कलश- श्री शंकरलालजी केशरीमलजी बोथरा, बाडमेर

श्री मुनिसुव्रतस्वामी बिराजमान- अभिनंदन ट्रेडिंग कं., बाहुबली कॉर्पोरेशन, तिरपुर

श्री आदिनाथ बिराजमान- श्रीमती सुआदेवी शंकरलालजी सेठिया, बाडमेर

श्री गौतम स्वामी पर ध्वजा- श्री पारसमलजी मूलचंदजी छाजेड, बाडमेर

श्री गौतम स्वामी पर कलश- श्रीमती गजीदेवी स्व. हीरालालजी छाजेड, बाडमेर

श्री व्यापारीलालजी

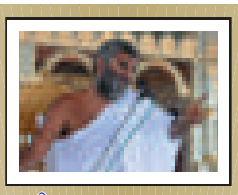

गोदावरीदेवी

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर मरुधर मणि

श्री मणिप्रभसागरजी म. सा.

के 56 वें वर्ष प्रवेश पर जन्म दिन की

हार्दिक शुभकामनाएँ...

अभिवंदना.... अभिनंदना...

अंजुदेवी-रतनलाल, कान्तादेवी-विनोदकुमार,
मंजुदेवी-गौतमकुमार, मीनादेवी-पारसमल,
कंचनदेवी-सुरेशकुमार (पुत्र-पुत्रवधु),
मौनादेवी-हितेशकुमार, रुपलदेवी-सुशीलकुमार
(पौत्र-पौत्रवधु), हिम्मतकुमार, विवेक,
वंदन, विपुल, रौनक (पौत्र),
भव्या, तनिषा (पौत्री),
कमलादेवी-सरदारमलजी चौपड़ा
(बहिन)

प्रतिष्ठान

रतनलाल गौतमकुमार बोहरा ब्रदर्स

403, 603, Safal Flora,
Godha caup Road, Shahibag,
Ahmedabad - 380004
(R) 079-22680300, 22680460
(M) 09327002606, 09924477723

श्रीमती गोदावरीदेवी व्यापारीलालजी बोहरा (हालावाला) परिवार
रतनलाल व्यापारीलालजी बोहरा
8, शाहीकुटीर, शाहीबाग, अहमदाबाद-380 004.
टेली. : (079) 22869300

श्री गौतम स्वामी बिराजमान- श्री पारसमलजी मूलचंदजी छाजेड, बाडमेर

श्री जिनकुशलसूरि पर ध्वजा- श्रीमती सुआदेवी बंशीधरजी संखलेचा, बाडमेर

श्री जिनकुशलसूरि पर कलश- श्री हस्तीमलजी अभिषेककुमारजी धारीवाल, बाडमेर

श्री जिनकुशलसूरि बिराजमान- श्री शंकरलालजी केशरीमलजी बोथरा, बाडमेर

श्री नाकोडा भैरव बिराजमान- नवकार एक्सपोर्ट, बालोतरा तिरूपुर

श्री भोमियादेव बिराजमान- श्रीमती मेवीदेवी भंवरलालजी बोथरा, बाडमेर

श्री पद्मावती देवी बिराजमान- जगदम्बा एक्सपोर्ट, बालाजी एक्सपोर्ट, तिरूपुर ईरोड

श्री अंबिका देवी बिराजमान- श्री पारसमलजी रमेशकुमारजी बोथरा बाडमेर

प्रासाद देवी बिराजमान- श्री कान्तिलालजी निर्मलकुमारजी लूणिया, तिरूपुर

द्वारोद्घाटन- श्री सम्पतराजजी कार्तिककुमारजी प्रणव सोलंकी, सियाणा

गुरु म. को कामली- श्री शंकरलालजी केशरीमलजी बोथरा, बाडमेर

गुरुपूजन- श्री सुआदेवी बंशीलालजी संखलेचा परिवार, बाडमेर

पूज्यश्री का कार्यक्रम

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. अपने शिष्य पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. के साथ बैंगलोर से विहार कर कृष्णगिरि, सेलम होते हुए ईरोड पधारे। वहाँ श्री प्रदीपजी जेठिया परिवार द्वारा नवनिर्मित श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिन मंदिर एवं दादावाडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा करवाकर तिरूपुर पधारे, वहाँ ता. 26 जनवरी को श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिन मंदिर दादावाडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा करवाकर कोयम्बतूर पधारे। वहाँ ता. 2 फरवरी को श्री विजयचंदजी सौ. पारसमणिदेवी पुत्र कुशलराजजी झाबक परिवार की ओर से स्वद्रव्य से निर्मित श्री स्तंभन पार्श्वनाथ मंदिर दादावाडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा संपन्न हुई। कोयम्बतूर से ता. 3 फरवरी को मुमुक्षु सुभाष भाई जैन परमार को दीक्षा प्रदान कर कन्याकुमारी की ओर विहार किया।

पूज्यश्री के धारापुरम, डिण्डिगल, मदुराई, तिरूनलवेली होते हुए 20 फरवरी तक कन्याकुमारी पधारने की संभावना है। वहाँ ता. 27 फरवरी को श्री महावीर स्वामी जिन मंदिर दादावाडी व गुरु मंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा होगी। वहाँ से पूज्यश्री 2 मार्च को विहार कर 6 मार्च को तिरूनलवेली पधारेंगे, वहाँ ता. 7 मार्च को श्रीमती मोवनदेवी छगनलालजी भंसाली परिवार की ओर से निर्मित ध्यान मंदिर का उद्घाटन होगा तथा श्री सिद्धचक्र पट्ट प्रतिष्ठा स्थापना होगी। वहाँ से विहार कर मदुराई, तिरूच्चिरापल्ली, टिण्डीवनम् होते हुए अप्रेल के प्रथम सप्ताह तक चेन्नई पधारेंगे, ऐसी संभावना है।

संपर्क सूत्र

पूज्य उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.

द्वारा कैलाश बी. संखलेचा

NAV NIDHI ENTERPRISES

384 MINT STREET, OFFICE# 29 2ND FLOOR

CHENNAI-600079 TN

KAILASH- 9444711097, MUKESH- 9626444966 TN. ÈK9784326130

कुसुमी में भुमिपूजन शिलान्यास सम्पन्न

कुसुमी (उड़ीसा) प.पू. कैवल्यधाम तीर्थ प्रेरिका शासन प्रभाविका आगमज्ञा प्रवर्तिनी महोदया गुरूवर्या श्री निपुणा श्रीजी म.सा. की अन्तेवासिनी प.पू. श्री राजेश श्री जी म.सा आदि ढाणा 6 की पावन निश्रा में दि. 15.1.2015 एवं 16.1.2015 को जिनालय एवं दादावाड़ी का भुमिपूजन एवं शिलान्यास बहुत ही आनन्द उल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ। जगदलपुर, जयपुर, कोटपाड़, धमतरी, गीदम, राजनांदगॉव, रायपुर, आदि अनेक स्थानों से श्रद्धालुओं ने लाभ लिया। इसी अवसर पर राजनांद गॉव निवासी मुमुक्षु प्रगति कोटड़िया का अभिनंदन किया गया। विधि विधान हेतु रायपुर से डॉ. धरमचंदजी रामपुरिया पधारे थे। भुमिदान का लाभ श्री भंवरलाल जी लूणकरण जी श्री श्रीमाल परिवार ने लिया। प्रे. सुनील श्री श्रीमाल

कुशल वाटिका वर्षगांठ में उमड़ा जनसमूह

कुशल वाटिका की द्वितीय वर्षगांठ व महापूजन सम्पन्न

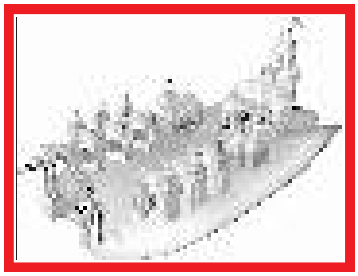

बाड़मेर 23 जनवरी। राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 15 पर स्थित प.पू. उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के आर्शीवाद व बहिन म.सा. डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की पावन प्रेरणा से बनी भारत विख्यात कुशल वाटिका परिसर में मुनिसुव्रत स्वामी जिन मन्दिर, दादाबाड़ी, नवग्रह मन्दिर, देव-देवी मन्दिर, गुरू मन्दिर आदि की प्रतिष्ठा की द्वितीय वर्षगांठ प.पू. साध्वी श्री सौम्यगुणाश्रीजी म.सा. की पावन निश्रा में हर्षोलास पूर्वक सम्पन्न हुई।

प्रात: 10 बजे सत्रहभेदी पूजा का आयोजन विधिकारक अंकुर भाई, सूरत वालों व उदय गुरू के द्वारा करवाया गया। उसके बाद मुख्य द्वार से सभी नौ मन्दिरों के लाभार्थी परिवार नूतन ध्वजाओं को सिर पर धारण कर बैण्ड-बाजों के साथ पूज्या साध्वी जी की निश्रा में नाचते-गाते मुख्य मन्दिर पहुँचे, जहाँ पूज्या श्री द्वारा ध्वजाओं को अभिमंत्रित कर वासक्षेप देकर तीन प्रदक्षिणा के साथ 'ॐ पुण्याहम्-पुण्याहम्, ॐ प्रियंताम्-प्रियंताम्' के जयघोष के साथ शुभ मुहुर्त में प.पू. साध्वी सौम्यगुणाश्रीजी म.सा. के मुखारबिंद से मंत्रोच्चार के साथ सभी नौ मन्दिरों पर वार्षिक कायमी ध्वजा चढ़ाई गयी।

द्वितीय वर्षगांठ के उपलक्ष्य में धर्मसभा का आयोजन हुआ, जिसमें पूज्या साध्वी श्री श्रमणीप्रज्ञाश्रीजी ने अपने प्रवचन में कुशल वाटिका का वर्णन करते हुए प. पू. उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागर जी म.सा. की वृहद सोच व बहिन म.सा. श्री विद्युत्प्रभा श्री जी की कल्पना की विस्तृत जानकारी देते हुए धर्म व शिक्षा के क्षेत्र में इसे विश्व का विशाल सेवा संकुल बताया। पूज्या साध्वी श्री सौम्यगुणाश्रीजी म.सा. ने धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि हम भाग्यशाली हैं कि हमें कुशल वाटिका जैसी अनमोल वाटिका बाड़मेर में मिली है, जिसमें विशाल जिन मन्दिर, दादाबाड़ी, भोजनशाला, उपाश्रय, दो विद्यालय, हॉस्टल सहित सारी सुविधाएं एक ही परिसर में हैं।

धर्मसभा में मुनिसुव्रत स्वामी भगवान का महापूजन विधिकारकों द्वारा मंत्रोच्चार पूर्वक सम्पन्न करवाया गया। आज के स्वामी वात्सल्य का लाभ भंवरलाल विरधीचन्द छाजेड़ परिवार, हरसाणी वालों ने; नाश्ते का लाभ मेवाराम रूगामल घीया परिवार, भीयाड ने; पूजा का लाभ बाबूलाल टीलचन्द बोथरा परिवार ने एवं जय जिनेन्द्र का लाभ गोदावरी देवी व्यापारीलाल बोहरा, हालावाला परिवार ने लिया। ट्रस्ट मण्डल की ओर से सभी लाभार्थियों का अभिनन्दन किया गया। धर्मसभा में वार्षिक

मुख्य मन्दिर पर ध्वजा चढ़ाते लाभार्थी परिवार

साध्वी भगवन्त के साथ नौ मन्दिरों की ध्वजा ले जाते हुए लाभार्थी परिवार

कुशल वाटिका द्वितीय वर्षगांठ पर उमड़ा जनसमूह

With best compliment sfrom :

गुरू आज्ञ में निश दिन रहिये,
जो गुरू चाहे सोयि सोयि करिये,
गुरू चरणरज मस्तक दीजे,
निज मन बुद्धि शुद्ध कर लीजे,
आँखिन ज्ञान सुअजन दीजे,
परत सत्य का दर्शन करिये,
गुरू आज्ञा में निश दिन रहिये।।

संघवी अशोक एम. भंसाली

M.A.ENTERPRISES

Mfrs. of Stainless Steel Sheet (Patta-Patti)

FACT. & ADMINISTRATIVE OFFICE :
508, G.I.D.C. Industrial Estate,
Mehdabad Highway Road,
Phase IV, VATVA,
AHMEDABAD - 382 445
Tel. : 91-79-25831384, 25831385
Fax : 91-79-25832261
Email : maenterprisesadi@gmail.com
enquiry@ma-enterprises.com
Website : www.ma-enterprises.com

चढ़ावे बोले गये व कुशल वाटिका वर्षगांठ कार्यक्रम में सेवा देने वाले सभी जैन मण्डलों व कार्यकर्ताओं का आभार प्रकट किया गया।

इस द्वितीय वर्षगांठ व धर्मसभा में नगर परिषद के सभापति श्री लूणकरण बोथरा, नाकोड़ा ट्रस्ट अध्यक्ष श्री अमृतलाल जैन, कुशल वाटिका ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री भंवरलाल छाजेड, महामंत्री श्री मांगीलाल मालू, कोषाध्यक्ष श्री बाबूलाल टी. बोथरा, उपाध्यक्ष श्री द्वारकादास डोसी, मंत्री श्री सम्पतराज बोथरा, प्रचारमंत्री श्री केवलचन्द छाजेड, ट्रस्टी श्री रतनलाल संखलेचा, श्री सम्पतराज बोथरा, श्री चम्पालाल छाजेड़, श्री सम्पतराज धारीवाल, श्री भंवरलाल सेठिया, श्री सम्पतराज मेहता, श्री बंशीधर बोथरा, श्री बाबूलाल लूणिया, श्री कैलाश कोटडिया, श्री रिखबदास मालू, श्री बाबूलाल संखलेचा, श्री छगनलाल घीया, श्री गौतमचन्द हालावाला, श्री बाबूलाल मालू, श्री उदयराज गांधी सहित मुम्बई, सूरत, अहमदाबाद, मालेगांव, पाली, जोधपुर, बालोतरा, जिजनियाली, विशाला, देवडा, रामसर, चौहटन, धोरीमन्ना आदि आसपास के क्षेत्रों से सैकड़ों भक्तों ने अपनी उपस्थिति प्रदान की। – केवलचन्द छाजेड़, प्रचारमंत्री, कुशल वाटिका

भूल सुधार

प्रथम दादा गुरुदेव युग प्रधान आचार्य श्री जिनदत्तसूरीश्वरजी म.सा. की पुण्यतिथि द्वितीय आषाढ़ सुदि 11 सोमवार ता. 27 जुलाई 2015 को मनाई जायेगी।

जहाज मंदिर मांडवला द्वारा प्रकाशित दीपावली पंचांग में भूल से प्रथम आषाढ़ सुदि 11 ता. 28.6.2015 छपा है।

पुण्यतिथि 27 जुलाई 2015 को मनाई जायेगी।

महत्तरा श्री विनीताश्रीजी म.सा.

आपश्री का जन्म पादरा (गुजरात) में श्री रतिलालजी की धर्मपत्नी श्रीमती चम्पाबेन की रत्न कुक्षी से वैशाख वदी 4 वि.सं. 1983 को हुआ। आपका जन्म नाम विद्याकुमारी रखा गया। वि.सं. 1996 में प.पू. विचक्षणश्रीजी म.सा. का चातुर्मास पादरा में हुआ, उस समय गुरूवर्या श्रीजी की अनुपम साधना, मधुर वाणी, अद्‌भुत गुणों एवं वैराग्यमयी प्रवचनों ने आपके हृदय को परिवर्तित कर दिया एवं मन ही मन दीक्षा लेने का निर्णय कर लिया। माता-पिता की आज्ञा मिलने पर 13 वर्ष की अल्प आयु मे फाल्गुन वदी 2 वि.सं. 1996 को आबु पर्वत की तलेटी में स्थित अनादरा गांव में विराज रहे प.पू. योगीराज श्री विजयशांतिसूरीश्वरजी म.सा. के पावन कर कमलों से दीक्षा ग्रहण की। प.पू. श्री विचक्षणश्रीजी म.सा. की सुशिष्या बनी। आपका नाम प.पू. श्री विनीताश्रीजी रखा गया। आपकी बड़ी दीक्षा वि.सं. 1997 माह शुक्ला 14 को प.पू. आचार्य श्री जिन हरिसागरसूरीश्वरजी म. सा. के पावन कर कमलों से फलोदी नगर में सम्पन्न हुई। आपने संयम जीवन में कई तप किये। अट्ठाई तप, बीस स्थानक तप, नवपद ओलीजी, वर्द्धमान तप ओलीजी, रत्न पावड़ी तप, 38 लब्धि तप आदि अनेक प्रकार के तप किये। आप करूणा के सागर है, धीर है, गम्भीर है, सरल है, शांत है एवं अनेक गुणों का भण्डार है। आपको वैशाख सुदी 6 वि.सं. 2063 को इन्दौर नगर में महत्तरापद से विभूषित किया गया। आपकी सेवा का लाभ प.पू. विमलयशाश्रीजी म सा. प.पू. पदमयशाश्रीजी म.सा. एवं प.पू. जिनाज्ञाश्रीजी म.सा. लेकर कर्म निर्जरा कर रहे हैं। ऐसी शासन ज्योति प.पू साध्वीश्रीजी के चरणों में शत्-शत् वंदन, नमन। – जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ, इन्दौर

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर मरुधर मणि के 56 वें वर्ष प्रवेश पर जन्म दिन की

श्री मणिप्रभसागरजी म. सा. हार्दिक शुभकामनाएँ... अभिवंदना.... अभिनंदना...

डॉ. यू. सी. जैन, अजय जैन, संजय जैन, ललित जैन, पार्थ जैन, उदयपुर

दादावाड़ी प्रतिष्ठा महोत्सव हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न

जैसलमेर के पास स्थित श्री लौद्रवपुर तीर्थ पर स्थित प्राचीन दादाबाड़ी की पुन: प्रतिष्ठा परम पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म. सा. के शिष्य प्रशिष्य पूज्य शांतमूर्ति मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. एवं पूज्य प्रवचनकार मुनि श्री मनीषप्रभसागर जी म.सा. की पावन निश्रा एवं पूज्या साध्वी श्री मनोरंजना श्री जी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में ता. 26 जनवरी 2015 को शुभ मुहूर्त में 'ॐ पुण्याहम्-पुण्याहम्, ॐ प्रियंताम्-प्रियंताम्' के साथ संपन्न हुई। दादा गुरूदेवों की प्रतिमा व गुरूमूर्ति के साथ काला भैरव, गोरा भैरव आदि बिम्बों की भव्यातिभव्य शुभ प्रतिष्ठा विधि विधान से पूज्य मुनि श्री व साध्वी मण्डल ने सम्पन्न करवाई। नूतन ध्वज-दण्ड स्थापित कर नई ध्वजा फहराई गई। दोपहर में दादा गुरूदेव का महापूजन प्रतिष्ठा लाभार्थी परिवार द्वारा कराया गया। समारोह का सफल संचालन महेन्द्रभाई बापना ने किया।

इस दादावाडी का जीर्णोद्धार श्री जिनदत्तसूरि मंडल के तत्वावधान में फलोदी निवासी गोलेच्छा परिवार द्वारा करवाया गया।

इस अवसर पर आयोजित धर्मसभा में पूज्य मुनि श्री मनीषप्रभसागर जी म.सा. ने कहा कि संत्सग से मानव के जीवन में एक अनूठे अध्यात्मिक चिन्तन का संचरण होता है। धर्मस्थान एवं साधु सन्तों का सान्निध्य आधुनिक भौतिकवादी युग में आत्मसुख अनुभव करने का एक मात्र सच्चा स्थान है। व्यक्ति की पहचान उसके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से होती है।

पूज्या साध्वी श्री मनोरंजना श्रीजी ने कहा कि दादा गुरूदेव के दर्शन-स्मरण से व्यक्ति के दु:ख-दर्द दूर हो जाते हैं। साध्वी श्री शुभंकरा श्री जी म.सा. ने कहा कि अंरिहत परमात्मा से भी ज्यादा उपकार हम पर दादा गुरूदेव का है। गुरू की वाणी के कारण ही हम निगोद से बाहर निकल कर यहाँ आये हैं। अनीति का धन जीवन में बर्बादी लाता है, अत्यधिक भोग पागलपन लाता है; अत: सन्तोषी होकर जीना ही श्रेष्ठ है।

रविवार की रात्रि में भक्ति संध्या का आयोजन किया गया। जयकारों, नवकारों व महामंत्रों के मध्य चली इस भक्ति संध्या में छत्तीसगढ़ से आये अंकित लोढ़ा ने हृदय को छू लेने वाले भजन पेश किये।

भद्रावती तीर्थ में त्रयान्हिका महोत्सव

भद्रावती तीर्थ में 23 जनवरी को प.पू. माताजी म. श्री रतनमाला श्री जी म.सा., प.पू. शासनप्रभा श्री जी म.सा. आदि ठाणा 4 की पावन निश्रा में ध्वजारोहण का कार्यक्रम हर्षोल्लास से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर तीन दिन का कार्यक्रम रखा गया। प्रथम दिन अठारह अभिषेक किया गया व महालक्ष्मी बिराजमान किये गये। लक्ष्मी जी को बिराजमान करने का लाभ लिया शा. खजांची परिवार, गोंदिया ने। दूसरे दिन विजय मुहूर्त में बड़े धूमधाम से केशरिया पार्श्वनाथ, गौतमस्वामी व दादागुरूदेव के ध्वजारोहण का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इसका लाभ लिया मुथा परिवार एवं पारख परिवार ने। तीसरे दिन योगीराज श्री शांतिसूरि जी की 125वीं तिथि मनायी गयी। तीनों दिन स्वामीवात्सल्य रखा गया। इस अवसर पर नागपुर, चंद्रपुर, नांदेड़, धामण, बड़ौदा आदि स्थानों से श्रद्धालुओं का पदार्पण हुआ।

खरतरगच्छ संघ के चुनाव

श्री महावीर स्वामी जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, फीलखाना, हैदराबाद की नई कार्यकारिणी समिति का चुनाव 18 जनवरी, 2015 को श्री मोतीलाल जी ललवानी एवं वरिष्ठ सदस्य श्री चुन्नीलाल जी संकलेचा की अध्यक्षता में सर्वसम्मति से संपन्न हुआ। इसमें श्री बाबूलाल जी संकलेचा, अध्यक्ष; श्री रायचन्द जी छाजेड़, उपाध्यक्ष; श्री हस्तीमल जी हुण्डिया, मंत्री; श्री पारसमल जी मरड़िया, सहमंत्री; श्री प्रवीण कुमार जी संकलेचा, कोषाध्यक्ष चुना गया। समिति सदस्य के रूप में श्री मेघराज गुलेच्छा, श्री रमेश कुमार पारख, श्री दयालाल झाबक, श्री कांतिलाल छाजेड़, श्री मीठालाल बाफना, श्री ललित कुमार संकलेचा, श्री बाबूलाल ललवानी, श्री जसराज बाफना, श्री बाबूलाल छाजेड़ एवं श्री प्रशान्त श्रीश्रीमाल को चयनित किया गया। श्री मोतीलाल जी ललवानी एवं श्री चुन्नीलाल जी संकलेचा सलाहकार के रूप में अपनी सेवायें देते रहेंगे। संघ के चुनाव सर्वसम्मति से होने पर श्री मोतीलाल जी ललवानी ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए हर्ष व्यक्त किया।

(प्रेषक : ओम प्रकाश हुण्डिया, हैदराबाद)

पू. साध्वी श्री जयरेखाश्रीजी म. का स्वर्गवास

पूजनीया प्रवर्तिनी श्री जिनश्रीजी म.सा. की शिष्या पू. साध्वी श्री जयरेखाश्रीजी म.सा. का ता. 24 जनवरी 2015 को स्वर्गवास हो गया। उनका जन्म मुजपुर गुजरात में हुआ था। उन्होंने वि. सं. 2020 में वैशाख सुदि 13 को संयम ग्रहण किया था। उनकी बडी दीक्षा पू. आचार्य श्री जिनकवीन्द्रसागरसूरिजी म. के करकमलों से हुई थी। वृद्ध अवस्था एवं अस्वस्थता के कारण अमलनेर में आपका स्थिरवास था। अमलनेर संघ ने आपकी खूब अनुमोदनीय वैयावच्च की थी। जहाज मंदिर परिवार आपको हार्दिक श्रद्धांजली अर्पण करता है। एवं परमात्मा व दादा गुरुदेव से सद्गति की प्रार्थना करता है।

हार्दिक श्रद्धांजली

मूल जैसलमेर वर्तमान कोलकाता निवासी श्री महेन्द्रसिंहजी नाहटा का स्वर्गवास हो गया। वे श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ कोलकाता के मानद् सचिव थे। जिनेश्वर परमात्मा एवं दादा गुरुदेव के परम भक्त श्री नाहटाजी गच्छ व शासन के प्रति अत्यन्त समर्पित थे। उनके स्वर्गवास से गच्छ व संघ को अपूरणीय क्षति हुई है। जहाज मंदिर परिवार हार्दिक श्रद्धांजली अर्पण करता है।

सिणधरी निवासी श्री अशोककुमारजी मंडोवरा का स्वर्गवास हो गया। अत्यन्त सरल स्वभावी श्री मंडोवरा सिणधरी के आगेवान श्रावक श्री मिश्रीमलजी प्रधानसा के पुत्र थे। उनके स्वर्गवास से गच्छ व संघ को बहुत क्षति हुई है। जहाज मंदिर परिवार हार्दिक श्रद्धांजली अर्पण करता है।

गुलाबपुरा निवासी श्री गौतमचंदजी बाबेल का गत दिनों स्वर्गवास हो गया। वे पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के परम भक्त थे। उच्च शिक्षित श्री बाबेलसा. परम मिष्ट व सरल स्वभावी थे। जहाज मंदिर परिवार हार्दिक श्रद्धांजली अर्पण करता है।

चौहटन में उपधान माला संपन्न

पाण्डवों की तपो भूमि चोहटन में दिनांक 7/1/2015 को पू. मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागर जी म.सा. एवं पू. मुनिराज श्री मनीषप्रभसागरजी म.सा. की पावन निश्रा में एवं पूज्य साध्वी श्री कल्पलता श्री म.सा. आदि ठाणा व पूज्य साध्वी श्री मनोरंजना श्री जी म.सा. आदि ठाणा के पावन सानिध्य में उपधान तप की माला के साथ मुमुक्षुओं श्रीमती जयादेवी सेठिया, संयम कुमार सेठिया एवं सुश्री शिल्पा नाहर के बहुमान का भव्य वर्षीदान वरघोड़ा एव उपधान तप के तपस्वियों का भव्य शाही वरघोड़ा निकाला गया, जिसमें इन्द्र ध्वजा, भगवान का रथ, नृत्य करती हुई गैर, भव्य झांकियां एवं भारी भीड़ आर्कषण के केन्द्र थे। वरघोड़ा शान्तिनाथ मन्दिर से प्रारम्भ होकर गांव के मुख्य मार्गों से होता हुआ ग्राम पंचायत मैदान में धर्मसभा में परिवर्तित हुआ। धर्मसभा को मुनि श्री मनीष प्रभसागरजी म. एव साध्वी भगवंतों द्वारा सम्बोधित किया गया। मुमुक्षुओं ने अपने विचार व्यक्त किये।

दिनाक 8/1/2015 को मोक्ष माला का कार्यक्रम ग्राम पचायत चौहटन के मैदान में प्रात: 10 बजे प्रारम्भ हुआ जिसमें श्री कैलास जी भंसाली विधायक जोधपुर, श्री लूणकरण जी बोथरा, सभापति नगर परिषद बाड़मेर, श्री गौतमचन्द जी बोहरा (हालावाला) सूरत, श्री सम्पत जी बोथरा (अध्यक्ष) जैन श्री संघ बाड़मेर, श्री आसूलालजी धारीवाल, श्री मोहनलाल जी डोसी, उपधानपति श्री लूणकरण सेठीया श्री केसरीमल धारीवाल, श्री भूरचन्द जी भन्साली, श्री रिखबदास जी सेठीया, श्री रतनलाल जी मालू, श्री मोहनलाल जी सेठीया, श्री माणकमल जी छोजेड़, श्री चम्पालाल (मामा) धारीवाल, श्री बाबूलाल सेठीया, श्री पवनकुमार जी बोथरा श्री शंकरलाल जी वडेरा, श्री मांगीलाल डोसी, श्री वगतावरमल वडेरा, श्री मांगीलाल धारीवाल, श्री भवरलाल धारीवाल, श्री बन्शीधर धारीवाल, श्री सुखराम जी धारीवाल, श्री सम्पतराज माल, श्री गोतमचन्द (तेतराउ वाले) श्री मोहनलाल जी मालू, श्री शंकरलाल जी पारीख उपस्थित थे। माला महोत्सव 12-39 बजे प्रारम्भ कर 2.30 बजे सम्पूर्ण किया गया। प्रथम माला श्री मूलचन्द जी संखलेचा द्वारा अपनी बहिन देवी छाजेड़ को पहनाई गई। माल महोत्सव में श्रावक-श्राविकाओं की भारी भीड़ थी। अन्त में श्री कुशल कांति उपधान आराधना तप समिति के संयोजक बाबुलाल सेठिया ने इस महान् आराधना में सहयोग हेतु धन्यवाद ज्ञापित किया।

हिंगणघाट में मिलन एवं ध्वजारोहण

अत्यंत उल्लास एवं भव्यता के साथ श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ दादा एवं परम उपकारी दादा जिनकुशलसूरि दादावाड़ी हिंगणघाट का ध्वजारोहण कार्यक्रम प.पू. आगमज्योति प्रवर्तिनी श्री प्रमोद श्री जी म.सा. की सुशिष्या बहिन म. साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा की पावन निश्रा में सानंद सम्पन्न हुआ।

हिंगणघाट संघ के आग्रह भरे निवेदन को स्वीकार करते हुए प.पू. गुरूवर्या श्री 19 जनवरी को ही भद्रावती से विहार कर हिंगणघाट पधार गये थे। 20 जनवरी को स्थानक में श्रमण संघीया साध्वी श्री डॉ. विजया श्री जी म. का एवं प.पू. गुरूवर्या श्री बहिन म.सा. का सामूहिक प्रवचन हुआ।

21 जनवरी को बहिन म.सा. नागपुर से भद्रावती पधार रहे गणरत्ना प.पू. सुलोचना श्री जी म.सा. के दर्शनार्थ हिंगणघाट से जाम पधारे। लगभग चार वर्ष बाद आप दोनों का जाम नगर में मिलन हुआ। दोनों ग्रुप ने परस्पर मिलकर अत्यंत प्रसन्नता प्रकट की।

पूजनीया बहिन म. ने इस मधुर मिलन पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा- सांसारिक व्यक्तियों का मिलन सहज है पर हम पदयात्रियों का मिलना कठिनाई से ही हो पाता है। इस कठिनाई से मिले अवसर का हमें अवश्य लाभ उठाना चाहिए। परमात्मा महावीर के अनुयायी पंच महाव्रतधारी गुरू-भगवंतों का दर्शन हृदय को परम आनंद प्रदान करता है। दीक्षा प्राप्त की तबसे ही मुझे आपका अपार वात्सल्य प्राप्त हुआ है।

प. पू. सुलोचना श्री जी म.सा. भी अपनी शिष्या मंडली के साथ काफी दूर तक अगवानी करने पधारे थे।

22 जनवरी को जाम से विहार कर बहिन म.सा. पुनः हिंगणघाट पधार गये। अचानक ही उन्हें खुशखबरी मिली- पूजनीया साध्वी श्री नीलांजना श्री जी म. पधार रहे हैं। पूज्या साध्वी श्री नीलांजना श्री जी म. आदि ठाणा 4 इचलकरंजी चातुर्मास सम्पन्न करके लगभग साडे सात माह बाद पुनः गुरूवर्या श्री की सेवा में पधार रहे थे।

पू. बहिन म.सा. अचानक मिली उस सूचना से अंनदित हो गये। उन्हें अभी उनसे मिलन की आशा न थी। उनकी गणित थी कि वे भद्रावती होते हुए नागपुर तक ही मिल पायेंगे। परंतु गुरूवर्या श्री से मिलने की तीव्र उत्कंठा, दर्शन की झंखना लिये उन्होंने लम्बे-लम्बे विहार करते हुए समय से पूर्व ही यवतमाल से सीधे ही हिंगणघाट का रास्ता ले लिया।

विहार की व्यवस्था कर रहे रालेगॉव के श्रावकों को उन्होंने यही कहा था कि आप हमारे सीधे ही हिंगणघाट पहुॅचने की सूचना पू. गुरूवर्या श्री को बिल्कुल न दें। हम अचानक ही पहुॅचेंगे पर एकाध संकेत को ही बहिन म.सा. ने पकड़ लिया। वे व्याख्यान के पश्चात् अपनी शिष्याओं को लेने पधारे और मरोठी होस्पीटल के आसपास गुरू-शिष्याओं का मिलन हुआ। मिलन क्या था.. जैसे साक्षात् श्रद्धा और वात्सल्य का सागर ही उमड पड़ा था। इस प्रसंग पर भावाभिव्यक्ति देते हुए प.पू. गुरूवर्या श्री ने कहा- योग्य और विनम्र शिष्याओं का साथ गुरू के लिये आनंददायक होता है। आज मैं अपनी शिष्या मंडली के सहयोग से ही शासन एवं सामुदायिक कर्तव्यों का यत्किंचित् पालन कर पा रही हूँ। साध्वी डॉ. नीलांजना श्रीजी ने इचलकरंजी में पूज्य गुरूदेव उपाध्याय भगवंत की निश्रा में चातुर्मास के अंतर्गत संघ की आराधना आदि में अपनी क्षमताओं का जिस प्रकार उपयोग किया है, निश्चित ही वह आनंद दायक है।

पू. बहिन म.सा. ने कहा- नंदुरबार से लेकर आज हिंगणघाट तक के इस प्रवास को मिलन प्रवास नाम देना उचित रहेगा क्योंकि इससे पूर्व अहमदाबाद चातुर्मास सम्पन्न करके साध्वी डॉ. शासन प्रभा का आगमन हुआ था। उसके बाद जब विहार करते हुए मालेगॉव पहुॅचे थे तो उस समय जलगांव में अपना यशस्वी चातुर्मास सम्पन्न कर 'श्री कांति मणि विहार, नासिक' की ओर जाते हुए मालेगांव में साध्वी श्री विश्वज्योति श्री जी म. से भी मिलन हुआ था। मात्र मिलने के लिये ही विराग-विश्वज्योति जी उग्रविहार करते हुए मालेगांव पधारे थे।

24 जनवरी को सुबह से ही मंदिर में चहल-पहल प्रारंभ हो गयी थी। मंदिर को स्वच्छ करके सजाया गया था। वर्धमान जैन संयुक्त मंडल नागपुर एवं अ.सौ. राखी कोचर द्वारा अत्यंत भक्तिमय वातावरण में सतरह भेदी पूजा पढायी गयी। पूजन में जब ध्वजपूजा प्रारंभ हुई तो ध्वजा के लाभार्थी परिवार ने अत्यंत भक्ति पूर्वक नृत्यमय प्रदक्षिणा लगाते हुए

शिखर पर ध्वजारोहण किया। ध्वजा के लाभार्थी थे श्री कनकमलजी ताराचंदजी कोठारी। ध्वजारोहण के समय उपस्थित सारे श्रद्धालु आनंद विभोर होकर नृत्यमग्न हो गये थे।

मंदिर की ध्वजा के पश्चात् दादा जिनकुशल सूरि दादावाडी में श्री लालचंदजी हिरालालजी डागा परिवार द्वारा ध्वजारोहण कार्यक्रम हुआ। दादावाडी में बडी पूजा का लाभ भी आपने ही लिया।

ध्वजारोहण कार्यक्रम के उपलक्ष्य में प्रात: नाश्ते की व्यवस्था श्री मिश्रीमलजी सूर्यकुमारजी डागा की ओर से एवं दोपहर गौतम प्रसादी का लाभ श्री कनकमलजी पुखराजजी कोठारी द्वारा लिया गया।

संपूर्ण कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री दिनेश कुमारजी कोचर मेनेजिंग ट्रस्टी श्री जैन श्वेताम्बर पार्श्वनाथ मंदिर ट्रस्ट ने अपने साथियों के साथ पूरा परिश्रम किया। प्रेषक मुमुक्षु दीपिका के. पालरेचा

मागडी रोड बैंगलोर दादावाडी का शिलान्यास

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की पावन प्रेरणा से बैंगलोर मागडी रोड में दादावाडी निर्मित होने जा रही है। इसका भूमिपूजन खातमुहूर्त्त ता. 8 फरवरी 2015 व शिलान्यास ता. 9 फरवरी 2015 को संपन्न हुआ।

खात मुहूर्त्त का लाभ मोकलसर निवासी श्रीमती जडावीदेवी कपूरचंदजी पालरेचा परिवार ने तथा शिलान्यास का लाभ खिमेल निवासी श्री प्रतापचंदजी मेहता परिवार ने लिया। सकल संघ की उपस्थिति में दादा गुरुदेव के जय जयकार के बीच विधि विधान संपन्न किया गया।

पादरु जैन युवा संगठन हैदराबाद सेवा का अनूठा उदाहरण

पादरू जैन युवा संगठन, जो हैदराबाद में कार्यरत है। संगठन ने सबसे पहले हैदराबाद के विभिन्न क्षेत्रों में पानी की 10 शीतल जल प्याऊ बनवायी। फिर 3 मार्च 2013 से प्रतिदिन एक रुपये में भोजन वितरण योजना में प्रतिदिन 200 निर्धनों एवं असहायों को भोजन देते है। 28 अप्रेल 2013 में नि:शुल्क दंत जाँच शिविर और 6 दिसंबर 2014 को तीन दिवसीय कॅम्प में मारवाडी युवा मंच हैदराबाद के साथ मिलकर 108 विकलांगों को कृत्रिम हाथ एवं पैर लगाये गये। इसी क्रम में 31 दिसम्बर की रात को संगठन ने गरीबों में कम्बल वितरण कर अनुकंपा के कार्य किये गये।

-मुकेश जैन हैदराबाद

राजस्थान में बूचड़खानों की योजना निरस्त

अहिंसा विश्व भारती के संस्थापक आचार्य श्री लोकेश मुनि जी ने राजस्थान की मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे सिंधिया से भेंट कर गौरक्षा एवं संतरक्षा के विषय पर महत्वपूर्ण चर्चा की। आचार्य श्री द्वारा मुख्यमंत्री महोदया को बताया गया कि राजस्थान का स्वायत्त शासन विभाग प्रदेश के 26 नगरों में आधुनिक कत्लखानों के निर्माण एवं आधुनिकीकरण की योजना बना रहा है। इस विषय पर उन्होंने जैन समाज एवं अहिंसा प्रेमी संगठनों द्वारा आंदोलन करने की बात कही। अंततोगत्वा राजस्थान के स्वायत्त शासन विभाग द्वारा 21 जनवरी, 2015 को कत्लखानों के निर्माण एवं आधुनिकीकरण की यह निविदा निरस्त कर दी गई।

चैन्नाई में दिनांक 26 जनवरी को सिवांची जैन मंडल के सदस्य साधर्मिक भाईयों को वस्तु वितरण करते हुये।

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर मरुधर मणि श्री मणिप्रभसागरजी म. सा.
के 56 वें वर्ष प्रवेश पर जन्म दिन की हार्दिक शुभकामनाएँ अभिवंदना....अभिनंदना...
शा. मदनलाल दीपचंद कोठारी परिवार
ब्यावर राज., (मो.न. - 098295 12187)
शा. रामरतन नारायणदासजी
छाजेड परिवार, केशवणा-डोंबीवली

तेनमपट्ट में प्रतिष्ठा 12 मार्च को होगी

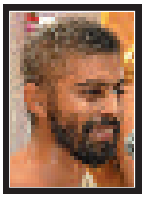

तेनमपट्ट नामक गांव में तीर्थ स्वरूप श्री पार्श्वनाथ जिन प्रतिमा की प्रतिष्ठा पूज्यपाद गुरुदेव आचार्य देव श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के शिष्य पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री समयप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. की पावन निश्रा में चैत्र वदि 6 गुरुवार ता. 12 मार्च 2015 को संपन्न होगी।

लगभग 2000 वर्ष प्राचीन परिकर सहित पार्श्वनाथ परमात्मा की दिव्य प्रतिमा तमिलनाडु प्रान्त के वेल्लूर जिले में तेनमपट्ट नामक गांव जो बैंगलोर-चेन्नई मुख्य मार्ग पर स्थित अम्बुर से 8 कि.मी. अन्दर है, में एक पेड के नीचे बने चबूतरे पर बिराजमान है। ज्ञात होने पर पिछले दश वर्षों से तिरूपातूर निवासी श्री गौतमचंदजी कवाड आदि प्रयत्न कर रहे थे कि यह अनमोल प्रतिमा जैन संघ को प्राप्त हो और जिन मंदिर में प्रतिष्ठित हो। गांव में चूंकि एक भी घर वर्तमान में जैन धर्मावलम्बी नहीं होने से वे लोग अपने हिसाब से सेवा पूजा करते थे। लेकिन उन लोगों में परमात्मा के प्रति श्रद्धा भरपूर है। वे इस प्रतिमा को चमत्कारी मानते हैं। उनका कहना है कि जब से हमारे गांव में परमात्मा प्रकट हुए हैं, तब से गांव की जाहोजलाली बढी है। हम जो भी मनौती मानते हैं, पूरी होती है। इस कारण प्रतिमा हम आपको अर्पण नहीं करेंगे। आपको यदि मंदिर बनाना है, तो यहीं बना दीजिये।

भगवान की सेवा पूजा कैसे की जाती है, वो हमको समझा दीजिये, हम उसी विधि से करेंगे। प्राय: गांव वालों ने मांसाहार का त्याग कर दिया है।

श्री पार्श्व कुशल तीर्थ धाम नामकरण करते हुए जिन मंदिर बनाने का निश्चय किया। जिसका भूमिपूजन, खातमुहूर्त्त पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. द्वारा प्रदत्त ता. 29 जनवरी 2015 को शुभ मुहूर्त्त में किया गया। उसी दिन विजय मुहूर्त्त में शिलान्यास की विधि संपन्न की गई। जीर्णोद्धार स्वरूप जिन मंदिर का निर्माण कार्य प्रारंभ किया गया। इस मंदिर के निर्माण आदि में संपूर्ण व्यय चार महानुभाव कर रहे हैं। पूजनीया महत्तरा श्री चंपाश्रीजी म. जितेन्द्रश्रीजी म. की शिष्या पू. साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. की शिष्या पू. साध्वी श्री मयूरप्रियाश्रीजी म. की प्रेरणा से एक गुरुभक्त परिवार, तिरूपातूर तथा तिरूपातूर निवासी श्री पन्नालालजी गौतमचंदजी कवाड, श्री ललितकुमारजी निहालचंदजी ललवानी, श्रीमती विमलाबाई विमलचंदजी मूथा अम्बुर निवासी लाभ ले रहे हैं।

इस मंदिर में परमात्मा पार्श्वनाथ प्रभु, दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरि एवं माता पद्मावती देवी की प्रतिमा प्रतिष्ठित की जायेगी।

नीमच नगरपालिका के अध्यक्ष श्री राकेश जैन चुने गये

नीमच नगर के भाजपा पक्ष के जिला कोषाध्यक्ष श्री राकेश उर्फ पप्पु जैन कोठीफोडा नीमच नगरपालिका के अध्यक्ष चुने गये। वे मध्य प्रदेश में सर्वाधिक वोटों से जीते। ये मूलत: पिपलीयारावजी गांव के हैं। दादा गुरुदेव के परम भक्त श्री जैन खरतरगच्छ परम्परा के अनुयायी है।

सन् 2004 से 2009 तक नगरपालिका में नेता प्रतिपक्ष की भूमिका निभा चुके हैं। जहाज मंदिर परिवार उन्हें विजय के लिये बधाई देता है और उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

साधु साध्वी समाचार

पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक मुनि श्री मनोज्ञसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री नयज्ञसागरजी म.सा. अहमदाबाद से विहार कर डीसा, पांथावाडा, भीनमाल होते हुए जहाज मंदिर मांडवला गुरु धाम पधारे। ता. 2 फरवरी को उनकी पावन निश्रा में जहाज मंदिर की वर्षगांठ मनाई गई। वहाँ से वे विहार कर ब्रह्मसर पधारेंगे। जहाँ आपकी पावन निश्रा में दादा गुरुदेव के भव्याभिव्य मेले का आयोजन होगा

पूज्य मुनि श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. मनीषप्रभसागरजी म. चौहटन उपधान की संपन्नता के पश्चात् विहार कर जैसलमेर, अमरसागर, ब्रह्मसर आदि तीर्थों की यात्रा करते हुए लौद्रवपुर पधारे, जहाँ उनकी निश्रा में 26 जनवरी को जीर्णोद्धार कृत दादावाडी की प्रतिष्ठा संपन्न हुई। तत्पश्चात् वहाँ से पोकरण होते हुए फलोदी की ओर विहार करेंगे। वहाँ उनकी निश्रा में 11 फरवरी को दादावाडी की प्रतिष्ठा संपन्न होगी।

पूज्य मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म. मेहुलप्रभसागरजी म. सा. सूरत बडौदा होते हुए खंभात पधारे। खरतरगच्छ के आराध्य देव श्री स्तंभन पार्श्वनाथ परमात्मा की यात्रा संपन्न की। वहाँ से विहार कर ता. 21 जनवरी को पालीताना पधार गये हैं। वहाँ व्याकरण, न्याय का अध्ययन प्रारंभ है। आगामी चातुर्मास पालीताना में होगा।

पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. समयप्रभसागरजी म. श्रेयांसप्रभसागरजी म. तिरूपातूर बिराज रहे हैं। वहाँ से विहार कर वे बैंगलोर पधारेंगे, जहाँ ता. 2 मार्च को शुभ मुहूर्त्त में उनकी पावन निश्रा में श्री विमलनाथ जिन मंदिर दादावाडी में एक देवकुलिका में दादा गुरूदेव श्री जिनकुशलसूरि की प्रतिष्ठा करवायेंगे। वहाँ से विहार कर अम्बूर तिन्नपट्टी पधारेंगे, जहाँ उनकी निश्रा में ता. 12 मार्च को प्रतिष्ठा संपन्न होगी। वहाँ से पूज्यश्री चेन्नई की ओर विहार करेंगे।

पूजनीया संघरत्ना साध्वी श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा जयपुर बिराज रहे हैं। उनकी पावन निश्रा में ता. 18 जनवरी को जवाहरनगर श्री महावीरस्वामी जिन मंदिर दादावाडी में शांतिसूरि आदि प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा संपन्न हुई है। उनका विहार संभवत: बीकानेर की ओर होगा।

पूजनीया पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा नागपुर से ता. 17 जनवरी को विहार कर भद्रावती, चन्द्रपुर, आसीफाबाद होते हुए ता. 14 फरवरी तक वारांगल पहुँचेंगे। वहाँ से विजयवाडा होते हुए चैत्री ओली तक चेन्नई पहुँचने की संभावना है।

पूजनीया मारवाड ज्योति साध्वी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा. पूर्णप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा हुबली से विहार कर गदग पधारे हैं। वहाँ से स्वास्थ्य की अनुकूलतानुसार विहार कर कोप्पल, हॉस्पेट होते हुए बल्लारी पधारेंगे।

पूजनीया महातपस्वी साध्वी श्री सुलक्षणाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा जयपुर बिराज रहे हैं। वहाँ मोतीडुंगरी रोड स्थित प्राचीन दादावाडी में 23 फरवरी को होने वाले दादा गुरुदेव की प्रतिष्ठा महोत्सव को अपनी सानिध्यता प्रदान करेंगे।

पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म.सा., पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. ठाणा भद्रावती पधारे। वहाँ से विहार कर हिंगनघाट पधारे हैं। जहाँ ता. 24 जनवरी को जिन मंदिर की वर्षगांठ पर

ध्वजारोहण के पश्चात् नागपुर की ओर विहार किया है। नागपुर में 4-5 दिन की स्थिरता के पश्चात् छत्तीसगढ की ओर विहार करेंगे।

पूजनीया धवल यशस्वी साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा बाहुबली आदि तीर्थों की यात्रा करते हुए मैसुर पधारे। वहाँ से 22 जनवरी को विहार कर चामराजनगर, सत्यमंगलम् होते हुए ता. 1 फरवरी तक कोयम्बतूर पधार गये हैं। वहाँ से मदुराई होते हुए कन्याकुमारी पधारेंगे।

पूजनीया साध्वी मनोरंजनाश्रीजी म. सा. श्री शुभंकराश्रीजी म.सा. आदि ठाणा ने प्रतिष्ठा के पश्चात् जैसलमेर से फलोदी की ओर विहार किया है। फलोदी में होने वाली प्रतिष्ठा में पधारेंगे।

पूजनीया साध्वी श्री तरूणप्रभाश्रीजी म. सुमित्राश्रीजी म.सा. ठाणा 4 कोयम्बतूर बिराज रहे हैं। पू. साध्वी श्री प्रियमित्राश्रीजी म. के पांव में तकलीफ है। वे यहाँ स्वास्थ्य लाभ हेतु बिराज रहे हैं।

पूजनीया साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा ने चौहटन से पाली की ओर विहार किया है। वे पाली में गौतम गुण विहार में ता. 2 फरवरी को आयोजित अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव में पधारेंगे।

पूजनीया साध्वी डॉ. श्री सौम्यगुणाश्रीजी म.सा. ठाणा 4 की निश्रा में बाडमेर कुशल वाटिका में दूसरी वर्षगांठ का भव्य आयोजन हुआ। वहाँ से नाकोडाजी की ओर विहार किया है। ता. 2 फरवरी को होने वाली समवशरण मंदिर के प्रतिष्ठा महोत्सव में अपनी सानिध्यता प्रदान करेंगे।

पूजनीया साध्वी श्री विरागज्योतिश्रीजी म.सा. विश्वज्योतिश्रीजी म.सा. ठाणा 3 सोलापुर से बिजापुर होते हुए ता. 28 जनवरी को चित्रदुर्गा पधारे। वहाँ से विहार कर हिरियुर होते हुए फरवरी के प्रारंभ में बैंगलोर पधारे। वहाँ से कन्याकुमारी की ओर विहार करेंगे।

पूजनीया साध्वी श्री प्रियस्मिताश्रीजी म.सा. ठाणा 7 बल्लारी से विहार कर कम्पली पधारे हैं। वहाँ से 31 जनवरी को विहार कर हॉस्पेट होते हुए कोट्टूर पधारेंगे।

साध्वी श्री हेमरत्नाश्रीजी म. आदि ठाणा 3 ने मैसुर से बैंगलोर की ओर विहार किया है। वहाँ उनकी पावन निश्रा में ता. 18 फरवरी 2015 को फाल्गुन वदि 30 के दिन दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरीश्वरजी म.सा. की पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में भव्य मेले का आयोजन होगा।

पूजनीया साध्वी श्री प्रियरंजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 3 धोलका बिराज रहे हैं। उनकी निश्रा में ता. 2 फरवरी को जिन मंदिर दादावाडी की वार्षिक ध्वजा चढाई गई। तत्पष्ठचात् विहार कर अहमदाबाद पधारे हैं।

पूजनीया डॉ. साध्वी श्री नीलांजना श्रीजी म.सा. आदि ठाणा 4 हुबली से विहार कर बीजापुर, सोलापुर, नांदेड, यवतमाल होते हुए ता. 22 जनवरी को हिंगनघाट पहुँचे। जहाँ अपनी गुरुवर्या बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. सा. के दर्शन किये।

पूजनीया साध्वी श्री प्रियश्रद्धांजना श्रीजी म.सा. ठाणा 3 पार्श्वमणि तीर्थ बिराज रहे हैं। उनकी पावन निश्रा में पार्श्वमणि तीर्थ पर दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरीश्वरजी म.सा. की

पुण्यतिथि पर मेले का आयोजन ता. 18 फरवरी को आयोजित होगा। होली तक पूज्याश्री यहीं पर बिराजेंगे।

पूजनीया साध्वी श्री श्रद्धांजनाश्रीजी म.सा. दीपमालाश्रीजी म. जोधपुर बाडमेर भवन में स्वास्थ्य लाभ हेतु बिराज रहे हैं।

पूजनीया साध्वी श्री मयूरप्रियाश्रीजी म. ठाणा 3 ने कोयम्बतूर प्रतिष्ठा के पश्चात् तिरूपात्तूर की ओर विहार किया है। अम्बूर के पास तिन्नपट्टी में 12 मार्च को होने वाली प्रतिष्ठा में अपनी सानिध्यता प्रदान करेंगे। वहाँ से तिरूपातूर पधारेंगे, जहाँ उनकी प्रेरणा से होने वाले सामूहिक वर्षीतप के प्रत्याख्यान 14 मार्च को करवायेंगे।

जहाज मंदिर वर्षगांठ संपन्न

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक जहाज मंदिर की 16वीं वर्षगांठ पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री के शिष्य पूज्य मुनिराज श्री मनोज्ञसागरजी म. पू. मुनि श्री नयज्ञसागरजी म. की पावन निश्रा में माघ सुदि 14 सोमवार ता. 2 फरवरी 2015 को मनाई गई। अठारह अभिषेक करवाये गये। सतरह भेदी पूजा पढाने के साथ शिखर पर ध्वजा चढाई गई। मुख्य ध्वजा के अमर लाभार्थी श्री पारसमलजी भानमलजी छाजेड परिवार की ओर से उनके परिवार ने ध्वजा चढाई। इस अवसर पर पूजनीया साध्वी श्री मुक्तिप्रियाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा का ट्रस्ट के आग्रह पर पदार्पण हुआ।

इस अवसर पर प्रवचन फरमाते हुए पूज्य मुनिश्री ने कहा– पूज्य गुरुदेव की स्मृति में बना यह जहाज मंदिर संसार सागर को तिरने का एक उपक्रम है। इस मंदिर का अनूठा स्थापत्य, पूर्ण रूप से स्वर्ण अभिमंडित परिकर सहित परमात्मा की अलौकिक दिव्य प्रतिमा एक शान्ति भरा सुकून देती है। और यहाँ जो कांच का काम हुआ है, ऐसा लगता है जैसे हम किसी अन्य लोक में आ गये हैं।

उन्होंने कहा– यह सब पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री की कृपा का ही फल है। मुझ पर पूज्य गुरुदेवश्री की पूर्ण कृपा थी। आज मैं जो कुछ भी हूँ, वह सब पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद का ही फल है।

ट्रस्ट की ओर से पूज्यश्री को कामली वहोराई गई। गुरुपूजन किया गया। अष्टप्रकारी पूजा के वार्षिक चढावे बोले गये।

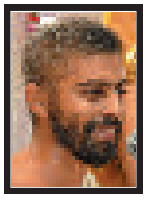

बैंगलोर में प्रतिष्ठा 2 मार्च को

बैंगलोर बसवनगुडी दादावाडी के मूल गर्भगृह में दायीं ओर बनी अभिनव देवकुलिका में दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरि की प्रतिमा की प्रतिष्ठा फाल्गुन सुदि 12 सोमवार ता. 2 मार्च को संपन्न होगी। यह प्रतिष्ठा पूज्यपाद गुरुदेव आचार्य देव श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के शिष्य पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री समयप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. की पावन निश्रा में संपन्न होगी।

इस प्रतिष्ठा के निमित्त त्रिदिवसीय पूजा का कार्यक्रम होगा। जिसके अन्तर्गत प्रथम दिन कुंभस्थापना, दीपस्थापना की जायेगी तथा पंचकल्याणक पूजा पढाई जायेगी। दूसरे दिन अठारह अभिषेक व ता. 2 मार्च को प्रतिष्ठा व दादा गुरुदेव की पूजा पढाई जायेगी।

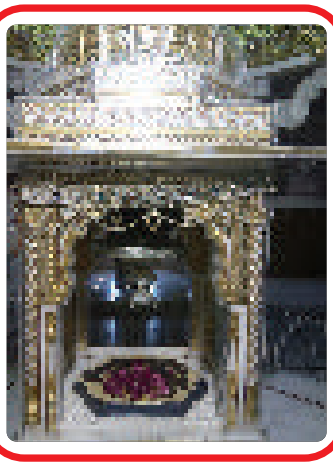

मालपुरा दादाबाड़ी में भजन संध्या

मालपुरा दादाबाड़ी में लोढा परिवार द्वारा आयोजित भजन संध्या

नववर्ष पर गूंजा दादा का दरबार

मालपुरा। जहाँ नववर्ष की पूर्व संध्या पर लोग पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण करते हुए अपना नववर्ष होटलों और क्लबों में बिताते हैं, वहीं इस नववर्ष, 2015 की पूर्व संध्या पर मालपुरा स्थित श्री जिनकुशल सूरि दादाबाड़ी में विशाल भजन संध्या का आयोजन किया गया। इस भजन संध्या में सुप्रसिद्ध पार्श्वगायिका अनुराधा पोडवाल ने मध्य रात्रि तक एक से बढ़कर एक भजन प्रस्तुत कर श्रोताओं को बांधे रखा। उन्होंने ईश वंदना से आरंभ कर, 'चलो बुलावा आया है, माता ने बुलाया है', 'जब से मिला है तेरा दरबार, मेरी तो दुनिया बदल गई', 'दादा का दरबार सुहाना लगता है' और 'णमोकार मंत्र है प्यारा, इसने लाखों को तारा' जैसे भजनों को सुना कर लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया। इन भजनों की धुन पर भक्तों ने जमकर भक्ति की। दादाबाड़ी में गुरूदेव के निज मंदिर के विशाल हॉल में आयोजित इस भजन संध्या में बड़ी संख्या में श्रोता उपस्थित थे। भजन संध्या में संजय विद्यार्थी ने 'एक झोली में फूल भरे हैं, एक झोली में कांटे' और 'हम आये तेरे द्वारा, हमारी नैया कर दो पार' भजनों की शानदार प्रस्तुतियां दीं। नववर्ष के अवसर पर गुरूवार की सुबह पू. साध्वी श्री चंद्रकला श्री जी म.सा., साध्वी श्री शशिप्रभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री लयस्मिता श्री जी म.सा., साध्वी श्री भव्यानंद श्री जी म.सा. के सान्निध्य में भक्तामर पाठ एवं दादागुरू इकतीसा का पाठ किया गया। दादा गुरुदेव के दर्शनों को आये श्रद्धालुओं ने दादा गुरुदेव की बड़ी पूजा का पुण्यलाभ अर्जित किया। आयोजक गुरू सेवक मण्डल एवं श्री चन्द्रप्रकाश प्रकाशचन्द्र लोढ़ा, जयपुर थे। लोढ़ा परिवार की ओर से सभी मंडल को जिनेश्वर देव की प्रतिमाएं भेंट कर आभार व्यक्त किया गया। पारस महमवालने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। ज्ञान विचक्षण महिला मंडल ने भी अपनी प्रस्तुति दी।

मालपुरा दादा मेला 17 व 18 फरवरी को

प्रत्यक्ष प्रभावी दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरीश्वरजी म. का 682 वां स्वर्ग जयन्ति समारोह 17 व 18 फरवरी 2015 को दादावाडी परिसर मालपुरा (राज.) में आयोजित है।

मालपुरा तीर्थ में दादा श्री जिनकुशलसूरिजी म. ने अपने स्वर्गवास के 15 दिन पश्चात् साक्षात दर्शन दिये थे। जिस शिला पर गुरुदेव ने साक्षात् दर्शन दिये थे, वही शिला मालपुरा तीर्थ की आत्मा है तथा यहा वही शिला पूजी जाती है।

इस पावन अवसर पर पू. सरल स्वभावी श्री चन्द्रकलाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की सान्निधयता रहेगी। गुरुदेव की भक्ति के लिये लवेश बुरड़-इन्दौर, विक्की पारख-मुम्बई, श्रीमती सुमन सोनी-भीलवाड़ा से पधारेंगे।

इस पावन प्रसंग पर सभी को पधारने का सादर आमन्त्रण है। संपर्क : 01437-226243

बैठक संपन्न

श्री जिनकुशल सूरि ट्रस्ट मण्डल की आवश्यक बैठक 11 जनवरी, 2015 को दादाबाड़ी परिसर में श्री दानमल जी डूंगरवाल की अध्यक्षता में संपन्न हुई। इस बैठक में दादाबाड़ी में चल रहे निर्माण कार्यों की समीक्षा की गई तथा आगामी 18-19 फरवरी, 2015 को होने वाले मेले के लिए आवश्यक कमेटियों का गठन किया गया।

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर मरुधर मणि

श्री मणिप्रभसागरजी म. सा.

के 56 वें वर्ष प्रवेश पर जन्म दिन की

हार्दिक शुभकामनाएँ

अभिवंदना....अभिनंदना...

गुरूदेव मेरे, गुरूदेव मेरे, गुरूदेव मेरे...
तेरे दम से चेहरे पे रौनक आई है, तू है तो ये जिन्दगी मुस्कुराई है।
हमने जो कुछ भी है पाया, तेरी रहमत का असर है,
गुरूदेव मेरे, गुरूदेव मेरे।।

श्रद्धावंत

शा. गणपतलाल राजेश मुकेश जिनेश महेन
शिखर नयनश्री श्रेया व शिखा गुलेच्छा

चेन्नई- फलोदी

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर मरुधर मणि

श्री मणिप्रभसागरजी म. सा.

के 56 वें वर्ष प्रवेश पर जन्म दिन की

हार्दिक शुभकामनाएँ...अभिवंदना....अभिनंदना...

ज्यों बादल उमड़-घुमड़ आये, धरती की प्यास बुझाने को,
त्यों हुआ आगमन सद्गुरू का, भक्तों पे प्रेम लुटाने को।।

श्रद्धावंत

श्री जैसलमेर-लौद्रवपुर पार्श्वनाथ जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट

महेन्द्र सिंह भंसाली	**विरेन्द्र कुमार बुरड़**	**डॉ. पदमचन्द दसोत**
अध्यक्ष	**उपाध्यक्ष**	**प्रबन्धक ट्रस्टी**
नेमीचन्द जैन	**ओमप्रकाश राखेचा**	**विमल कुमार मेहता**
सहमंत्री	**कोषाध्यक्ष**	**प्रचार मंत्री**

तत्त्व परीक्षा

जहाज मंदिर पहेली 106

प्रस्तुत पहेली उत्तर के संकेत दिये गये है। हर उत्तर पहले 'उप' नामक उपसर्ग होगा।
इन 31 में से 25 सही होने जरूरी है।

Example- पंच परमेष्ठी में से एक-उपाध्याय

1. उद्यान का पर्यायवाची- .....
2. ईलाज, चिकित्सास- .....
3. समाधान, हल- .....
4. मजाक, व्यंग्य- .....
5. ईनाम, पुरस्कार- .....
6. साधु-साध्वी का साधना स्थल- .....
7. शास्त्रों में इसके बारह प्रकार कहे कये हैं- .....
8. अन्तराय कर्म के पाँच भेदों में से एक- .....
9. ज्ञान दर्शन-चारित्र के साधन- .....
10. चश्मा- .....
11. विरत, अलग- .....
12. अहसान- .....
13. एक विशिष्ट तप- .....
14. धर्मबोध, प्रवचन- .....
15. अलंकरण, विशिष्ट पद- .....
16. सिद्धर्षि गणि रचित एक महान् वैराग्यप्रधान ग्रन्थ- .....
17. नाम कर्म की आठ प्रत्येक प्रकृतियों में से एक- .....
18. भेद के भी भेद- .....
19. निकट रखता, कथा-ग्रन्थ का पर्यायवाची- .....
20. संसार दावानल की पहली गाथा का छंद-.....

21. एक गच्छ जो लुप्त हो चुका है- .....

22. साधु-साध्वी की संयम यात्रा में ये जितनी कम, यात्रा उतनी ही आसान-.....

23. आधि, व्याधि औ- .....

24. अपर नाम- .....

25. प्रमाण चार भेदों में से एक (नैयाचिक दर्शन)- .....

26. अध्यक्ष के बाद का पद- .....

27. प्राकृत में जिसे 'उवसग्ग' कहते है, उसे हिन्दी में क्या कहते हैं- .....

28. 'खुद्दोवद्दव' का कायोत्सर्ग किसके निवारणार्थ किया जाता हैं?- .....

29. इस तप को चतुर्थ भक्त भी कहा जाता है- .....

30. परमात्मा आदिनाथ का तीर्थ जिसमें 'उप' है पर वह उपसर्ग नहीं हैं - .....

31. 'प्रत्यय' का विलोमार्थी शब्द- .....

जहाज मन्दिर पहेली झेरॉक्स करके ही भरें व इस पत्ते पर भेजे →

पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.
द्वारा: सोहनलाल एम. लुणिया
तेजदीप स्टील, 74 भण्डारी स्ट्रीट, पहला कुंभारवाडा लेन,
मुम्बई-400 004 (महा.) मो. 98693 48764

नियम -

1. इस जहाज मंदिर पहेली का उत्तर 20 मार्च तक पहुँचना जरुरी है ।
2. विजेताओं के नाम व सही हल अप्रेल में प्रकाशित किये जायेंगे ।
3. प्रथम विजेताओं को 200 रू. का और 100-100 रु. के छह प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किये जायेगें।
4. सातों विजेताओं का चयन लॉटरी पद्धति से किया जायेगा।
5. प्रेषक अपना नाम, पता साफ-साफ अक्षरों में लिखकर भेजें।
6. जहाज मन्दिर पहेली प्रेषक इस पहेली की झेरॉक्स करवाकर भेजे।
7. उत्तर स्वच्छ-सुंदर अक्षरों में लिखें।
8. एक प्रश्न के दो उत्तर लिखें जाने पर एक सही होने पर भी गलत ही माना जायेगा।

:- पुरस्कार प्रायोजक :-

शा. सुगनचंदजी राजेशकुमारजी बरडिया (छबड़ा) ब्रह्मसर हाल चैन्नई

प्रेषक

नाम .....

पता .....

.....

पोस्ट ..... पिन | | | | | | | जिला .....

राज्य ..... फोन नम्बर | | | | | | | | | | |

कोयम्बतूर में मुनि दीक्षा संपन्न

पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरूष आचार्य देव श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म.सा. एवं पूजनीया साध्वी श्री तरूणप्रभाश्रीजी म. सुमित्राश्रीजी म. तथा पूजनीया साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा की पावन निश्रा में बोडेली निवासी श्री करसनभाई शारदाबेन परमार क्षत्रिय के सुपुत्र मुमुक्षु श्री सुभाषकुमार जैन की भागवती दीक्षा कोयम्बतूर नगर में माघ शुक्ल पूर्णिमा ता. 3 फरवरी 2015 को संपन्न हुई। 21 वर्षीय श्री सुभाष भाई ने श्री नाकोडा तीर्थ ज्ञानशाला में श्री नरेन्द्रभाई कोरडिया के पास धार्मिक अभ्यास संपन्न किया है। उन्होंने पंच प्रतिक्रमण, चार प्रकरण, तीन भाष्य, छह कर्मग्रन्थ, तत्वार्थ सूत्र, वीतराग स्तोत्र, ज्ञानसार आदि का अर्थ सहित अभ्यास किया है। साथ ही उन्होंने रघुवंश, सुलभ चरित्राणि, त्रिषष्ठि शलाका चरित्र आदि संस्कृत ग्रन्थों का पारायण किया है। उन्होंने संस्कृत दो बुक के साथ सिद्धहैम व्याकरण भी किया है।

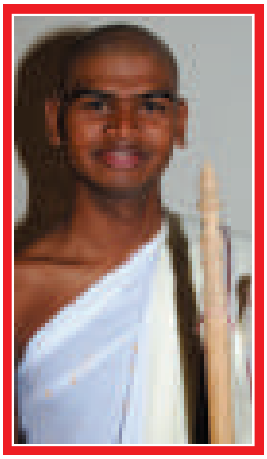

वे पिछले तीन वर्षों से बल्लारी में धार्मिक पाठशाला में पंडितजी के रूप में अध्यापन कर रहे थे। भागवती दीक्षा के समय अपने वक्तव्य में उन्होंने ग्रन्थों के उदाहरण देकर भागवती दीक्षा की महिमा गाई थी।

वे पूज्यश्री के शिष्य बने। उनका नाम मुनि अध्यात्मप्रभसागरजी रखा गया। श्री विजयचंदजी झाबक सौ. पारसमणि देवी धर्म माता पिता बने। एवं श्री पूनमचंदजी झाबक परिवार ने नामकरण करने का लाभ प्राप्त किया। इस अवसर पर श्री विजयचंदजी झाबक ने कहा– एक पढे लिखे पंडित आज संयम ग्रहण कर रहे हैं। यह अनुमोदना का विषय है। गच्छ व शासन की खूब प्रभावना करेंगे, ऐसा विश्वास है।

शासन समाचार

श्री नाकोडाजी तीर्थ पर नवनिर्मित विशाल समवशरण मंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी म.सा. आदि की परम पावन निश्रा में माघ शुक्ल 14 सोमवार ता. 2 फरवरी 2015 को अत्यन्त हर्ष व आनंद के साथ संपन्न हुई। इस अवसर पर 1 फरवरी को भव्य शोभायात्रा का आयोजन किया गया।

पाली के पास पूज्य मुनि श्री कमलप्रभसागरजी म. की पावन प्रेरणा से निर्मित श्री गौतम गुण विहार की अंजनशलाका प्रतिष्ठा पूज्य अचलगच्छीय आचार्य देव श्री कलाप्रभसागरसूरीश्वरजी म.सा. आदि की परम पावन निश्रा में माघ शुक्ल 14 सोमवार ता. 2 फरवरी 2015 को अत्यन्त हर्ष व आनंद के साथ संपन्न हुई। इस अवसर पर तीर्थ प्रेरणा दाता पूज्य मुनि श्री कमलप्रभसागरजी म.सा. को राजस्थान केसरी पद से अलंकृत किया गया।

जटाशंकर

अरब देश में रहने वाला जटाशंकर जीवन में पहली बार भारत आया था। उसकी यह पहली पहली विदेश यात्रा थी। एक बड़े होटल में रुका था।

उसने कमरा देखा तो चकित रह गया। इतना बड़ा कमरा! इतनी सुविधाएं! और जब वह स्नान घर में गया तो हैरान रह गया। होटल के रूम-ब्वॉय से वह प्रश्न कर रहा था। उसने पूछा- यह सामने क्या है!

रूम-ब्वॉय ने जवाब दिया- यह नल है। इसमें पानी आता है।

- पानी! कैसे!

- यह देखो! यों कह कर उसने नल खोला! पानी की तेज धार बहने लगी।

जटाशंकर ने पूछा- पानी लगातार आता है।

- हाँ! चौबीस घंटे पानी आता है।

जटाशंकर का दिमाग कल्पना में उड़ने लगा। उसने सोचा- वाह! हिन्दुस्तान के बारे में हमेशा सुनते थे कि यह संतों का देश है। चमत्कार होते रहते हैं। यह नल भी अपने आप में चमत्कार से कम नहीं है। चौबीस घंटे पानी देता है।

अपने देश में सब है, पर पानी की कमी है। क्यों नहीं, यहाँ से एक नल चुरा ले जाऊँ! फिर वहाँ अपना चमत्कार बताऊँगा!

जटाशंकर उस होटल में तीन दिन रुका! जी भर कर पानी का उपयोग (दुरूपयोग!) किया। बाद में जब रवाना हुआ तो धीरे से एक नल खोला और चुपके से अपने सूटकेस में डाल लिया।

अपने गाँव पहुँच कर लोगों को एकत्रित किया। उनके सामने एक ऊँची तिपाई पर मखमली वस्त्र में लिपटा नल रखा!

सबके सामने उच्च स्वर में कहने लगा। मैं हिन्दुस्तान जाकर आया हूँ। वहाँ एक चमत्कारी संत से मिला। उनकी सेवा की तो उन्होंने कहा- बेटा! जो चहिये, मांग ले।

मैंने कहा- मुझे विद्या चाहिये।

संत ने पूछा- क्या विद्या दूं!

मैंने कहा- मेरे देश में पानी नहीं है। पानी मिले, ऐसी विद्या दो। उन्होंने मुझे मंत्र सिखाया और यह नल दिया। अब अपने यहाँ कोई समस्या नहीं होगी। चौबीसों घंटे पानी मिलेगा।

लोगों के हृदय में जटाशंकर के प्रति अहोभाव जगा।

यों घोषणा कर उसने मखमली वस्त्र दूर किया। फिर मंत्र पढ़ने का नाटक किया। आँखें बंद की। होंठों से कुछ अस्फुट अक्षर बुदबुदाने लगा। फिर जोर से स्वाहा बोल कर नल को खोला। लोग पानी की प्रतीक्षा करने लगे। पर पानी तो आया ही नहीं।

जटाशंकर ने दुबारा नल खोला। क्या हुआ! वह चिंता में पड़ गया। यही तो नल था। दिल्ली में कैसी तीव्र धारा से पानी आता था। यहाँ क्या हो गया! खुलता भी ऐसे ही था। फिर पानी क्यों नहीं आ रहा!

लोग हँसने लगे।

नल तो माध्यम है। पानी तो टंकी से ही आता है। पानी से भरी टंकी से जब नल जुड़ता है, तो पानी आता है। टंकी से जुड़े बिना नल से पानी नहीं आ सकता। उसी प्रकार परमात्मा से जुड़े बिना... आत्मा से जुड़े बिना... परम शांति का अनुभव नहीं हो सकता।

उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म.

श्री पुरुषादानी पार्श्वनाथाय नमः
दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त-मणिधारी जिनचन्द्र-जिनकुशल-जिनचन्द्रसूरि सद्गुरुभ्यो नमः
पू. गणनायक श्री सुखसागर-जिनकान्तिसागरसूरिभ्यो नमः

तेनम्पट्ट नगरे

पुरुषादानी पार्श्वनाथ की 2000 वर्ष प्रतिमा, दादा गुरुदेव आदि की प्रतिष्ठा प्रसंगे

हार्दिक आमन्त्रण

आशीर्वाद	निश्रा	सानिध्य
पू. गुरुदेव उपाध्याय मणिप्रभसागरजी म.सा.	पू. मुनिश्री मनितप्रभसागरजी म.सा. आदि ठाणा	पू. साध्वी श्री मधुरप्रिया श्रीजी म.सा. आदि ठाणा 3

वरघोड़ा
11 मार्च 2015
चैत्र वदि पंचमी

प्रतिष्ठा
12 मार्च 2015
चैत्र वदि षष्ठी

आयोजक

ललितकुमारजी निहालचंदजी ललवाणी – तिरुपत्तुर
विमलचंदजी विमलादेवी मुथा – आम्बूर
गौतमचंदजी पारसचंदजी कवाड़ – तिरुपात्तुर
एक प्रभु भक्त परिवार – तिरुपात्तुर

सहयोग

सकल जैन श्रीसंघ तिरुपात्तुर
सकल जैन श्रीसंघ आम्बूर
सकल जैन श्रीसंघ वणियमवाडी

सकल संघ से इस पावन अवसर पर पधारने का हार्दिक निमंत्रण है

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal registration No. RJ/SRO/9525/2015-2017 Date of Posting 7th

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर मरुधर मणि

श्री मणिप्रभसागरजी म. सा.

के 56 वें वर्ष प्रवेश पर जन्म दिन की

हार्दिक शुभकामनाऐं

अभिवंदना.... अभिनंदना...

श्रद्धावंत

श्रीमती विमलादेवी जवाहरलाल
श्रीमती कंचनदेवी प्रदीपकुमार
श्रीमती अंकितादेवी शरदकुमार
पारख परिवार जेठिया ग्रुप

लोहावट निवासी राजीम (छ. ग.) ईरोड (तमिलनाडु)

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
जहाज मंदिर, मांडवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com
www.jahajmandir.org